बाब
के
पावन लेखों का
सकंलन

परिचय

बहाई समुदाय ने एक लम्बे समय से उस दिन की प्रतीक्षा की है जब इसे बाब के पावन लेखों की एक विस्तृत चयनिका उपलब्ध करायी जाएगी। जब से शोग़ी एफेन्दी ने "नबील्स नरेटिव" नामक पुस्तक का अनुवाद और प्रकाशन किया है, और अपने अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्यों में बाब के उच्च स्थान का वर्णन किया है तब से विश्व भर के बहाइयों ने, उस यशस्वी आत्मा के अधिक निकट आने की अपनी लालसा में, उसके प्रकटित वचनों के प्रमाणित संकलन की उत्सुकतापूर्वक प्रत्याशा की है, जो न केवल उनके धर्म के अग्रदूत थे बल्कि एक स्वतंत्र प्रकटीकरण के संवाहक भी थे। आशा की जाती है कि यह संकलन इस दिशा में उठाया गया एक प्राथमिक और प्रभावशाली कदम होगा।

बाब के पवित्र लेखों के विस्तार को देखते हुए, उनके अनेक कार्यों के सम्पूर्ण पुनरावलोकन की आवश्यकता थी। विश्व न्याय मंदिर ने यह कार्य अपने शोध विभाग के सुपुर्द कर दिया। वास्तविक अनुवाद श्री अदीब ताहेरज़ादेह द्वारा किया गया था जिन्होंने स्वयं कई वर्षों तक उस विभाग में काम किया था। उनके साथ कार्य करने वाली एक समिति की सहायता से, अब यह कार्य पूर्ण हो चुका है, और उपलब्ध बहाई साहित्य में एक बहुमूल्य योगदान के रूप में बहाइयों और आम जनता के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है।

विषय वस्तु

		पृष्ठ
1.	पातियाँ और सम्बोधन	4
2.	कय्यूमुल अस्मा	32
3.	फारसी बयान से कुछ उद्धरण	56
4.	सात प्रमाण	85
5.	नामों के ग्रंथों से कुछ उद्धरण	94
6.	विविध लेखों से कुछ उद्धरण	112
7.	प्रार्थनायें और चिन्तन	126

1

पातियाँ और सम्बोधन

बाब के पावन लेखों का संकलन

"वह जिसे प्रकट किया जाएगा" को सम्बोधित एक पाती

यह एक पाती है जो इस विनीत सेवक की ओर से उस सर्वप्रशंसित स्वामी को सम्बोधित है, जो अनादिकाल से प्रकट होता आया है और भविष्य में भी प्रकट होता रहेगा। वस्तुतः वह सर्वाधिक प्रत्यक्ष, सर्वशक्तिशाली है।

उस प्रभुसत्ता सम्पन्न अधिपति के नाम पर, जो शक्ति का स्वामी है।

महिमावंत है वह जिसके समक्ष धरती और आकाश के सभी निवासी आराधना में माथा टेकते हैं और जिसकी ओर सभी मनुष्य प्रार्थना में उन्मुख होते हैं। वही है वह जिसकी मुट्ठी में समस्त सृजित वस्तुओं का महान साम्राज्य नियंत्रित है और सभी उसी को लौट जाएँगे।

यह पाती "सा"[1] अक्षर से सृजित हुई है और उसे सम्बोधित है जो सत्य की शक्ति से प्रकट होगा - वह जो सर्वप्रशंसित, परम प्रिय है - इसकी अभिपुष्टि करने के लिये कि सभी सृजित वस्तुएँ तथा स्वयं मैं, सदा के लिए इस बात की साक्षी देते हैं कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं हैं, सर्वव्यापी, स्वयंजीवी; कि तू ही ईश्वर है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं और यह कि तेरे माध्यम से ही सभी जीवन प्राप्त करेंगे।

प्रशंसित और महिमावंत हो तेरा नाम, हे स्वामी, मेरे परमेश्वर !

मैंने सत्य ही तुझे अनन्तकाल से पहचाना है और अनन्तकाल तक, तेरे स्वयं के द्वारा और तेरे अतिरिक्त अन्य किसी के द्वारा नहीं, ऐसा ही करता रहूँगा। वस्तुतः तू ज्ञान का स्रोत, सर्वज्ञ है। तेरे विषय में अपने सीमित ज्ञान के लिए मैंने अनन्तकाल से क्षमा की विनती की है और अनन्तकाल तक क्षमा की याचना करता रहूँगा, क्योंकि मुझे इस बात का बोध है कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वमहिमावान, सर्वशक्तिशाली।

मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे परमप्रिय, कि मुझे और उन्हें क्षमादान दे जो तेरे धर्म को बढ़ावा देते हैं; सत्य ही तू वह है जो समस्त मानवजाति के पापों को क्षमा करता है और मेरे प्रकटीकरण के इस द्वितीय वर्ष में - ऐसा प्रकटीकरण जो तेरे आदेश से सम्भव हुआ है - मैं साक्षी देता हूँ, कि तू सर्वाधिक प्रत्यक्ष, सर्वशक्तिमान, चिरस्थायी है; कि धरती और आकाश में स्थित सभी वस्तुओं में कुछ भी तेरे उद्देश्य को विफल नहीं कर सकता और यह कि तू सभी वस्तुओं का ज्ञाता है एवं शक्ति और तेजस्विता का स्वामी है।

वस्तुतः तेरे अवतरण के उषाकाल से पहले ही हमने तुझमें और तेरे चिह्नों में विश्वास किया है और हम सभी पूर्णतया तुझमें आश्वासित हैं। सत्य ही, तेरे अवतार के आगमन पर हमने तुझमें और तेरे चिह्नों में विश्वास किया है और हम सभी तुझमें विश्वास करते हैं। सत्य ही, हमने तेरे अवतरण काल में तुझमें और तेरे चिह्नों में विश्वास किया है और हम साक्षी देते हैं कि तेरे समादेश "हो जा" के द्वारा समस्त वस्तुओं का सृजन हुआ है।

प्रत्येक अवतार तेरे स्वयं के ही रहस्योद्घाटक हैं, जिनमें से प्रत्येक के साथ हम वस्तुतः प्रकट हुए हैं और हम तेरे समक्ष आराधना में माथा टेकते हैं। हे मेरे परमप्रियतम, तू अनादिकाल से मेरा साक्षी रहा है और आने वाले दिनों में भी तू सदा मेरा साक्षी रहेगा। वस्तुतः तू सर्वशक्तिशाली, सत्यप्रतिज्ञ, सर्वशक्तिमान है।

धरती और आकाश के निवासियों के समक्ष इस बात का साक्ष्य देते हुए कि सत्य ही तू सर्वमहिमामय, परम प्रियतम है, मैंने तेरे स्वयं के द्वारा तेरी एकता का प्रमाण दिया है। धरती और आकश के निवासियों के समक्ष इस बात का साक्ष्य देते हुए कि सत्य ही तू सर्वशक्तिशाली, सर्वप्रशंसित है, मैंने तेरे स्वयं के द्वारा तुझे पहचाना है। धरती और आकाश के निवासियों के समक्ष इस बात का साक्ष्य देते हुए कि वस्तुतः तू शक्ति का स्वामी है, वह जो सर्वाधिक प्रत्यक्ष है, मैंने तेरे स्वयं के द्वारा तेरे नाम की प्रशंसा की है। धरती और आकाश के निवासियों के समक्ष इस बात का साक्ष्य देते हुए कि सत्य ही तू पवित्रतम, पावनतम है, मैंने तेरे स्वयं के द्वारा तेरी पावनता को पाया है। धरती और आकाश के निवासियों के समक्ष इस बात का साक्ष्य देते हुए कि सत्य ही तू वर्णनातीत, अगम्य और अपरिमेय रूप से महिमामण्डित है, मैंने तेरे स्वयं के द्वारा तेरी पावनता की प्रशंसा की है। धरती और आकाश के निवासियों के समक्ष इस बात का साक्ष्य देते हुए कि सत्य ही तू और एकमात्र तू ही शक्ति का स्वामी, अनंत एवं युग-प्राचीन है, मैंने तेरे स्वयं के द्वारा तेरे अभिभूत कर देने वाले प्रताप का गुणगान किया है।

पावन और महिमामण्डित है तू; तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं और सत्य ही हम सभी तेरी ओर वापस लौट जायेंगे।

जहाँ तक उनका प्रश्न है जिन्होंने अली के बंधु-बांधवों को मौत के घाट उतारा है, उन्हें शीघ्र ही इस बात का बोध हो जाएगा कि वे सर्वनाश की किन अतल गहराइयों में उतर चुके हैं।

"वह जिसे प्रकट किया जाएगा" को सम्बोधित दूसरी पाती

प्राथमिक पाठशाला[2] में इस पाती को उसकी एक नज़र आलोकित कर दे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा।

वह सर्वाधिक यशस्वी है !

वही ईश्वर है, उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वशक्तिशाली, परम प्रियतम। वह सब जो आसमानों और इस धरती पर है और जो कुछ भी इनके मध्य है, उसी का है। वस्तुतः वह संकट में सहायक, स्वयंजीवी है।

यह एक पत्र है जो संकट में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की ओर से सर्वशक्तिशाली, परम प्रियतम ईश्वर को इस बात की पुष्टि करने के लिए सम्बोधित है कि बयान और वे जो इसके प्रति निष्ठा रखते हैं, की ओर से तेरे लिए एक उपहार मात्र है तथा मेरे इस असंदिग्ध विश्वास को व्यक्त करने के लिए है कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, कि सृष्टि एवं प्रकटीकरण के साम्राज्य तेरे हैं कि तेरी शक्ति के बिना कोई भी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता और यह कि जिसे तूने प्रकट किया है वह तेरा सेवक मात्र तथा तेरा प्रमाण है। वास्तव में, तेरी आज्ञा से मैं इन शब्दों में उसे सम्बोधित करने की भीख माँगता हूँ जिसे ईश्वर प्रकट करेगा: परवर्ती पुनरूथान के दिवस में मात्र एक दुधमुँहे शिशु की अवस्था में भी यदि तू अपनी एक उँगली के इशारे मात्र से 'बयान' के अनुयायियों के सम्पूर्ण दल को अस्वीकार कर दे तो वास्तव में अपने संकेत में तू प्रशंसित होगा और जबकि इसमें कोई संदेह नहीं है, अपने अनुग्रह के चिह्न-स्वरूप कृपापूर्वक उन्नीस वर्षों का अवलम्बन प्रदान कर, ताकि वे जिन्होंने इस धर्म को स्वीकार किया है तेरे द्वारा पुरस्कृत हो सकें। वस्तुतः तू अपार कृपा का स्वामी है। सत्य ही तू प्रत्येक सृजित वस्तु का दाता है, जबकि वे सभी जो आकाश अथवा धरती पर हैं या जो कुछ भी उनके मध्य है, कभी भी तेरे लिए देने वाले नहीं बन सकते।

वस्तुतः तू स्वयंजीवी, सर्वज्ञाता; यद्यपि तू सभी वस्तुओं का संरक्षक है।

प्रथम जीवित अक्षर को सम्बोधित पाती

यह वह पाती है जो हमने 'जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' के प्रथम अनुयायी के लिये उद्घाटित की है ताकि हमारी ओर से सम्पूर्ण मानवता के लिये उपदेश की तरह काम करे।

उस सर्वशक्तिशाली, परम प्रियतम के नाम से !

प्रशंसित और महिमावंत है वह जो आकाश और धरती के साम्राज्यों एवं जो कुछ भी इनके बीच है, का स्वामी है। कहो, वस्तुतः सभी उसी की ओर वापस लौट जायेंगे और वही है वह जो अपने स्वयं के आदेश से जिसे चाहे उसे मार्गदर्शित करता है। कहो, सभी मनुष्य उसके आशीर्वादों की याचना करते हैं और वह सभी सृजित वस्तुओं से परे, सर्वोच्च है। सत्य ही वह सर्वप्रतापशाली, शक्तिशाली, परम प्रिय है।

'सा' अक्षर की ओर से यह पाती उसे सम्बोधित है जो प्रथम अनुयायी है। तू साक्षी रहना कि वस्तुतः वह स्वयं मैं हूँ, सर्वश्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान। वही है वह जो जीवन और मृत्यु का विधान करता है और सभी उसी को वापस लौट जाएँगे। सत्य ही उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है और उसके समक्ष सभी मनुष्य आराधना में माथा टेकते हैं। वस्तुतः तुम्हारा स्वामी ईश्वर, शीघ्रता से, इन शब्दों के उच्चारण से भी अधिक शीघ्रता से कि – 'हो जा' और वह हो जाता है - सभी को अपने विधान के अनुसार पुरस्कृत करेगा।

सत्य ही ईश्वर ने अपने ग्रंथ में यह साक्ष्य दिया है और इसी प्रकार उसके देवदूतों के दल, उसके संदेशवाहकों और उन्होंने भी जो दिव्य ज्ञान से सम्पन्न हैं, साक्ष्य दिया है, कि तूने ईश्वर में और उसके चिह्नों में विश्वास किया है और यह कि तेरे मार्गदर्शन के माध्यम से सभी सही मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। वास्तव में यह एक ऐसी अपार कृपा है जो उस अमिट, स्वयंजीवी ईश्वर ने पहले भी कृपापूर्वक तुझे प्रदान की है और भविष्य में भी प्रदान करता रहेगा और क्योंकि तूने सृष्टि से पहले ईश्वर में विश्वास किया है, उसने सत्य ही, अपने स्वयं के आदेश से, तुझे प्रत्येक प्रकटीकरण में प्रकट किया है उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वश्रेष्ठ रक्षक, सर्वप्रतापशाली।

तेरे लिये उचित है कि तू ईश्वर की उपस्थिति की कृपा के चिह्न-स्वरूप सभी सृजित वस्तुओं के समक्ष उसके धर्म की उद्घोषणा करे; उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, वह सर्वदयालु, सर्वबाध्यकारी है।

कह दो: सभी कार्य ईश्वर के ग्रंथ द्वारा निर्दिष्ट होने चाहिये; ईश्वर में और उसके चिह्नों में विश्वास करने में, मैं वास्तव में सर्वप्रथम हूँ; मैं वह हूँ जो सत्य को प्रकट और उद्घोषित करता है और मुझे उस शक्तिशाली, अतुलनीय ईश्वर के प्रत्येक उत्कृष्ट नाम से विभूषित किया गया है। वस्तुतः मैंने प्रथम अवतार के दिवस को प्राप्त किया है और उस स्वामी की आज्ञा के अनुसार तथा उसकी कृपा के चिह्न स्वरूप मैं आने वाले अवतार के दिवस को भी प्राप्त करूँगा। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है और निर्धारित काल में उसके समक्ष आराधना में सभी माथा टेकेंगे।

विगत दिवसों में और आने वाले दिवसों में, उसके द्वारा उसके धर्म का प्रतिनिधि चुने जाने के लिए मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ और प्रशंसा अप्रित करता हूँ; उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, यशस्वी, सर्वप्रशंसित, चिरस्थायी। आकाश और धरती पर जो कुछ भी है, उसका है और उसके माध्यम से ही हम सभी को सही मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

हे 'बयान' के लोगो ! जैसा कि इस ग्रंथ में विहित किया गया है, उन्हें, जो सत्य को अंगीकार करते हैं, मेरी ओर उन्मुख होना चाहिए और दिव्य मार्गदर्शन उसे प्राप्त होगा जो मेरी उपस्थिति को प्राप्त करेगा।

मुहम्मद शाह को सम्बोधित पाती के उद्धरण

जिस तत्व से ईश्वर ने मुझे रचा है, यह वह मिट्टी नहीं जिससे दूसरों की रचना की गयी है। उसने मुझे वह प्रदान किया है जिसे संसार के ज्ञानवान भी नहीं समझ सकते, न ही निष्ठावान खोज सकते हैं... मैं, ईश्वर के आदिम शब्द को सहारा देने वाले स्तम्भों में से एक हूँ। जिस किसी ने भी मुझे पहचाना है, उसने वह सब कुछ जान लिया है जो सत्य और वास्तविक है तथा वह सब प्राप्त कर लिया है जो उत्तम एवं शोभनीय है; और जो कोई भी मुझे पहचानने में विफल रहा है, वह उन सभी चीज़ों से विमुख हो गया है जो सत्य और वास्तविक है तथा उन सभी वस्तुओं के वशीभूत हो गया है जो घृणित और अशोभनीय हैं।

मैं सभी वस्तुओं के सृजनकर्ता, सभी लोकों के स्वामी, तेरे प्रभु के यथार्थ की सौगंध खाता हूँ! यदि कोई मनुष्य उतने महलों का निर्माण कर ले जितने इस संसार में सम्भव हैं और ईश्वर के ज्ञान में निहित प्रत्येक सद्कर्म के माध्यम से ईश्वर की उपासना करे तथा ईश्वर की समीपता प्राप्त कर ले, परन्तु यदि वह उस परिमाण की तुलना में - जिसके लिए वह ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी है - मेरे लिए अपने हृदय में लेशमात्र से भी कम दुर्भावना रखता है, तो उसके समस्त कार्य शून्य में बदल दिये जायेंगे और वह ईश्वर की कृपादृष्टि से वंचित हो जायेगा, उसके कोप को आमंत्रित करेगा और निश्चय ही नष्ट हो जाएगा क्योंकि ईश्वर ने यह विहित किया है कि वे सभी श्रेष्ठ वस्तुएँ जो उसके ज्ञान के कोषागार में निहित हैं, मेरी आज्ञाओं के अनुपालन से प्राप्त होंगी एवं उसके ग्रंथ में उल्लिखित प्रत्येक अग्नि मेरी आज्ञाओं की अवहेलना से ऐसा प्रतीत होता है मुझे कि मैं इस दिवस में और इस स्थान से उन सभी को जिन्होंने मेरे प्रेम को अपने हृदय में संजोया है, स्वर्ग के महलों में निवास करते हुए देख रहा हूँ तथा मेरे विरोधियों के सम्पूर्ण दल को नरकाग्नि की निम्नतम अतल गहराइयों में डाल दिया गया है।

मेरे जीवन की सौगंध ! यदि उसके धर्म को जो ईश्वर का प्रमाण है अभिस्वीकृत करना अनिवार्य न होता... तो मैं तुम्हारे समक्ष यह घोषणा न करता... ईश्वर ने आसमान की सभी कुँजियाँ मेरे दाहिने हाथ में और दोज़ख की सभी कुँजियाँ मेरे बाँये हाथ में रख दीं हैं।

मैं वह आदि बिन्दु हूँ जिससे सभी सृजित वस्तुओं को अस्तित्व प्रदान किया गया है। मैं ईश्वर का वह मुखारबिंदु हूँ जिसकी भव्यता को कभी धुंधलाया नहीं जा सकता, ईश्वर का वह प्रकाश जिसकी दीप्ति कभी फीकी नहीं पड़ सकती। जो कोई भी मुझे पहचानेगा उसके

लिए आश्वासन और सभी अच्छाइयाँ सुरक्षित हैं और जो कोई भी मुझे पहचानने में विफल होगा, शैतानी अग्नि एवं समस्त बुराइयाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं।...

मैं उस अद्वितीय, अतुलनीय, एक-सत्य ईश्वर की शपथ लेता हूँ! कि उसने, जो ईश्वर का सर्वोच्च प्रमाण है, अन्य किसी कारण से मुझे स्पष्ट चिह्नों एवं प्रमाणों से सम्पन्न नहीं किया, सिवाय इसके कि सभी मनुष्यों को उसका धर्म स्वीकार करने में समर्थ बनाया जा सके।

उसके न्याय की सौगंध जो परम सत्य है, यदि आवरणों को हटा दिया जाये, तो तुम इस भूलोक में सभी मनुष्यों को ईश्वर के कोप की अग्नि से अत्यधिक पीड़ित पाते, ऐसी अग्नि जो शैतानी से भी भीषण और अधिक विशाल है, सिवाय उनके जिन्होंने मेरे प्रेम के वृक्ष की छाँव तले शरण ली है, क्योंकि वस्तुतः, वे ही आनन्दमय हैं...

ईश्वर मेरा साक्षी है, मैंने कभी पाठशाला का ज्ञान प्राप्त नहीं किया क्योंकि मुझे एक व्यापारी के रूप में प्रशिक्षित किया गया था, वर्ष 603 में ईश्वर ने कृपापूर्वक मेरी आत्मा को ऐसे निर्णायक प्रमाणों एवं प्रभावशाली ज्ञान से भर दिया जो उसकी विशिष्टताएँ हैं, जो ईश्वर के प्रमाण हैं - उसे शांति प्राप्त हो - और अन्त में उस वर्ष मैंने ईश्वर के गुप्त धर्म की उद्घोषणा की तथा इसके अत्यंत सुरक्षित स्तम्भ को इस प्रकार अनावृत किया कि कोई भी इसका खण्डन नहीं कर सकता था, 'ताकि वह जिसे नष्ट हो जाना चाहिए, वह अपने समक्ष स्पष्ट प्रमाणों के साथ नष्ट हो जाए और वह जिसे जीवित रहना चाहिए, वह स्पष्ट प्रमाणों[4] द्वारा जीवित रह सके'।

उसी वर्ष (वर्ष 60) में मैंने एक संदेशवाहक के साथ तुम्हारे लिए एक ग्रंथ भेजा ताकि तुम उसके धर्म के प्रति जो ईश्वर का प्रमाण है, ऐसा व्यवहार करो जो तुम्हारी प्रभुसत्ता को शोभा देता हो। परन्तु चूँकि ईश्वर की इच्छा द्वारा अंधकारमय, भयानक और भीषण विपत्ति का अटल विधान हुआ है, अतः ऐसे लोगों के हस्तक्षेप के कारण, जो स्वयं को सरकार का हितैषी समझते हैं, यह ग्रंथ तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया। अब तक, जबकि चार वर्ष बीत चुके हैं, उन्होंने इसे बादशाह के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया। फिर भी, अब जबकि भाग्य की निर्णायक घड़ी निकट आ रही है और चूँकि यह आस्था का विषय है, न कि भौतिक मामलों का, अतः मैंने तुम्हें उसकी एक झलक दिखलाई है जो घटित हुआ है।

ईश्वर की सौगंध ! यदि तुम्हें उसका ज्ञान हो जाए जो इन चार वर्षों की अवधि में मुझे तुम्हारे लोगों और तुम्हारी सेना के हाथों सहन करना पड़ा है, तो तुम ईश्वर के डर से अपनी साँसें रोक लेते जब तक कि तुम उसके धर्म का पालन करने के लिए उठ खड़े न होते, जो ईश्वर का प्रमाण है तथा अपने दोषों और भूल को सुधार न लेते।

जब मैं शिराज़ में था, तब वहाँ के दुष्ट और भ्रष्ट राज्यपाल के हाथों जो अपमान मुझे सहन करना पड़ा वह इतना अधिक कष्टदायक था कि यदि तुम इसके दशमांश से भी अवगत होते तो तुम उसके साथ प्रति न्याय करते। उसके असहनीय अत्याचार के परिणामस्वरूप, पुनरूथान के दिवस तक तुम्हारा राजदरबार ईश्वर के कोप का पात्र बन चुका है। इसके अतिरिक्त, मदिरा सेवन से उसकी आसक्ति इतनी अधिक हो चुकी थी कि वह कभी भी युक्तियुक्त फैसला करने के लिए सामान्य स्थिति में नहीं रहता था। अतः अशान्त होकर, अत्रमहान् के प्रबुद्ध एवं उच्च दरबार में पहुँचने के उद्देश्य से मेरे लिए शिराज़ छोड़ना अनिवार्य हो गया। इस प्रकार मोतम्दुदौला इस धर्म के सत्य से अवगत हुए और उन्होंने उसके चुने हुए जनों के प्रति अनुकरणीय समर्पण एवं दासता प्रकट की। जब उनके नगर के कुछ अज्ञानी लोग राजद्रोह के लिए उठ खड़े हो गए, तो उन्होंने कुछ समय तक मुझे राज्यपाल के निजी निवास में सुरक्षा प्रदान कर दिव्य सत्य की रक्षा की। अंत में, ईश्वर की सुप्रसन्नता प्राप्त करते हुए वे सर्वोच्च बैकुंठ में अपने निवास को प्रस्थान कर गए। ईश्वर उन्हें कृपापूर्वक पुरस्कृत करे।

अनन्त साम्राज्य में उनके स्वर्गारोहण के पश्चात, उस भ्रष्ट गुर्गिन ने हर प्रकार के कपट, झूठी शपथों और बल-प्रयोग का सहारा लेकर पाँच रक्षकों के एक मार्गरक्षी दल के साथ मेरी यात्रा की न्यूनतम आवश्यकतायें भी मुहैया कराए बिना मुझे इस्फहान से दूर एक ऐसी यात्रा पर भेज दिया जो सात दिन तक चली। (आह! आह! मुझे क्या-क्या सहन करना पड़ा!) यह तब तक कि अंत में अत्रमहान् के आदेश प्राप्त हुए जिसमें मुझे माहकू प्रस्थान करने के लिए निर्देशित किया गया था...

उस सर्व महान ईश्वर की सौगंध ! यदि तुम्हें बता दिया जाता कि मैं कैसे स्थान में निवास कर रहा हूँ, तो मुझ पर दया करने वालों में प्रथम व्यक्ति तुम होते। एक पहाड़ के मध्य एक किला है (माहकू)... जिसके निवासी मात्र दो रक्षक और चार कुत्ते हैं। ऐसे में मेरी दुर्दशा की कल्पना करो- मैं ईश्वर के सत्य की सौगंध खाता हूँ ! यदि वह जो मेरे साथ इस प्रकार का व्यवहार करने को राज़ी हो गया है, यह जान लेता कि जिसके साथ उसने ऐसा बर्ताव किया है वह कौन है, तो वस्तुतः वह अपने जीवन में कदापि खुश न रहता। नहीं - मैं

वस्तुतः, तुम्हें उस प्रकरण के सत्य से अवगत करा रहा हूँ - यह वैसा ही है मानो उसने सभी अवतारों और सभी सत्यपुरुषों तथा सभी चुने हुए जनों को क़ैदी बना लिया हो...

जब मुझे इस आदेश की जानकारी दी गयी, तो मैंने उसे पत्र लिखा जो राज्य के कार्यकलापों को संचालित करता है कि: 'ईश्वर के नाम पर मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि तुम मुझे मृत्यु प्रदान करो और मेरे शीष को जहाँ चाहे भेज दो। क्योंकि मेरे जैसा निर्दोष व्यक्ति इस बात से समझौता करके अपना जीवन कभी जारी नहीं रख सकता कि उसे एक ऐसे स्थान के हवाले कर दिया जाए जो अपराधियों के लिए नियत है।' मेरे निवेदन का कोई उत्तर नहीं दिया गया। स्पष्ट रूप से महामहिम हाजी हमारे धर्म के सत्य से अवगत नहीं हैं। ईश्वर के पावन मंदिर को नष्ट करने से भी अधिक जघन्य कार्य होगा निष्ठावानों - चाहे वे स्त्री हों या पुरुष - के हृदयों को दुःखी करना।

वस्तुतः वह एक सत्य ईश्वर मेरा साक्षी है कि इस दिवस में मैं ही ईश्वर का सच्चा रहस्यमय मंदिर हूँ तथा समस्त सद्चरित्रता का सार हूँ। वह जो मेरे प्रति भला करता है, ऐसा ही है मानो वह ईश्वर, उसके देवदूतों एवं उसके प्रिय पात्रों के समस्त समूह के प्रति भला करता है। वह जो मेरे प्रति बुरा करता है, ऐसा ही है मानो वह ईश्वर और उसके चुने हुए जनों के प्रति बुरा करता है। नहीं, ईश्वर एवं उसके प्रियजनों का स्थान इतना उच्च है कि उसकी पावन देहरी तक किसी भी व्यक्ति के अच्छे या बुरे कर्म नहीं पहुँच सकते। जो कुछ भी मुझ तक पहुँचता है, उसका मुझ तक पहुँचना विहित है; और वह जो मुझ तक आया है, उसी को वापस लौट जाएगा जिसने दिया है। उसकी सौगंध ! जिसके हाथों में मेरी आत्मा है, उसने अन्य किसी को नहीं, अपितु स्वयं को कैद में डाला है। क्योंकि निश्चय ही ईश्वर ने जो कुछ भी मेरे लिये आदेशित किया है, घटित होगा और सिवाय उसके जो ईश्वर ने हमारे लिए आदेशित किया है, अन्य कुछ भी हमें नहीं छुएगा। धिक्कार है उस पर जिसके हाथों से दुष्टता प्रवाहित होती है और आशीर्वादित है वह मनुष्य जिसके हाथों से भलाई प्रवाहित होती है। मैं अपनी फ़रियाद ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी के समक्ष नहीं रखता; क्योंकि वही सर्वोत्तम न्यायकर्ता है। विपत्ति अथवा आनन्द की प्रत्येक अवस्था केवल उसी से प्राप्त होती है और वह सर्वाधिक बलशाली, सर्वशक्तिशाली है।

संक्षेप में, इस लोक और परलोक की वे समस्त अच्छाइयाँ जिनकी चाह एक मनुष्य कर सकता है, मैं अपनी मुट्ठी में लिए हुए हूँ। यदि मैं परदे को हटा दूँ, तो सभी मुझे अपने परम प्रियतम के रूप में पहचान जायेंगे और कोई भी मुझे अस्वीकार नहीं करेगा। यह दावा

अत्रमहान को विस्मित न कर दे; क्योंकि ईश्वर में विश्वास रखने वाला एक सच्चा अनुयायी जो अपनी दृष्टि केवल उसी की ओर जमाए रखता है, वह उसके अतिरिक्त अन्य सभी को चरम शून्य समझेगा। ईश्वर की सौगंध ! मैं तुमसे धरती की वस्तुओं की चाह नहीं रखता, चाहे यह एक सरसों के दाने के बराबर ही क्यों न हो। मेरी दृष्टि में इस लोक या उस परलोक की किसी भी वस्तु का स्वामित्व सचमुच खुली ईश-निन्दा के समान होगा। क्योंकि ईश्वर की एकता में विश्वास रखने वाले को जब यही शोभा नहीं देता कि वह अपनी दृष्टि किसी अन्य वस्तु की ओर फेरे, तो यह कितना अशोभनीय होगा कि वह उस वस्तु को अपने पास रख ले। मैं निश्चित रूप से यह जानता हूँ कि चूँकि मेरे पास वह सदाजीवित, आराध्य ईश्वर है, मैं समस्त दृश्य एवं अदृश्य वस्तुओं का स्वामी हूँ....

इस पहाड़ पर मैं एकाकी रहा हूँ और ऐसी अवस्था को प्राप्त हुआ हूँ कि मुझसे पहले आने वालों में से किसी ने भी वह सहन नहीं किया जो मैंने सहन किया है, न ही किसी अपराधी ने कभी वह सहा जो मैंने सहा है ! मैं ईश्वर का गुणगान करता हूँ और पुनः गुणगान करता हूँ। मैं स्वयं को दुःख से मुक्त पाता हूँ क्योंकि मैं अपने स्वामी और मालिक की सुप्रसन्नता के अन्तर्गत रहता हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि सर्वोच्च बैकुंठ में उस सर्वमहान ईश्वर से अपने सम्पर्क से मैं आनन्दित हो रहा हूँ। वस्तुतः यह एक कृपा है जो ईश्वर ने मुझे प्रदान की है; और वह असीम आशीर्वादों का स्वामी है।

मैं ईश्वर के सत्य की सौगंध खाता हूँ! यदि तुम उसे जानते जिसे मैं जानता हूँ तो तुम इस लोक और परलोक का आधिपत्य छोड़ देते, ताकि उस एक-सत्य के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के माध्यम से तुम मेरी सुप्रसन्नता प्राप्त कर सकते... यदि तुम इन्कार करते, तो संसार का वह स्वामी किसी और को खड़ा कर देता जो उसके धर्म को उन्नत करता और वस्तुतः ईश्वर का आदेश प्रभावशाली होकर रहता।

ईश्वर की कृपा से मेरे उद्देश्य को कुछ भी विफल नहीं कर सकता और मैं उसके प्रति पूर्णतया सचेत हूँ जो ईश्वर ने अपने अनुग्रह के चिह्नस्वरूप मुझे प्रदान किया है। यदि मेरी इच्छा होती तो मैं अत्रमहान के समक्ष सभी कुछ प्रकट कर देता; परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया, न ही मैं ऐसा करूँगा ताकि सत्य को, उसके अतिरिक्त अन्य सब कुछ से पृथक किया जा सके और यह भविष्यवाणी जो कि इमाम बाक़िर द्वारा उच्चरित की गयी है (उन्हें शांति प्राप्त हो) पूर्ण रूप से साकार हो सके: 'अज़रबेजान में जो हमें सहना पड़ेगा वह अवश्यंभावी एवं अपूर्व है। जब यह घटित होगा, तुम अपने घरों में प्रतीक्षा करना तथा धैर्य

धारण किये रहना, जिस प्रकार हमने धैर्य धारण किया है। जैसे ही वह कर्ता चलता है, तुम उस तक पहुँचने की शीघ्रता करना, चाहे तुम्हें हिम पर रेंगना ही क्यों न पड़े।'

मैं स्वयं के लिए एवं मुझसे सम्बद्ध सभी वस्तुओं के लिए ईश्वर से क्षमा की भीख माँगता हूँ और स्वीकार करता हूँ कि, समस्त लोकों के स्वामी ईश्वर की स्तुति हो।

मुहम्मद शाह को सम्बोधित एक और पाती के उद्धरण

महिमामण्डित हो वह जो वह सब कुछ जानता है जो आकाश में और धरती पर है। वस्तुतः उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वश्रेष्ठ शासक, सर्वशक्तिशाली, सर्वमहान।

वही है वह जो 'पृथक हो जाने के दिन' सत्य की शक्ति के सहारे न्याय प्रदान करेगा; सत्यतः उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, अतुल्य, सर्वबाध्यकारी, सर्वोच्च। वही है वह जो अपनी मुट्ठी में समस्त सृजित वस्तुओं को धारण किए हुए है; उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, एकमेव, अतुलनीय, सदाजीवी, अगम्य, सर्वमहान।

मैं, इस क्षण, उसी प्रकार ईश्वर के समक्ष साक्षी देता हूँ, जिस प्रकार समस्त वस्तुओं के सृजन के पूर्व उसने स्वयं के समक्ष साक्ष्य दिया था; वस्तुतः उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वप्रतापी, सर्वबुद्धिमान। और जो कुछ भी उसने रचा है या रचेगा, उसकी साक्षी मैं उसी प्रकार देता हूँ जिस प्रकार उसने अपने प्रभुत्व की महिमा में साक्ष्य दिया था: उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, अतुलनीय, स्वयंजीवी, सर्वाधिक विस्मयकारी।

ईश्वर में, जो समस्त सृजित वस्तुओं का स्वामी है, मैंने अपना सम्पूर्ण विश्वास रखा है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, अतुलनीय, सर्वोच्च। मैंने स्वयं को उसे अर्पित कर दिया है और उसके ही हाथों में मैंने अपने समस्त कार्यकलाप समर्पित कर दिये हैं। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, वह सर्वोच्च शासक, देदीप्यमान सत्य है। वास्तव में वह मेरे लिए सर्वपरिपूरक है; वह सभी वस्तुओं का स्वतंत्र दाता है, जबकि आकाश में अथवा धरती पर ऐसा कुछ भी नहीं जिसका वह दाता नहीं है। वह, सत्यतः स्वयंजीवी, सर्वाधिक कठोर है।

स्तुति हो उसकी जो इस क्षण में इस दूरस्थ कारागार में मेरी आकांक्षा के लक्ष्य को महसूस कर रहा है। वही है वह जो सभी समय मेरा साक्ष्य देता है तथा 'हीन के पश्चात'[5] के प्रारम्भ से पहले का समय भी देख रहा है।

तुमने सर्वबुद्धिमान ईश्वर का स्मरण किये बगैर ही न्याय की घोषणा क्यों की ? तुम अग्नि में सुरक्षित कैसे रहोगे ? तुम्हारा परमेश्वर वास्तव में शक्तिशाली एवं सर्वाधिक सूक्ष्म है।

तुम उन वस्तुओं पर गर्व कर रहे हो जो तुम्हारी हैं, जबकि ईश्वर में और उसके चिह्नों में विश्वास रखने वाला कोई भी आस्थावान या कोई भी सदाचारी मनुष्य कभी उन पर ध्यान तक नहीं देगा। यह नाशवान जीवन एक कुत्ते की लाश की भाँति है जिसके इर्द-गिर्द कोई भी एकत्र होना नहीं चाहेगा, ना ही कोई इसका भाग ग्रहण करेगा सिवाय उनके जिन्हें आने वाले जीवन में विश्वास नहीं हैं। वस्तुतः तुम्हारे लिए यह आवश्यक है कि तुम उस सर्वस्वामी, सर्वशक्तिशाली ईश्वर के सच्चे अनुयायी बनो और उससे मुँह मोड़ लो जो नरकाग्नि की यातना की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करता है।

मैं कुछ समय से प्रतीक्षा करता आया हूँ, ताकि तुम कदाचित ध्यान दो और सही मार्गदर्शन प्राप्त करो। उस दिवस में जो निकट आ चुका है, तुम ईश्वर को क्या उत्तर दोगे - वह दिवस जब उस सर्वलोकों के स्वामी, तुम्हारे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रमाण देने के लिए, गवाह खड़े होंगे।

उसके न्याय की सौगंध जिसने तुम्हें अस्तित्व प्रदान किया है और जिसकी ओर तुम शीघ्र ही वापस लौट जाओगे, यदि मृत्यु के क्षण तुम अपने स्वामी के चिह्नों में अविश्वासी बने रहोगे तो तुम निश्चय ही नर्क के द्वार में प्रवेश करोगे और तुम्हारे हाथों किया गया कोई भी कर्म तुम्हें लाभ नहीं पहुँचायेगा, न तो तुम किसी संरक्षक को खोज पाओगे न ही किसी ऐसे को जो तुम्हारी वकालत करे। ईश्वर से डरो और धरती की अपनी सम्पत्ति पर गर्व न करो, क्योंकि उनके लिए जो सदाचार के पथ पर चलते हैं, वह बेहतर है जो ईश्वर के पास है।

वस्तुतः इस दिवस में धरती के सभी निवासी ईश्वर के सेवक हैं। जहाँ तक उनका प्रश्न है जो ईश्वर में सच्चा विश्वास रखते हैं तथा उसके द्वारा प्रकट किए गए चिह्नों के प्रति भलीभाँति आश्वस्त हैं, उन्हें उनके हाथों किए गए कर्मों के लिए वह कदाचित कृपापूर्वक क्षमा कर देगा तथा उसकी दया के परिवेश में प्रवेश प्रदान करेगा। वह सत्य ही, सदाक्षमाशील करुणामय है। परन्तु उनके विरुद्ध, दिव्य दण्ड का फैसला किया जाएगा जिन्होंने अवज्ञापूर्वक मुझसे मुँह मोड़ लिया है तथा उन निर्णायक प्रमाणों एवं निर्भ्रान्त ग्रंथ का खण्डन किया है जिनसे ईश्वर ने मुझे आभूषित किया है तथा सम्बन्ध-विच्छेद के दिन उन्हें कोई रक्षक अथवा सहायक दिखायी नहीं देगा।

मैं उसकी सौगंध खाता हूँ जो सभी प्राणियों को अस्तित्व प्रदान करता है और जिसकी ओर सभी वापस लौट जाएँगे, यदि मृत्यु के समय किसी को मेरे प्रति घृणा है अथवा उन स्पष्ट चिह्नों पर विवाद करता है जिनसे मुझे आभूषित किया गया है, तो उसके भाग्य में सिवाय

दुःखदायी यातनाओं के और कुछ नहीं होगा। उस दिवस में कोई प्रायश्चित स्वीकार नहीं किया जाएगा, ना ही किसी मध्यस्थ की अनुमति दी जाएगी, जब तक कि ईश्वर स्वयं ऐसा न चाहे। वस्तुतः वह सर्वबाध्यकारी, सर्वमहिमामय है; एवं उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वश्रेष्ठ शासक, सर्वशक्तिशाली, सर्वाधिक कठोर।

यदि तुम मेरे कारावास से आनन्दित हो रहे हो, तो शीघ्र ही घोर यातना तुम्हें घेर लेगी। वास्तव में ईश्वर ने अन्यायपूर्ण फैसला सुनाने की अनुमति किसी को नहीं दी और यदि तुम ऐसा करने के लिए तैयार हो जाओगे तो तुम शीघ्र ही जान जाओगे।

उस प्रथम दिन से जब मैंने तुम्हें ईश्वर के समक्ष अहंकार न करने की चेतावनी दी थी, आज तक चार वर्ष बीत चुके हैं और इस अवधि के दौरान मैंने तुममें अथवा तुम्हारे सैनिकों में, सिवाय घोर अत्याचार और अवज्ञापूर्ण अहंकार के और कुछ नहीं देखा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे विचार में, मैं इस सांसारिक जीवन की कोई तुच्छ वस्तु प्राप्त करना चाहता हूँ। नहीं, मेरे स्वामी के सदाचार की सौगंध ! उनकी दृष्टि में, जिन्होंने उस दयालु स्वामी की ओर अपनी दृष्टि केन्द्रित की है, इस दुनिया की धन-सम्पत्ति एक मृत शरीर की आँख के बराबर है, नहीं इससे भी कम!... जो कुछ वे उससे सम्बद्ध करते हैं, वह उसकी महिमा से परे है। मैं केवल ईश्वर में धैर्य रखता हूँ। वस्तुतः वही सर्वोत्तम रक्षक और सर्वोत्तम सहायक है। ईश्वर के अतिरिक्त मैं अन्य किसी शरण की चाह नहीं रखता। वस्तुतः वही संरक्षक एवं सर्वोत्तम सहायक है...

मैं अपने स्वामी, सर्वोच्च, सर्वमहान ईश्वर की महिमा की सौगंध खाता हूँ, जैसा कि दिव्य विधान है, वह निश्चय ही, अपने धर्म की आभा देदीप्यमान करेगा, जबकि अन्यायी के लिए कोई सहायक नहीं होगा। यदि तुम्हारे पास कोई योजना है, तो अपनी योजना प्रस्तुत करो। वास्तव में प्रभुत्व का प्रत्येक प्रकटीकरण ईश्वर से आता है। मैं उसमें ही भरोसा रखता हूँ और उसी को वापस लौट जाऊँगा।

क्या तुमने पहले के किसी व्यक्ति को ऐसा न्याय पारित करते सुना है जिसका आविष्कार तुमने किया है, या ऐसा जिसके लिए तुमने अपनी सहमति दी है ? अतः, अत्याचारियों पर धिक्कार है ! तुम्हारे इरादे और लोगों के साथ व्यवहार करने का तुम्हारा ढंग, दोनों ही स्पष्ट रूप से ईश्वर के प्रति तुम्हारे विश्वासघात को प्रदर्शित करते हैं। वस्तुतः मैं केवल ईश्वर में धैर्य रखता हूँ।

यदि तुम सत्य के उजागर हो जाने एवं अधर्मियों के कृत्यों के निरर्थक हो जाने की सम्भावना से आशंकित नहीं हो, तो तुम यहाँ के ज्ञानवानों को बुलाकर मेरा आह्वान क्यों नहीं करते, ताकि मैं उन्हें तत्क्षण उन अविश्वासियों की तरह हतबुद्धि कर दूँ जिन्हें मैंने पहले हतबुद्धि किया है ? यदि वे सत्य बोलते हैं, तो तुम्हारे लिए एवं उनके लिये यह मेरा प्रमाण है। तुम उन सभी का आह्वान करो, फिर यदि वे ऐसे शब्द उच्चरित कर सकें, तो तुम जान लोगे कि उनका पक्ष ध्यान देने योग्य है। नहीं, मेरे स्वामी के न्याय की सौगंध ! वे शक्तिहीन हैं और वे बोध-सम्पन्न भी नहीं हैं। उन्होंने पूर्व में इसके महत्व को समझे बगैर विश्वास आत्मघोषित किया और बाद में उन्होंने सत्य को अस्वीकार कर दिया; क्योंकि वे विवेकहीन हैं।

यदि तुमने मेरा लहू बहाने का निर्णय ले लिया है, तो फिर तुम विलम्ब क्यों करते हो ? अभी तुम शक्ति एवं सत्ता से सम्पन्न हो। मेरे लिये तो यह ईश्वर द्वारा प्रदान की गयी असीम कृपा होगी, जबकि तुम्हारे लिये और उनके लिए जो ऐसा कृत्य करते हैं, यह उसके द्वारा दिये गये एक दण्ड के समान होगा।

यदि तुम ऐसा निर्णय पारित करते हो, तो मेरी प्रतीक्षा करने वाली धन्यता कितनी महान होगी; और कितना अपार मेरा आनन्द होगा, यदि तुम ऐसा करने पर सहमत हो जाते हो ! यह वह वरदान है जो ईश्वर ने उनके लिए नियत किया है जिन्हें उसके दरबार की निकटता का आनन्द प्राप्त है। अपनी अनुमति दो तथा अधिक प्रतीक्षा न करो। सत्य ही, वह प्रतिशोधी तुम्हारा स्वामी, शक्तिशाली है।

क्या तुम ईश्वर की उपस्थिति में लज्जित नहीं हो कि तुमने उसे, जो ईश्वर का प्रमाण है, एक किले में भेज देने तथा आस्थाहीनों के हाथों उसको बंदी बनाए जाने की स्वीकृति दे दी है ? धिक्कार है तुम पर और उन पर जो मेरा इतना घोर अपमान करने में इस क्षण आनन्दित हो रहे हैं.

मैं उसकी सौगंध खाता हूँ जिसने मुझे अस्तित्व प्रदान किया है, मैं पापमयता का कोई चिह्न स्वयं में नहीं पा सकता, न ही मैंने सत्य के अतिरिक्त किसी अन्य का पालन किया है; और ईश्वर मेरा पर्याप्त साक्ष्य है। धिक्कार है इस संसार और इसके लोगों पर और उन पर जो उस आने वाले जीवन से विस्मष्त हो कर धरती की धन-सम्पत्ति में हर्षित होते हैं।

यदि तुम्हारी आँखों से परदा हटा दिया जाता, तो ईश्वर के उस दण्ड से डर कर, जो निकट आ पहुँचा है, बर्फ पर भी अपनी छाती के बल रेंगते हुए तुम मुझ तक आते। उसके न्याय की सौगंध जिसने मेरा सृजन किया है, यदि तुम उससे अवगत हो जाते जो तुम्हारे शासनकाल में घटित हुआ है, तो तुम यह कामना करते कि काश तुम अपने पिता के शरीर से उत्पन्न ही न हुए होते, अपितु गुमनामी में खो गए होते। परन्तु, वह जो उस परमेश्वर, तुम्हारे स्वामी ने विहित किया था, घट चुका है और इस दिवस में अत्याचारियों पर धिक्कार है।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने उस अमोघ ग्रंथ का अनुशीलन नहीं किया है। यदि तुम स्वयं के मार्ग से संतुष्ट हो एवं सत्य का अनुसरण करना नहीं चाहते, तो मेरा मार्ग मेरे लिए हो और तुम्हारा तुम्हारे लिये। यदि तुम मेरी सहायता नहीं करते, तो मुझे अवमानित क्यों करना चाहते हो ? वस्तुतः ईश्वर प्रार्थी की सुनने वाला है और इस लोक में तथा आने वाले लोक में सभी वस्तुएँ अपनी सर्वोच्च परिपूर्ति उसमें ही प्राप्त करतीं हैं।

आकाश और धरती के स्वामी, सृष्टि के प्रभु की महिमा से परे है वह जो संसार के लोगों द्वारा उसके विषय में कहा जाता है, सिवाय उनके जो निष्ठापूर्वक उसके नियमों का पालन करते हैं। उसके सेवकों में से सच्चे सेवकों पर ईश्वर की शान्ति बनी रहे।

सर्व स्तुति हो ईश्वर की, जो समस्त लोकों का स्वामी है।

मुहम्मद शाह को सम्बोधित एक दूसरी पाती के उद्धरण

यह पाती उसकी ओर से है जो सच्चा, असंदिग्ध, मार्गदर्शक है। इसमें उन लोगों के लिए सभी वस्तुओं की संहिता प्रकट की गई है जो उत्सुकतापूर्वक उसके आह्वान पर ध्यान देंगे या अपनी गिनती उनमें करवाना चाहेंगे जिन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इसमें उनके लिए सभी वस्तुओं की संहिता प्रतिष्ठापित की गयी है जो इस स्पष्ट तुला के अनुसार तुम्हारे स्वामी के प्रकटीकरण की साक्षी देंगे। वस्तुतः पूर्व में सभी वस्तुओं से सम्बन्धित ईश्वर के विधान वाग्मितापूर्ण अरबी में प्रस्तुत किए जा चुके थे। वास्तव में जिनकी आत्माएँ तुम्हारे स्वामी के प्रकाश की भव्यता के माध्यम से सृजित की गयी हैं, वे सत्य को पहचानते हैं तथा उनमें गिने जाते हैं जो उस एक-सत्य ईश्वर की आज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं तथा अत्यंत आश्वासित हैं...

हे मुहम्मद ! तेरे प्रभु की आज्ञाओं का सम्पादन चार वर्ष पूर्व हो चुका है; तथा तेरे प्रभु के धर्म के आरम्भ से ही मैंने तुझे ईश्वर से डरने की तथा अज्ञानियों में से न बनने की चेतावनी दी थी। वास्तव में मैंने एक देदीप्यमान पाती के साथ एक संदेशवाहक को तुझ तक पहुँचाया था, परन्तु शैतान का अनुसरण करने वालों ने उसे तिरस्कारपूर्वक लौटा दिया और उसके एवं तेरे बीच हस्तक्षेप किया। उन्होंने उस भूमि से जिसका तू शासक है उसे निष्कासित कर दिया। इस प्रकार इस लोक और आने वाले लोक की अच्छाइयाँ तेरे हाथ से निकल चुकी हैं, जब तक कि तू ईश्वर द्वारा विहित आदेश के समक्ष झुक नहीं जाता।

ईश्वर के पावन निवास[6] से मेरे लौटने पर मैंने तुझे एक संदेश भेजा था जो उस संदेश जैसा ही था, नहीं, बल्कि उससे भी महान था जो मैंने तुझे पूर्व में भेजा था। ईश्वर वास्तव में सर्वोत्तम रक्षक एवं साक्षी है। मैंने स्वयं द्वारा प्रकटित पातियों के साथ एक संदेशवाहक को तुझ तक भेजा, ताकि तू ईश्वर के आदेश का पालन कर और उनमें से न बन जिन्होंने सत्य को अस्वीकार किया है। परन्तु, उस अत्याचारी ने कुछ ऐसा किया जैसा कोई नहीं करता, दुष्टों में से भी कोई नहीं, न ही घृणित पापियों में से कोई...

जो कष्ट मैंने इस भूमि में सहे हैं, पूर्व के किसी व्यक्ति ने नहीं सहे। वस्तुतः सम्पूर्ण स्थितियाँ ईश्वर को लौट जायेंगी और वह सत्य ही सर्वोत्तम रक्षक है तथा सभी कुछ से अवगत है। उस प्रथम दिन से अब तक, तुम्हारे लोगों के हाथों जो कुछ मुझ पर बीता है, वह केवल शैतान का काम है।[7] जब से तेरे प्रभु का धर्म प्रकट हुआ है तेरा कोई भी कर्म स्वीकारने योग्य नहीं है तथा तू स्पष्ट भ्रम में खो चुका है जबकि जो कुछ भी तुम देख सकते थे वह

तुम्हें ऐसे कर्मों जैसा प्रतीत होता था जो तुम्हारे प्रभु के लिए निष्पादित किये जाते हैं। सत्य ही तुम्हारा दिन निकट आ रहा है और इन सब के विषय में तुमसे प्रश्न किए जायेंगे और निश्चय ही वह परमेश्वर दुष्टों के कर्मों के प्रति असावधान नहीं है।

यदि यह तुम्हारे कारण न होता, तो तुम्हारे समर्थक अवज्ञापूर्वक मुझे अस्वीकृत न करते, यद्यपि वे मूर्खों से भी दूर भटक गए हैं।

क्या वह जिसे तुमने अपने राज्य का अधिपति नियुक्त किया है, तुम्हें सर्वोत्तम नेता एवं सर्वोत्तम समर्थक प्रतीत होता है ? नहीं, मैं ईश्वर की सौगंध खाता हूँ। जो शैतान उसके हृदय में बैठा है, उसके कारण वह तुम्हें दुःखद विपत्तियों में डाल देगा और वस्तुतः वह स्वयं ही शैतान है। वह ईश्वर के ग्रंथ का एक अक्षर भी नहीं समझता और अपने हाथों किए गए कृत्यों के कारण वह भय में जकड़ा हुआ है। वह उस प्रकाश को बुझाने के लिये तैयार हो जायेगा जिसे तुम्हारे प्रभु ने प्रदीप्त किया है, ताकि वह पुरानी अधार्मिकता जो उसके अन्तर्मन में छिपी है, कहीं प्रत्यक्ष न हो जाये। यदि तुमने उसे अपना अधिपति नियुक्त न किया होता, तो किसी ने उस पर लेशमात्र भी ध्यान न दिया होता। वास्तव में लोगों की दृष्टि में वह प्रत्यक्ष अंधकार के सिवाय और कुछ नहीं...

तुम ईश्वर का भय करो और अपनी आत्मा को इतना कष्ट मत दो, जिससे अधिक पहले ही यह यातना भुगत चुकी है, क्योंकि शीघ्र ही तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी और तुम अपने को शैतान से मुक्त कर दोगे, जिसे तुमने यह कहते हुये अपना अधिपति नियुक्त किया है: "काश, हमने अपने अधिपति के रूप में शैतान को नहीं स्वीकार किया होता, न ही एक धोखेबाज़ को अपना पथ-प्रदर्शक और सलाहकार नियुक्त किया होता।

तुम उससे अपनी आत्मा को क्यों इतना बोझिल कर लेते हो जो फेरौन के दुकृत्यों से भी अधिक घृणित है और फिर भी तुम अपने-आप को निष्ठावानों में मानते हो? तुम किस प्रकार कुरआन की आयतों का अनुशीलन करते हो जबकि तुम अन्यायी हो ? कभी किसी यहूदी, न ही ईसाई और न ही कोई ऐसे व्यक्ति के जिसने सत्य को अस्वीकार किया है, अपने अवतार की पुत्री के पुत्र पर इतना अत्याचार किया होगा। तुम पर विपत्ति आ पड़े, क्योंकि न्याय का दिवस निकट आ रहा है। क्या तुम्हें सर्वशक्तिशाली, आसमानों के स्वामी, सम्पूर्ण विश्व के स्वामी, अपने स्वामी के कोप का भय नहीं ? वास्तव में, ये स्पष्ट आयतें उनके लिये अंतिम प्रमाण हैं जो सच्चे पथ-प्रदर्शन की कामना करते हैं।

तुम्हारी सम्पत्ति को ज़ब्त करने की मेरी कोई चाह नहीं है, राई के एक दाने बराबर भी नहीं, और ना ही मैं तुम्हारे स्थान को अपने अधिकार में लेना चाहता हूँ। अगर तुम मेरे अनुयायी नहीं बनते हो तो जो चीज तुम्हारे पास हैं, तुम्हें मुबारक और मेरे जिम्मे वह भूमि जो अचूक संरक्षण है। अगर तुम मेरी आज्ञा नहीं मानते हो तो किस कारण तुम अवमानना की दृष्टि से मुझे देखते हो और घोर अन्याय का व्यवहार मेरे साथ करते हो? सत्यतः, मेरे निवास को देखो - एक विशाल पर्वत, जहाँ कोई भी नहीं रहता। उन पर विपत्ति बरपे जो लोगों पर गलत ढंग से अन्याय करते हैं और अन्याय से तथा छल-कपट कर प्रभु की प्रांजल पुस्तक का उल्लंघन कर अनुयायियों की सम्पत्ति हड़प लेते हैं, जबकि मैं, जो सत्यतः, सभी मनुष्यों का सच्चा सम्प्रभु स्वामी हूँ, जिसे असंदिग्ध मार्गदर्शक द्वारा मनोनीत किया गया है। मैं कभी भी लोगों की वास्तविकता की अखंडता पर अतिक्रमण नहीं करूंगा, अगर यह राई एक दाने के बराबर भी हो हम उसके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करेंगे। इसके विपरीत, उनके बीच हो कर हम उनसे परामर्श करेंगे और मैं उनका साक्षी बनूंगा।

जो मुझे सौंपा गया है वह केवल तुम्हारे स्वामी के ग्रंथ का उल्लेख करना एवं यह स्पष्ट संदेश पहुँचाना है। यदि तुम स्वर्ग के द्वार में प्रवेश प्राप्त करना चाहते हो, तो देखो, ये तुम्हारे समक्ष खुले हैं और मुझे किसी से कोई हानि नहीं पहुँच सकती। अब तक मैंने तुम्हारी और तुम्हारे कार्यकलापों के परिरक्षक की ओर जो भी संदेश भेजे हैं, वे तुम दोनों के प्रति केवल मेरी उदारता के चिह्न हैं ताकि कदाचित तुम उस दिवस को लेकर चिंतित न हो जाओ जो निकट आ पहुँचा है। फिर भी, जिस क्षण से तुम अवमानी हुए थे, ईश्वर के ग्रंथ में तुम पर दिव्य न्याय पारित किया जा चुका था, क्योंकि सत्य ही तुम दोनों ने तुम्हारे प्रभु को अस्वीकार किया है और उनमें से गिने जाते हो जो नष्ट हो जायेंगे . . . यह वास्तव में तुम्हारे लिये मेरा अन्तिम स्मरण-पत्र है और इसके बाद मैं तुम्हारा कोई उल्लेख नहीं करूँगा, न ही मैं कोई टिप्पणी ही करूँगा, सिवाय इस पुष्टि के कि तुम अविश्वासी हो।

मैं अपने और तुम्हारे कार्यकलाप ईश्वर को सौंपता हूँ और वस्तुतः वह सर्वोत्तम न्यायकर्ता है। फिर भी, यदि तुम लौट आते हो, तो तुम्हें धरती की सम्पत्ति तथा उस आने वाले जीवन के अकथनीय सुखों में से वह सब प्रदान किया जाएगा जो तुम चाहोगे और तुम ऐसी यशस्वी शक्ति एवं ऐश्वर्य के उत्तराधिकारी बनोगे जिसकी इस नाशवान जीवन में कल्पना भी तुम्हारा मस्तिष्क शायद ही कर सके। परन्तु, यदि तुम लौटने में विफल होते हो तो तुम्हारे पाप तुम्हारे साथ होंगे।

जो चीज़ें उस सर्वशक्तिशाली ने मेरे लिए निर्धारित की हैं, उन्हें तुम बदल नहीं सकते। उस परमेश्वर, मेरे स्वामी ने मेरे लिये जो पूर्वविहित किया है, उसके अतिरिक्त मुझे अन्य कुछ भी नहीं छुएगा। मैंने अपना सम्पूर्ण विश्वास उसमें ही रखा है और निष्ठावान भी अपना सम्पूर्ण भरोसा उसमें ही रखते हैं।

मेरे साक्ष्य बनो, हे प्रभु ! इस देदीप्यमान पाती को भेजते ही मैंने इन दोनों के समक्ष तुम्हारे श्लोकों को उद्घाटित कर दिया होगा तथा उनके लिए तुम्हारा प्रमाण पूरा कर दिया होगा। तेरे पथ पर अपने जीवन का बलिदान करना मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ और तुम्हारी उपस्थिति में वापस आना चाहता हूँ। आसमानों और धरती पर तेरी स्तुति हो। तू अपने विधान के अनुसार उनसे व्यवहार कर। सच, तू ही सर्वश्रेष्ठ संरक्षक और सहायक है।

हे स्वामी, ऐसी अव्यवस्था को जो लोगों द्वारा उत्पन्न की जाती है, ठीक कर दे और ऐसा कर कि तेरा शब्द सम्पूर्ण धरती पर देदीप्यमान होकर चमके, ताकि अधर्मियों के निशान भी न रहें।

हे मेरे प्रभु ! तेरी पाती में मैंने जो उच्चरित किया है उसके लिये मैं तुझसे क्षमा की भीख माँगता हूँ और मैं तेरे ही समक्ष पश्चाताप करता हूँ। मैं तो मात्र तेरे उन सेवकों में एक हूँ जो तेरा गुणगान करते हैं। यशस्वी है तू; तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। मैंने अपना सम्पूर्ण विश्वास तुझमें ही रखा है और तेरे द्वार का एक प्रार्थी होने के लिए मैं तुझसे ही क्षमा की याचना करता हूँ।

वह ईश्वर, तुम्हारा परमेश्वर, शक्तिशाली राजसिंहासन का वह स्वामी, उन सब से पावन है जिसकी पुष्टि उसके स्पष्ट ग्रंथ के मार्गदर्शन के बगैर उसके विषय में लोग अन्यायपूर्वक करते हैं। उन्हें शांति प्राप्त हो, जो ईश्वर, तुम्हारे स्वामी से यह कहते हुए क्षमा की याचना करते हैं: 'वस्तुतः, समस्त लोकों के स्वामी ईश्वर की स्तुति हो।'

उस पाती के उद्धरण
जिसमें मक्का के प्रधान जनपदाधिकारी को
सम्बोधित शब्द शामिल हैं

हे शरीफ़ ! कृतू जीवन भर हमारे समक्ष आराधना करता रहा, परन्तु जब हमने स्वयं को तुझ पर प्रकट किया, तो तूने हमारे स्मरण का साक्ष्य देना एवं इसकी पुष्टि करना छोड़ दिया कि वास्तव में वही है सर्वोच्च, परम सत्य, सर्वमहिमावान। इस प्रकार तुम्हारे स्वामी ने नवजीवन के दिवस में तुम्हारी परीक्षा ली। वस्तुतः वह सर्वज्ञानी, सर्वबुद्धिमान है।

यदि तूने 'मैं हाज़िर हूँ' का उच्चारण तब किया होता जब हमने तुम्हें यह ग्रंथ भेजा था, तो हम तुम्हें अपने ऐसे सेवकों के दल में स्वीकार कर चुके होते जो सचमुच विश्वास करते हैं और उदारतापूर्वक तुम्हारा उल्लेख अपने ग्रंथ में उस दिवस तक किया होता जब न्याय के लिए सभी हमारे समक्ष प्रस्तुत होंगे। सत्य ही जो उपासना के कार्य तुमने अपने स्वामी के लिये जीवन भर, नहीं, बल्कि उस आदिकाल से किये हैं जिसका कोई प्रारम्भ नहीं, उससे कहीं अधिक लाभप्रद, यह तुम्हारे लिये है। निश्चित ही जो तुम्हारे सर्वोत्तम हितों को लाभ पहुँचाता और सदा पहुँचाएगा वह यही है। वस्तुतः हम सभी वस्तुओं के संज्ञाता हैं। इसके बावजूद कि हमने तुम्हारा सृजन इसलिए किया था कि तुम नवजीवन के दिवस में हमारी उपस्थिति प्राप्त करो, तुमने बगैर किसी कारण अथवा सुस्पष्ट परमादेश के, स्वयं को हमसे वंचित किया; जबकि यदि तुम उनमें से होते जिन्हें 'बयान' का ज्ञान प्राप्त है, तो तुमने उस ग्रंथ को देखते ही यह साक्ष्य दिया होता कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, और इस बात की पुष्टि की होती कि जिसने कुरआन को प्रकट किया है, उसने उसी प्रकार इस ग्रंथ को भी प्रकट किया है, कि इसका प्रत्येक शब्द ईश्वर की ओर से है और इसके प्रति हम सभी निष्ठावान हैं।

फिर भी, जो पूर्वनिर्धारित था, घटित हुआ है। यदि हमारे माध्यम से प्रकटीकरण के जारी रहने तक तुम हम तक लौट आते हो, तो हम तुम्हारी अग्नि को प्रकाश में परिवर्तित कर देंगे। हम सत्य ही सभी वस्तुओं पर शक्तिशाली हैं। परन्तु यदि तुम इस कार्य में विफल रहते हो, तो तुम्हें अपने समक्ष और कोई मार्ग दिखायी नहीं देगा सिवाय इसके कि तुम ईश्वर के धर्म को अपना लो और यह याचना करो कि तुम्हारी निष्ठा का मामला उसके समक्ष लाया

जाए जिसे ईश्वर प्रकट करेगा ताकि समृद्धि प्राप्त करने तथा तुम्हारी अग्नि को प्रकाश में परिवर्तित करने में वह कृपापूर्वक तुम्हारी सहायता करे। यह वह है जो हम तक अवतरित किया गया है। यदि ऐसा घटित नहीं होता है, तो हमने जो कुछ भी लिखा है वह बाध्यकारी तथा अटल रूप से उस संकट में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर द्वारा आदेशित रहेगा और इसलिए हमारी ओर से न्याय के प्रतीक स्वरूप, हम तुम्हें अपनी उपस्थिति से निर्वासित कर देंगे। वस्तुतः हम अपने फैसले में न्यायसंगत हैं।

एक मुस्लिम धर्मोपदेशक को सम्बोधित

हे 'अब्दु के-साहिब ! वस्तुतः ईश्वर तथा प्रत्येक सृजित वस्तु इसकी साक्षी देते हैं कि मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिशाली, परम प्रियतम...

इस धारणा के कारण कि मुहम्मद के आगमन के साथ दिव्य प्रकटीकरण भी समाप्त हो चुका है, तुम्हारी दृष्टि धुँधली हो चुकी है और अपनी प्रथम पाती में हम इसकी साक्षी दे चुके हैं। वह जिसने ईश्वर के संदेशवाहक मुहम्मद के समक्ष श्लोकों को प्रकट किया, उसने वास्तव में उसी प्रकार अली मुहम्मद के समक्ष भी श्लोकों को प्रकट किया है। ईश्वर के अतिरिक्त और कौन है जो एक मनुष्य पर ऐसे स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष श्लोकों को प्रकटित कर सकता है जो सभी ज्ञानीजनों को अभिभूत कर दें ? चूँकि तुमने ईश्वर के संदेशवाहक मुहम्मद के प्रकटीकरण को स्वीकार किया है, इसलिए तुम्हारे समक्ष इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं कि तुम यह साक्ष्य दो कि जो कुछ भी उस आदि बिन्दु द्वारा प्रकट किया गया है, वह उस संकट में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की ओर से ही आया है। क्या यह सत्य नहीं है कि 'कुरआन' ईश्वर की ओर से भेजी गयी है और इसके प्रकटीकरण के समक्ष सभी मनुष्य शक्तिहीन हैं ? इसी प्रकार, ये शब्द भी ईश्वर द्वारा प्रकट किये गये हैं, कदाचित तुम समझ सको। 'बयान' में ऐसा क्या है जो तुम्हें यह पहचानने से रोक रहा है कि ये श्लोक उस अगम्य, सर्वोच्च, सर्वमहिमाशाली ईश्वर द्वारा भेजे गये हैं ?

इन शब्दों का सार यह है: यदि हम तुम्हारा लेखा-जोखा करते तो तुम खाली हाथ साबित हो जाते; हम, सत्य ही, सभी वस्तुओं को जानते हैं। यदि ईश्वर के शब्द सुनने पर तुमने 'हाँ' का उच्चारण किया होता, तो उस प्रारम्भ से जिसका कोई प्रारम्भ नहीं, वर्तमान दिवस तक तुम्हें ईश्वर की उपासना करने वाला एवं कभी पलक झपकने तक भी उसकी अवज्ञा न करने वाला ही माना जाता। फिर भी, सत्य ही, न तो वे सद्कर्म जो तुमने जीवन भर किये, ना ही वे प्रयास जो तुमने अपने हृदय से ईश्वर की सुप्रसन्नता के अलावा अन्य प्रत्येक विचार को निकालने के लिये किए, इन में से कुछ भी, एक राई के दाने बराबर भी तुम्हें लाभ न पहुँचा सका, क्योंकि तुमने स्वयं को ईश्वर से दूर कर लिया है और उसके प्रकटीकरण के समय पीछे रह गए।

वस्तुतः तुम्हारी ही तरह ईश्वर द्वारा काफ (कूफा) प्रान्त के सभी ज्ञानियों से प्रश्न किया जाएगा: 'क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि एक संदेशवाहक एक ग्रंथ ले कर तुम तक पहुँचा

और तुमने अपनी शक्तिहीनता स्वीकार करने के बावजूद ईश्वर के उस धर्म का पालन करने के इन्कार कर दिया जो वह लाया था और अपने अविश्वास पर डटे रहे ? अतः तुम्हारे लिये वह अग्नि नियत की गई है जो उनके लिये नियत थी जो उस देश में ईश्वर से विमुख हो गये हैं, क्योंकि तुम उनके नेता हो; काश कि तुम उनमें से होते जो ध्यान देते हैं !

यदि तुमने निष्ठापूर्वक ईश्वर के आदेश का पालन किया होता, तो तुम्हारे प्रान्त के सभी निवासियों ने तुम्हारा अनुसरण किया होता और सदासर्वदा के लिए ईश्वर की सुप्रसन्नता में संतोष करते हुए, वे स्वयं उस दिव्य स्वर्ग में प्रवेश करते। फिर भी, उस दिवस में तुम्हारी यह कामना होगी कि ईश्वर ने तुम्हारी रचना ही न की होती।

तुमने स्वयं को इस्लाम धर्म के ज्ञानीजनों में से एक मानकर स्थापित किया है ताकि तुम अनुयायियों की रक्षा कर सको, फिर भी तुमने अपने अनुयायियों को अग्नि में झोंक दिया, क्योंकि जब ईश्वर के श्लोक प्रकट किये गए, तो तुमने स्वयं को उनसे वंचित रखा, फिर भी तुम स्वयं को सदाचारियों में समझते हो... नहीं, उसके जीवन की सौगंध वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा ! न तो तुम, न ही उसके सेवकों में से कोई भी, लेशमात्र प्रमाण प्रस्तुत कर सकता है, जबकि ईश्वर अपने प्राणियों से परे देदीप्यमान रूप से चमक रहा है और आदेश देने की अपनी शक्ति से आकाश और धरती के साम्राज्यों में निवास करने वाले सभी से परे सर्वोच्च स्थित है। वस्तुतः वह सभी सृजित वस्तुओं पर सक्षम है।

तुमने स्वयं को 'अब्दु-स्साहिब' (स्वामी का सेवक) नाम दिया है। फिर भी, जबकि ईश्वर ने सत्य ही तुम्हारे स्वामी को प्रकट कर दिया है और तुमने अपनी दृष्टि भी उस पर डाली, तुमने उसे नहीं पहचाना, यद्यपि ईश्वर ने तुम्हें इस उद्देश्य से अस्तित्व प्रदान किया था कि तुम उसकी उपस्थिति प्राप्त करोगे, यदि तुमने 'गर्जन' नामक अध्याय के तीसरे श्लोक पर सच्चा विश्वास किया होता।[8]

तुम विवाद करते हो कि, 'हम उसे कैसे पहचाने जबकि हमने सिवाय ऐसे शब्दों के और कुछ नहीं सुना जो अखण्डनीय प्रमाणों के लिए कम पड़ते हैं ? फिर भी, जबकि तुमने ईश्वर के धर्मप्रचारक मुहम्मद को कुरआन के माध्यम से स्वीकारा और पहचाना है, तो तुम्हारे द्वारा स्वयं को 'उसका सेवक' कहे जाने के बावजूद, तुम उसे पहचानने से कैसे विफल हो सकते हो जिसने यह ग्रंथ तुम तक भेजा है ? वस्तुतः मानवजाति के समक्ष अपने प्रकटीकरणों के परे वह अविवादित अधिकार रखता है।

यदि तुम तब हमारे समक्ष आते जब हम पर दिव्य प्रकटीकरण उतर रहा हो, तो कदाचित ईश्वर तुम्हारी अग्नि को प्रकाश में परिवर्तित कर देता। वस्तुतः वह सदा क्षमाशील, सर्वकृपालु है। अन्यथा वह जो प्रकट किया गया है, निर्णायक एवं अन्तिम है और नवजीवन के दिन तक सभी द्वारा निष्ठापूर्वक समर्थित किया जायेगा... यदि दिव्य प्रकटीकरण रुक जाता है, तो तुम्हें एक निवेदनपत्र उसे लिखना चाहिए जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, यह याचना करते हुए कि यह उसकी उपस्थिति में पहुँचाया जाए। इसमें तुम्हें अपने स्वामी से क्षमा की भीख माँगनी चाहिए, पश्चाताप में उसकी ओर उन्मुख होना चाहिए और उनमें से बनना चाहिए जो पूर्णतया उसके प्रति समर्पित हैं। कदाचित अगले नवजीवन में ईश्वर तुम्हारी अग्नि को प्रकाश में बदल दे। सत्य ही, वह रक्षक, सर्वोच्च, सदा क्षमाशील है। स्वर्ग और धरती में तथा जो कुछ भी इनके मध्य है वे सभी उसी के समक्ष उपासना में नतमस्तक होते हैं; और सभी उसी को वापस लौट जाएँगे।

हम तुम्हें आदेश देते हैं कि तुम स्वयं को तथा उस देश के सभी निवासियों को उस अग्नि से बचा लो और तत्पश्चात उसकी सुप्रसन्नता के अतुलनीय एवं उच्च स्वर्ग में प्रवेश करो। अन्यथा वह दिन निकट आ रहा है जब तुम नष्ट हो जाओगे, जब तुम्हारे पास न तो कोई ईश्वर की ओर से और न कोई संरक्षक या सहायक ही होगा। हमने अपनी कृपा के चिह्नस्वरूप तुम पर अनुकम्पा की है, क्योंकि तुमने स्वयं को हमसे सम्बद्ध किया है। हम तुम्हारे सद्कर्मों से परिचित हैं, यद्यपि यह तुम्हारे कोई काम नहीं आयेंगे; क्योंकि ऐसे सदाचार का सम्पूर्ण ध्येय है, ईश्वर, तुम्हारे स्वामी का अभिज्ञान तथा उसके द्वारा प्रकट किये गए शब्दों में असंदिग्ध विश्वास।

मस्क़ट प्रांत के एक मुस्लिम धर्मोपदेशक
सुलेमान को सम्बोधन

यह पाती उस संकट में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की ओर से महासागर के दाहिने स्थित मस्क़ट प्रदेश में सुलेमान के लिये है। सत्य ही, उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी वास्तव में, यदि आकाश और धरती तथा उनके बीच जो कुछ भी अस्तित्व में है, एकत्र हो जाते, तब भी वे ऐसा ग्रंथ प्रस्तुत करने में पूर्णतया असफल एवं शक्तिहीन रहते, यद्यपि हमने उन्हें धरती पर वाक्यपटुता एवं ज्ञान में प्रवीण बनाया है। चूँकि तुम कुरआन से प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हो, अतः ईश्वर भी उसी ग्रंथ के प्रमाणों द्वारा बयान में स्वयं को सिद्ध करेगा। यह उस सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिशाली ईश्वर के आदेश के सिवाय और कुछ नहीं है।

यदि तुम उनमें से हो जो सचमुच विश्वास करते हैं, तो तुम्हारे पास इसके प्रति निष्ठा रखने के सिवाय, अन्य कोई विकल्प नहीं। आकाश और धरती तथा जो कुछ भी इनके बीच है, के सभी निवासियों के लिये यही ईश्वर का मार्ग है। मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वशक्तिशाली, अगम्य, सर्वोच्च।

इसके पश्चात इस प्रदेश से हम उस पावन निवास की ओर बढ़ें तथा अपनी यात्रा से लौटने पर एक बार फिर हम इस स्थल पर आ पहुँचे, तब हमने पाया कि जो हमने तुम्हें भेजा था उस पर तुमने ध्यान नहीं दिया, न ही तुम उनमें से बने हो जो सचमुच विश्वास करते हैं। यद्यपि हमने तुम्हारा सृजन अपनी ओर अभिमुख होने के लिये किया था और हम वास्तव में उस स्थान पर उतरे भी थे, फिर भी अपने जीवन-भर ईश्वर की उपासना करने के बावजूद तुम अपने सृजन के ध्येय को प्राप्त करने में विफल रहे। हमारी उपस्थिति एवं हमारे लेखों से मानो एक परदे के द्वारा तुम्हारे बहिष्कृत हो जाने के कारण तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायेंगे। यह हमारे द्वारा दिया गया एक अटल आदेश है। वस्तुतः हम अपने निर्णय में न्यायसंगत हैं।

यदि तुमने इस पाती की विषय वस्तु का पालन किया होता, तो यह तुम्हारे लिये उस आदि से - जिसका कोई प्रारम्भ नहीं - आज तक अपने स्वामी की उपासना करने से भी कहीं अधिक लाभदायक होता और सत्य ही, उपासना के अपने कर्मों में स्वयं को पूर्णतया

समर्पित सिद्ध करने से भी कहीं अधिक पुण्यप्रद और यदि इस भूमि पर तुम अपने स्वामी की उपस्थिति को प्राप्त हुए होते और उनमें से होते जिन्हें सच्चा विश्वास है कि ईश्वर का मुखमण्डल आदिबिन्दु के व्यक्तित्व में देखा जा सकता है, तो यह उस आदि - जिसका कोई प्रारम्भ नहीं - से वर्तमान काल तक ईश्वर की आराधना करने से कहीं अधिक लाभदायक होता...

सत्य ही, हमने तुम्हारी परीक्षा ली और पाया कि तुम उनमें से नहीं हो जो ज्ञान सम्पन्न हैं। इसलिए हमारी उपस्थिति से न्याय के एक चिह्न-स्वरूप हमने तुम पर प्रतिवाद का दण्डादेश पारित किया; और वस्तुतः हम न्यायसंगत हैं।

फिर भी, यदि तुम हमारे पास लौट आते हो, तो हम तुम्हारे प्रतिवाद को समर्थन में परिवर्तित कर देंगे। वस्तुतः हम वह है जो असीम मुक्तहस्त है। परन्तु यदि यह आदिबिन्दु तुम्हारे साथ रहना समाप्त कर दे, तो ईश्वर के शब्दों द्वारा दिया गया फैसला अन्तिम और अपरिवर्तनीय होगा और निश्चित रूप से सभी इसका समर्थन करेंगे। यदि तुम उसे एक पत्र सम्बोधित करते जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, यह याचना करते हुए कि यह उसकी उपस्थिति में पहुँचाया जाये, तो कदाचित वह कृपापूर्वक तुम्हें क्षमा कर देता और अपने आदेश से तुम्हारे प्रतिवाद को समर्थन में परिवर्तित कर देता। वह सत्य ही सर्वदयालु, सर्वकृपालु है, वह जिसकी कृपा अपार है। अन्यथा, 'हाँ, यहाँ हूँ मैं' का उत्तर देने में विफल रहने के कारण तुम अपने समक्ष कोई मार्ग नहीं पाओगे और तुम्हें अपने कर्मों से कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। वस्तुतः हमने तुम्हें एवं तुम्हारे कृत्यों को शून्य में न्यूनीकृत कर दिया है, मानो जैसे तुम कभी अस्तित्व में आये ही नहीं थे, न ही कभी उनमें से थे जो अच्छे कर्म करते हैं, ताकि यह उनके लिए एक सबक बने जिन्हें 'बयान' प्रदान की गयी है, ताकि जब उसके पावन लेख जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उन तक पहुँचें, तो वे अच्छी तरह ध्यान दें और उन पर चिन्तन करने से, अपनी आत्माओं को बचाने में समर्थ बनें।

निश्चित ही हमारी कृपा उन सभी, जो आकाश और धरती के साम्राज्यों में निवास करते हैं, और जो कुछ भी इनके मध्य है, और इनके परे, समस्त मानवजाति में, व्याप्त है। फिर भी, जिन आत्माओं ने स्वयं को मानो एक परदे के द्वारा बहिष्कृत कर लिया है, वे कभी भी ईश्वर की कृपा-वर्षा के भागीदार नहीं हो सकतीं।

2

क़य्यूमुल-अस्मा

के

कुछ उद्धरण

समस्त स्तुति ईश्वर की हो, जिसने सत्य की शक्ति से अपने सेवक के लिये यह ग्रंथ दिया है, ताकि समस्त मानवजाति के लिये यह एक दीप्तिमान प्रकाश सिद्ध हो सके... वस्तुतः इसके अतिरिक्त अन्य कोई परम सत्य नहीं; यह वह 'पथ' है जो ईश्वर ने उन सभी के लिये निर्धारित किया है जो धरती और आकाश में हैं। अतः जो चाहे उसे स्वयं के लिये अपने प्रभु की ओर जाने का सही मार्ग अपनाने दो। वस्तुतः यह ईश्वर का सच्चा धर्म है जिसका पर्याप्त साक्षी ईश्वर एवं वे लोग हैं जो इस ग्रंथ के ज्ञान से सम्पन्न हैं। यह सत्य ही वह अनन्त सत्य है जिसे उस युगप्राचीन ईश्वर ने अपने सर्वसमर्थ शब्दों पर प्रकट किया है - वह जिसे झाड़ी से उत्पन्न किया गया था। यह वह रहस्य है जिसे उन सभी से छिपाया गया था जो धरती और आकाश में हैं तथा सत्य ही उस उच्च ईश्वर के हाथ से इस अद्‌भुत प्रकटीकरण में, इस मातृग्रंथ में इसे प्रस्तुत किया गया है...

हे सम्राटों एवं सम्राटों के पुत्रों के समूह ! तुम में से प्रत्येक, अपने साम्राज्य से, जो कि ईश्वर का है, अलग कर लो...

हे शाह, तुम्हारी प्रभुसत्ता कहीं तुम्हें छल न ले, क्योंकि 'प्रत्येक आत्मा मृत्यु का स्वाद चखेगी'[9] और सत्य ही, यह ईश्वर के आदेश के रूप में लिखा जा चुका है। अध्याय 1

हे मुस्लिमों के सम्राट ! उस ग्रंथ की सहायता करने के बाद, सत्य के द्वारा तुम उसकी सहायता करो जो हमारा सर्वमहान स्मरण है, क्योंकि, सत्य ही, ईश्वर ने न्याय के दिवस में तुम्हारे लिये तथा उनके लिये जो तुम्हारे इर्द-गिर्द घूमते हैं, अपने पथ में एक उत्तरदायित्वपूर्ण स्थान नियत किया है। हे शाह, मैं ईश्वर की सौगंध खाता हूँ ! यदि तुम उसके प्रति शत्रुता दिखलाते हो जो उसका स्मरण है, तो पुनरूत्थान के दिन राजाओं के समक्ष ईश्वर तुम्हें नरकाग्नि की दण्डाज्ञा देगा और सत्य ही, उस दिवस में तुम्हें सिवाय उस उच्च ईश्वर के, अन्य कोई सहायक नहीं मिलेगा। हे शाह जब सर्वोच्च ईश्वर की अनुमति से, ईश्वर का स्मरण अपने शक्तिशाली धर्म के साथ भयंकर रूप से एवं अचानक आएगा, उस दिवस से पहले इस पावन भूमि (तेहरान) को ऐसे लोगों से पवित्र कर दो जिन्होंने इस ग्रंथ का खण्डन किया है, वस्तुतः, ईश्वर ने तुम्हारे लिये यह आदेशित किया है कि तुम उसके समक्ष तथा उसके धर्म के समक्ष झुक जाओ जो उसका 'स्मरण' है तथा सत्य के द्वारा तथा उसकी अनुमति से, तुम देशों को अधीन रखो, क्योंकि इस संसार में तुम्हें कृपापूर्वक

प्रभुसत्ता से सम्पन्न किया गया है तथा अगले लोक में उसकी सुप्रसन्नता के स्वर्ग के निवासियों के साथ, तुम पावनता के सिंहासन के निकट निवास करोगे...

ईश्वर की सौगंध ! यदि तुम अच्छा करते हो, तो तुम अपने ही लिये अच्छा करोगे; और यदि तुम ईश्वर और उसके चिह्नों को नकार देते हो, तो सत्य ही, ईश्वर का साथ होने से, हम सभी प्राणियों एवं सम्पूर्ण धरती की प्रभुसत्ता को भलीभाँति छोड़ सकते हैं। अध्याय 1

तुम उस एक सत्य ईश्वर के आदेश से संतुष्ट रहो, क्योंकि जैसा कि ईश्वर के हाथ से मातृग्रंथ में दर्ज किया गया है, निश्चित रूप से उसे, जो उसका स्मरण है, प्रभुसत्ता प्रदान की गयी है...

हे शाह के मंत्री ! तुम उस परम सत्य, न्यायकर्ता, ईश्वर से डरो जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं और अपने राज्य को किनारे रख दो, क्योंकि उस सर्वबुद्धिमान ईश्वर की अनुमति से हमने धरती और इस पर बसने वाले वाले सभी को उत्तराधिकार में प्राप्त किया है[10] तथा तुम्हारे एवं शाह के लिये वह एक न्यायपूर्ण साक्षी हो। यदि तुम सम्पूर्ण सच्चाई के साथ ईश्वर के स्मरण की आज्ञाओं का पालन करते, तो ईश्वर की अनुमति से हम यह आश्वासन देते हैं कि नवजीवन के दिन, उसके अनन्त स्वर्ग में एक बृहत अधिराज्य तुम्हारा होगा।

तुम्हारा अधिराज्य व्यर्थ है, क्योंकि ईश्वर ने भौतिक धन-सम्पत्ति ऐसे लोगों से अलग रखी है जिन्होंने उसे अस्वीकार किया है; क्योंकि सर्वश्रेष्ठ आवास उसका होगा जो तुम्हारा स्वामी है, वह जो सत्य ही युगप्राचीन है....

हे सम्राटों के समूह! सच्चाई के साथ एवं अत्यंत शीघ्रतापूर्वक तुर्क और भारत के लोगों एवं इनके परे, पूरब और पश्चिम दोनों में स्थित देशों तक शक्ति और सच्चाई के साथ हमारे द्वारा नीचे भेजे गये श्लोक पहुँचाओ ... और यह जान लो कि यदि तुम ईश्वर की सहायता करते हो, तो वह, पुनरूत्थान के दिन उस 'सेतु' पर, उसके माध्यम से जो उसका स्मरण है, कृपापूर्वक तुम्हारी सहायता करेगा...

हे धरती के लोगो ! ईश्वर के स्मरण की आज्ञाओं एवं उसके ग्रंथ का जो कोई भी पालन करता है, उसने सत्य ही ईश्वर और उसके चुने हुए जनों की आज्ञाओं का पालन किया है

और आने वाले जीवन में, ईश्वर की उपस्थिति में वह उसकी सुप्रसन्नता के स्वर्ग के निवासियों में गिना जायेगा। अध्याय 1

वस्तुतः, श्लोकों के प्रकटीकरण को हमने तुम्हारे प्रति अपने संदेश का प्रमाण बनाया है। क्या तुम इन श्लोकों की बराबरी करने वाला एक अक्षर भी प्रस्तुत कर सकते हो ? यदि तुम उनमें से हो जो उस एक सत्य ईश्वर को पहचान सकते हैं, तो अपने प्रमाण प्रस्तुत करो। मैं दृढ़तापूर्वक ईश्वर के समक्ष यह पुष्टि करता हूँ कि, यदि सभी मनुष्य और आत्माएँ मिलकर इस पुस्तक जैसा एक अध्याय भी लिखना चाहें तो वे निश्चित रूप से असफल रहेंगे, यद्यपि वे एक दूसरे की सहायता करें।[11]

हे धर्माधिकारियों के समूह ! आज के बाद अपने मत व्यक्त करने में ईश्वर से डरो, क्योंकि वह जो तुम्हारे बीच हमारा स्मरण है और जो हमारे बीच से आयेगा, वह सत्य ही न्यायकर्ता एवं साक्ष्य है। उससे मुँह मोड़ लो जो तुम्हारे पास है और जिसकी अनुमति उस एक सत्य ईश्वर के ग्रंथ ने नहीं दी, क्योंकि नवजीवन के दिवस में तुम सत्य ही उस 'सेतु' पर उस पद के लिये उत्तरदायी होंगे जिस पर तुम पदस्थ थे ...और तुम तक हमने यह ग्रंथ भेजा है जिसके बारे में, सत्य ही कोई भूल नहीं कर सकता...

हे 'ग्रंथ' के लोगों के समूह! ईश्वर से डरो और अपने ज्ञान पर अहंकार न करो। उस पुस्तक का अनुसरण करो जिसे उस एक सत्य ईश्वर की प्रशंसा में उसके स्मरण ने प्रकट किया है। वह जो शाश्वत सत्य है, मेरा साक्षी है, जो कोई भी इस पुस्तक का अनुसरण करता है, उसने वास्तव में अतीत के उन सभी पावन ग्रंथों का अनुसरण किया है जो उस परम सत्य ईश्वर द्वारा स्वर्ग से भेजे गये हैं। वस्तुत, वह उस सब से भलीभाँति परिचित है जो तुम करते हो... वे जो इस्लाम के सच्चे अनुयायी हैं कहते: "हे स्वामी, हमारे प्रभु ! हमने तेरे स्मरण के आह्वान को सुना है और उसकी आज्ञाओं का पालन किया है। हमारे पापों को क्षमा कर। वस्तुतः तू, शाश्वत सत्य है और हम सभी को हमारे अचूक आश्रय, तुझ तक लौटना ही है।[12]" अध्याय 2

जहाँ तक उनका सम्बन्ध है जो 'उसे' अस्वीकार करते हैं जो ईश्वर का उदात्त द्वार है, उनके लिये, जैसा कि ईश्वर ने न्यायपूर्वक आदेशित किया है, हमने एक दुःखद यातना निर्धारित की है और वह, ईश्वर, शक्तिशाली, बुद्धिमान है।

हमने सत्य ही, इस दिव्यतः प्रेरणा प्राप्त ग्रंथ 'अपने सेवक' पर प्रकट किया है... अतः इसकी व्याख्या के विषय में उससे पूछो जो हमारा स्मरण है, क्योंकि, जैसाकि दिव्यतः आदेशित हुआ है और प्रभु की कृपा के माध्यम से, वह इसके श्लोकों के ज्ञान से विभूषित है...

हे मानव की संतान ! यदि तुम उस एक सत्य ईश्वर में विश्वास करते हो, तो मेरा, तुम्हारे स्वामी द्वारा भेजे गये ईश्वर के इस सर्वमहान स्मरण का अनुसरण करो, ताकि वह, तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें कृपापूर्वक क्षमा कर दे। वस्तुतः वह निष्ठावानों के जनसमुदाय के प्रति क्षमाशील एवं दयालु है। हम, सत्य ही, अपने शब्द की शक्ति से संदेशवाहकों का चयन करते हैं और जैसा कि इस ग्रंथ में आदेशित है और इसमें छिपा है, हम ईश्वर के महान स्मरण के माध्यम से उनकी संतानों में से कुछ को दूसरों की अपेक्षा उन्नत करते हैं...

नगर के कुछ लोगों ने यह घोषित किया है किः 'हम ईश्वर के सहायक हैं', परन्तु जब यह 'स्मरण' उनके समक्ष अचानक आ गया, तो उन्होंने हमारी सहायता करने से मुँह मोड़ लिया। वस्तुतः ईश्वर मेरा प्रभु है और तुम्हारा सच्चा स्वामी है, अतः उसकी उपासना करो, क्योंकि तुम्हारे प्रभु की दृष्टि में अली (बाब) का यह मार्ग[13] सीधे मार्ग के अतिरिक्त अन्य दूसरा नहीं। अध्याय 3

हमने सभी लोगों के लिये उनकी स्वयं की भाषा[14] में यह ग्रंथ प्रकट किया है। वस्तुतः हमने यह ग्रंथ अपने 'स्मरण' की भाषा में प्रकट किया है और सत्य ही, यह एक अत्युत्तम भाषा है। वस्तुतः वह ईश्वर की ओर से आने वाला शाश्वत सत्य है तथा मातृग्रंथ में दिये गये दिव्य न्याय के अनुसार, अरबी भाषा के लेखकों में वह सर्वाधिक विशिष्ट है तथा अपने उद्गार में सर्वाधिक प्रशंसित है। वह सत्य ही सर्वोच्च तिलिस्म है तथा जैसा कि मातृग्रंथ में बताया गया है, अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न है...

हे नगर के लोगो ! तुमने अपने स्वामी में अविश्वास किया है। यदि तुम ईश्वर के धर्मप्रचारक एवं पैगम्बरों में अन्तिम, मुहम्मद के प्रति सचमुच निष्ठावान हो और यदि तुम उनके ग्रंथ, कुरआन - जो कि त्रुटिरहित है - का अनुसरण करते हो, तो उसके जैसा ही एक ग्रंथ यहाँ है - यह ग्रंथ, जिसे हमने, सत्य ही तथा ईश्वर की अनुमति से, अपने सेवक पर प्रकट किया है। यदि तुम उसमें विश्वास करने में विफल होते हो, तो ईश्वर की दृष्टि में, मुहम्मद और उनके ग्रंथ में, जो कि पूर्व में प्रकट किया गया था - तुम्हारी आस्था सचमुच झूठी मानी जायेगी।

यदि तुम उसे अस्वीकार करते हो, तो तुम्हारे द्वारा मुहम्मद और उनके ग्रंथ को अस्वीकार किये जाने की सच्चाई, सत्यतः एवं पूर्ण निश्चितता के साथ, तुम्हारे समक्ष सुस्पष्ट हो जायेगी। अध्याय 4

ईश्वर से डरो और उसके सर्वमहान स्मरण के विषय में एक शब्द भी न कहो, सिवाय उसके जो ईश्वर द्वारा आदेशित है, क्योंकि हमने प्रत्येक अवतार और उसके अनुयायियों के साथ उसके बारे में एक पृथक संविदा स्थापित की है। वास्तव में, हमने किसी भी अवतार को इस बाध्यकारी संविदा के बगैर नहीं भेजा और हम, सत्य ही किसी के बारे में तब ही न्याय पारित करते हैं जब उसकी संविदा, जो सर्वोच्च द्वार है, स्थापित की जा चुकी हो। शीघ्र ही निर्धारित समय पर तुम्हारी आँखों से परदा उठा दिया जायेगा। तब तुम ईश्वर के सर्वोच्च 'स्मरण' को, अनावृत एवं स्पष्ट देखोगे। अध्याय 5

क्या मानव यह सोचते हैं कि हम उन से बहुत दूर हैं ? नहीं जिस दिन हम मृत्यु[15] की टीस से उनका सामना करवायेंगे, तब पुनरूत्थान के मौदान में देखेंगे कि दया का स्वामी और उसका स्मरण कितने निकट थे। तब वे चिल्ला उठेंगे: 'काश हमने बाब के पथ का अनुसरण किया होता! काश हमने केवल उनमें ही शरण ली होती, न कि दुष्टता एवं भ्रम के लोगों का साथ दिया होता! क्योंकि वस्तुतः ईश्वर का स्मरण हमारे समक्ष[16] हमारे पीछे एवं चहुँओर प्रकट हुआ, फिर भी यह सच है कि हम एक परदे के द्वारा उससे दूर रहे।' अध्याय 7

यह न कहो, 'वह ईश्वर की ओर से वास्तव में बात कैसे कर सकता है, जबकि उसकी आयु पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं है ?' मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो। मैं आसमानों और धरती के उस स्वामी की सौगंध खाता हूँ: वस्तुतः मैं ईश्वर का एक सेवक हूँ। मुझे उसकी उपस्थिति से अकाट्य प्रमाणों का वाहक बना कर भेजा गया है जो ईश्वर का चिरप्रतीक्षित सार है। मेरा यह ग्रंथ तुम्हारी आँखों के सामने है जैसाकि ईश्वर के समक्ष मातृग्रंथ में अंकित किया गया है, ईश्वर ने मुझे वास्तव में आशीर्वादित किया है, चाहे मैं जहाँ कहीं भी रहूँ तथा जब तक मैं धरती पर तुम्हारे बीच जीवनयापन करूँ, तब तक प्रार्थना एवं धैर्य का पालन करने का मुझे आदेश दिया गया है। अध्याय 9

महिमामण्डित है वह जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अपनी मुठ्ठी में वह अधिकार का स्रोत धारण किये हुए है और वस्तुतः ईश्वर शक्ति सभी वस्तुओं पर है। हमने

आदेशित किया है कि प्रत्येक को जिसे हम लम्बी आयु देते हैं उसका सत्य ही क्षय होगा[17] तथा प्रत्येक कठिनाई के बाद आसानी प्राप्त होगी[18] ताकि मानव कदाचित, 'ईश्वर के द्वारा' उसके रूप को पहचान सकें जो शाश्वत सत्य है और वस्तुतः ईश्वर उनका साक्ष्य बनकर खड़ा होगा जिन्होंने विश्वास किया है। अध्याय 13

हे ईश्वर के सेवकों ! वस्तुतः तुम दुःखी न होना यदि तुमने उससे जो मांगा है उसका उत्तर नहीं मिला, क्योंकि ईश्वर द्वारा उसे मौन रहने का आदेश दिया गया है, ऐसा मौन जो सत्य ही प्रशंसनीय है। हमने वास्तव में तुम्हारे स्वप्न में तुम्हें अपने धर्म की शक्ति की एक झलक देखने के योग्य बनाया है, परन्तु यदि तुम इस छिपे हुए रहस्य से उन्हें अवगत कराओगे, तो वे इस सत्य के विषय में आपस में झगड़ा करेंगे। वस्तुतः तुम्हारा स्वामी, सत्य का वह ईश्वर जो हृदयों की गुप्त बातों तक को जानता है[19]...

हे दुनिया के लोगो ! उस एक सत्य ईश्वर के पथ में तुमने कुछ भी अर्पित किया है, उसे तुम वास्तव में उस सर्वरक्षक ईश्वर द्वारा संरक्षित उसके पावन द्वार पर अश्रय पाओगे। हे धरती के लोगो ! इस देदीप्यमान प्रकाश के प्रति निष्ठा रखो, जिससे ईश्वर ने कृपापूर्वक मुझे, उस भ्रमातीत सत्य की शक्ति द्वारा विभूषित किया है, और दुष्ट के पदचिह्नों पर न चलो[20] क्योंकि वह तुम्हें ईश्वर, तुम्हारे स्वामी में अविश्वास करने के लिये प्रेरित करता है और वस्तुतः ईश्वर स्वयं में अविश्वास क्षमा नहीं करता, यद्यपि वह अन्य पापों के लिये जिसे चाहे क्षमा कर देगा[21] सत्य ही, उसका ज्ञान सभी चीजों को समाये हुए है... अध्याय 17

हे पूरब और पश्चिम के लोगो ! तुम सच्चे युसूफ के धर्म के विषय में ईश्वर से भय करो और अपने द्वारा निर्धारित तुच्छ मान्यताओं[22] के बदले अथवा अपनी भौतिक धन-सम्पत्ति के लिये उसका सौदा न करो, ताकि तुम सत्य ही उनकी तरह ईश्वर के प्रशंसापात्र बन सको जिन्हें उन पवित्र लोगों में गिना जाता है जो इस "द्वार" के निकट खड़े रहते हैं। वस्तुतः ईश्वर ने उन्हें अपनी कृपा से वंचित कर दिया है जिन्होंने हमारे पूर्वज हुसैन को तफ (करबला) की भूमि पर एकाकी और परित्यक्त अवस्था में शहीद किया। मुवावयाह के पुत्र यज़ीद ने, अपनी भ्रष्ट इच्छाओं के कारण, एक तुच्छ मान्यता के लिये तथा उसकी सम्पत्ति से एक नगण्य रकम प्राप्त करने के लिये उस सच्चे यूसुफ के शीर्ष का सौदा अति दुष्ट लोगों के साथ कर लिया। वस्तुतः इस घोर अपराध से उन्होंने ईश्वर का परित्याग किया है। शीघ्र

ही, अपने प्रत्यागमन के समय ईश्वर उन पर अपना प्रतिशोध प्रकट करेगा और उस आने वाले लोक में उसने सत्य ही उनके लिये एक कठोर यातना नियत की है। अध्याय 21

हे कुर्रातुल ऐन![23] वस्तुतः इस प्रकटीकरण में, जो समस्त सृजित वस्तुओं में सचमुच अद्वितीय है, हमने 'तुम्हारे' हृदय को विशालता प्रदान की है और बाब के प्रकटीकरण के माध्यम से तुम्हारे नाम को उन्नत किया है, ताकि मानव हमारी उत्कृष्ट शक्ति से अवगत हो जायें और समझ जायें कि वह ईश्वर, सभी मानवों की प्रशंसा से परे, पावन है। वस्तुतः वह समस्त सृष्टि से स्वतंत्र है। अध्याय 23

इस "द्वार"[24] पर पंक्ति दर पंक्ति तैनात देवदूत एवं आत्मायें ईश्वर की अनुमति से उतरती हैं तथा दूर तक खींची हुई रेखा में इस केन्द्रबिन्दु के इर्द-गिर्द परिक्रमा करती है। हे कुर्रातुल ऐन, अभिवादन के साथ उनका स्वागत करो, क्योंकि वास्तव में भोर हो चुकी है; फिर निष्ठावानों के समूह के समक्ष यह घोषित करो: क्या मातृग्रंथ में प्रातःकाल के उदय होने की भविष्यवाणी नहीं की गयी है ?[25]...

हे कुर्रातुल ऐन ! तुम अपने धर्म में उत्सुकतापूर्वक ईश्वर की ओर मुड़ो, क्योंकि दुनिया के लोगों के बीच अन्याय बढ़ गया है और यदि ईश्वर की कृपा की वर्षा न होती और उन्हें तुम्हारी दया प्राप्त न होती तो एक आत्मा को भी पवित्र बनाना किसी के लिये अनन्तता तक सम्भव नहीं।[26] हे कुर्रातुल ऐन ! तुम्हारे लिये और उनके लिये जो तुम्हारे धर्म का अनुसरण करते हैं, इस भौतिक जीवन और इसके सुख से कहीं अधिक लाभदायक है वह आने वाला जीवन। विधाता के विधान के अनुसार जो पूर्वनिर्धारित किया गया है, वह यही है...

हे कुर्रातुल ऐन ! कहोः वस्तुतः मैं 'ईश्वर का द्वार हूँ' और उस परम सत्य ईश्वर की अनुमति से, मैं उसके प्रकटीकरण के पारदर्शक पवित्र जल का भाग तुम्हें प्रदान करता हूँ, जो पावन पर्वत पर स्थित उस अक्षय स्रोत से फूट कर निकल रहा है और वे जो उस एक सत्य ईश्वर को उत्सुकतापूर्वक प्राप्त करने के प्रयास करते हैं, उन्हें इसके पश्चात, इस "द्वार" को प्राप्त करने का प्रयास करने दो।[27] वस्तुतः ईश्वर सभी वस्तुओं से प्रभावशाली है...

हे धरती के लोगो ! इस अरबी युवा, जिसे ईश्वर ने स्वयं को प्रकट करने के लिये चुना है, के द्वारा उद्घाटित ईश्वर की पावन वाणी पर ध्यान दो। वह उस एक सत्य के अतिरिक्त और

कोई नहीं, जिसे ईश्वर ने झाड़ी के मध्य से अपना उद्देश्य सौंपा है। हे कुर्रातुल ऐन ! उस सर्वप्रतापशाली के रहस्यों में से तुम जो चाहो उजागर करो, क्योंकि उस अतुलनीय स्वामी के आदेश से, यह महासागर ऊँचाइयों[28] तक उमड़ रहा है। अध्याय 24

क्या तुम अपनी स्वार्थपूर्ण कल्पनाओं के अनुसार उसके विरूद्ध दुष्टतापूर्वक षड्यन्त्र रच रहे हो जो ईश्वर का 'सर्वमहान स्मरण है' ? ईश्वर के न्याय की सौगंध, आकाश और धरती पर और जो कुछ भी इनके मध्य हैं, वे सभी, मेरी दृष्टि में एक मकड़ी के जाल के समान है[29] और वस्तुतः ईश्वर सभी वस्तुओं का साक्षी है। वास्तव में, सिवाय स्वयं के वे अन्य किसी के विरूद्ध षड्यन्त्र नहीं रचते ईश्वर ने सत्य ही, इस 'स्मरण' को धरती और आकाश के सभी निवासियों से स्वतंत्र बनने में समर्थ बनाया है। अध्याय 25

हे धरती के लोगो ! मेरी अनुपस्थिति में मैंने तुम्हारे समक्ष 'द्वारों' को भेजा। फिर भी, मुठ्ठीभर अनुयायियों के अतिरिक्त किसी ने भी उनकी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। पूर्व में मैंने तुम्हारे समक्ष अहमद को भेजा और हाल ही में काज़िम को, परन्तु तुम में से पावन-हृदय रखने वालों के अतिरिक्त, अन्य किसी ने उनका अनुसरण नहीं किया। तुम्हें क्या हो गया है, हे पावन पुस्तक के लोगो ? क्या तुम उस युगप्राचीन, एक सत्य ईश्वर से नहीं डरोगे, उससे जो तुम्हारा स्वामी है ? ...हे तुम जो जो ईश्वर में विश्वास रखने का दावा करते हो ! मैं, उसके द्वारा जो शाश्वत सत्य है, अनुरोध करता हूँ, क्या तुमने इनमें से किसी भी 'द्वार' के नियमों में ऐसा कुछ भी पाया है जो पावन ग्रंथ में दिये गये ईश्वर के आदेशों के परस्पर विरोध में हो ? क्या तुम्हारी अधार्मिकता के कारण तुम्हारे ज्ञान ने तुम्हें बहका दिया है ? तो सावाधान रहो, क्योंकि वस्तुतः शाश्वत सत्य का स्वामी, तुम्हारा ईश्वर, तुम्हारे साथ है और सत्य ही तुम्हें देख रहा है... अध्याय 27

हे सर्वमहान स्मरण के बंधु-बाँधव ! पावनता का यह वृक्ष दासता के तेल से किरमिजी रंग में रंग गया है और वस्तुतः तुम्हारी स्वयं की मिट्टी से प्रज्वलित झाड़ी के मध्य से फूट निकला है, फिर भी तुम इससे कुछ भी नहीं समझते, न तो उसके सच्चे दिव्य गुणों को, न भू-लोक के उसके जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को, न ही उसके शक्तिशाली एवं निष्कलंक चालचलन को। अपनी स्वयं की कल्पनाओं से प्रेरित, तुम उसे परम सत्य से अनजान समझते हो, जबकि ईश्वर की दृष्टि में वह परम सत्य की शक्ति से विभूषित स्वयं

प्रतिज्ञापित के अलावा कोई और नहीं और वस्तुतः, जैसा कि मातृग्रंथ में आदेशित है, प्रज्वलित झाड़ी के मध्य में वही उत्तर देने वाला माना जाता है...

हे कुर्रातुल ऐन ! अपने बंधु-बाँधवों के बीच 'सर्वोच्च शब्द' के आह्वान को पहुँचाओ, उन्हें 'सर्वमहान अग्नि' के प्रति सावधान करो और उनके समक्ष यह आनन्दमय शुभसंदेश घोषित करो कि इस शक्तिशाली संविदा के बाद उसकी सुप्रसन्नता के स्वर्ग में, पावनता के सिंहासन के निकट, ईश्वर के साथ अनन्त मिलन होगा। वस्तुतः सृष्टि का स्वामी, ईश्वर सभी वस्तुओं पर शक्तिशाली है।

हे तुम जो उस 'स्मरण की माता' हो ! ईश्वर की शान्ति एवं अभिवादन तुम पर रहे ! तुमने वास्तव में उसके लिये धैर्यपूर्वक सहा है जो ईश्वर का उदात्त व्यक्तित्व है। फिर अपने उस पुत्र के पद को पहचानो, जो ईश्वर के शक्तिशाली शब्द के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। उसने वस्तुतः तुम्हारी समाधि तथा न्याय के दिवस, दोनों में, तुम्हारे लिये जवाबदेह होने की शपथ ली है, जबकि, ईश्वर की परिरक्षित पाती में, उसके 'स्मरण' की लेखनी द्वारा तुम 'निष्ठावानों की माता' के रूप में अमर हो चुकी हो। अध्याय 28

हे कुर्रातुलऐन ! तुम इस धर्म में अपने हाथों को खोल कर न फैलाओ, क्योंकि उस रहस्य के कारण लोग स्वयं को विस्मय की अवस्था में पायेंगे, और मैं उस एक सत्य सर्वशक्तिशाली ईश्वर की सौगंध खाता हूँ कि इस युग के पश्चात, तुम्हारे लिये एक मौका और भी है।

और जब वह निर्धारित समय आ चुका होगा, तो उस सर्वबुद्धिमान ईश्वर की अनुमति से, उस सर्वोच्च एवं रहस्यवादी पर्वत की उँचाइयों से तुम अपने अभेद्य रहस्य की एक हल्की सी, एक अत्यन्त सूक्ष्म झलक प्रकट करना, ताकि जिन्होंने सिनाई की भव्य दीप्ति को पहचाना है वे तुम्हारे प्रकटीकरण को आवृत करने वाले क़िरमिज़ी प्रकाश की चमक की एक झलक प्राप्त करते ही मूर्छित हो कर प्राण त्याग दें। और सत्य ही, ईश्वर तुम्हारा अचूक रक्षक है। अध्याय 28

हे फारस के लोगो ! क्या तुम इस यशस्वी सम्मान से संतुष्ट नहीं हो जो ईश्वर के सर्वोच्च 'स्मरण' ने तुम्हें प्रदान किया है ? वस्तुतः इस शक्तिाशाली शब्द के माध्यम से ईश्वर द्वारा तुम्हें विशेष रूप से अनुग्रहित किया गया है फिर उसकी उपस्थिति के शरण-स्थल से स्वयं को दूर मत हटाओ, क्योंकि, ईश्वर के न्याय की सौगंध, वह ईश्वर से आने वाले परम सत्य

के अलावा अन्य कोई नहीं है; जैसा कि मातृग्रंथ में आदेशित है, वह सर्वोच्च है एवं समस्त विवेक का स्रोत है...

हे धरती के लोगो ! तुम उस सर्वोच्च ईश्वर की डोर को कसकर थाम लो, जो इस अरबी युवा के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है, हमारा 'स्मरण', वह जो अग्नि के महासागर के मध्य में हिम के बिन्दु में छिपा हुआ है। अध्याय 29

हे धरती के लोगो ! उस एकसत्य ईश्वर की न्याय की सौगंध, मैं बहा की आत्मा से उत्पन्न हुई, सौम्य एवं जीवंत माणिक के अम्बार से तराशे हुए भवन में निवास कर रही स्वर्ग की अप्सरा हूँ और इस शक्तिशाली स्वर्ग में मैंने इस 'अरबी युवा' के गुणों की प्रशंसा के सिवाय 'ईश्वर के स्मरण' की घोषणा करता है, कदापि अन्य कुछ नहीं देखा। वस्तुतः उस सर्वदयालु, तुम्हारे स्वामी के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अतः तुम 'उसके' पद का गुणगान करो, क्योंकि, देखो, उस मण्डप में जहाँ 'उसकी' स्तुति गायी जाती है, 'वह' ईश्वर की प्रशंसा के मूर्तरूप में सर्वोच्च स्वर्ग के अन्तर्तम हृदय में स्थित है।

मैं 'उसकी वाणी' तब सुनता हूँ जब 'वह' उसका महिमागान करता है जो सदाजीवी, युगप्राचीन है और तब, जब वह उसके सर्वमहान् नाम के रहस्य की चर्चा करता है और जब वह ईश्वर की महानता की वन्दना करता है, उसकी सुन्दरता को देखने की उत्कंठा में समस्त स्वर्ग विलाप करता है और जब वह ईश्वर की प्रशंसा और महिमागान के शब्द गाता है, तो समस्त स्वर्ग, किसी तुषाराक्षादित पर्वत के हृदय में कैद बर्फ की भाँति गतिहीन हो जाता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो मैंने उसे एक सीधे मध्य मार्ग पर चलते देखा हो, जिसमें प्रत्येक स्वर्ग उसका अपना स्वर्ग था, प्रत्येक आकाश उसका अपना आकाश, जबकि समस्त पृथ्वी और उसमें जो कुछ भी है, उसके सेवकों की ऊँगली में एक अँगूठी मात्र प्रतीत हो रहा था। यशस्वी हो वह ईश्वर, उसका सृजनकर्ता, अनन्त प्रभुसत्ता का स्वामी। वस्तुतः वह ईश्वर का एक सेवक मात्र है, तुम्हारे स्वामी, उस परम सत्य ईश्वर के अवशिष्ट का द्वार है, अन्य कोई नहीं। अध्याय 29

हे ईश्वर के सर्वोच्च शब्द ! भय न कर, दुःखी न हो क्योंकि वस्तुतः जिन्होंने तेरे आह्वान का उत्तर दिया है, चाहे वे स्त्री हों या पुरूष, उन्हें हमने पापों के क्षमादान का आश्वासन

दिया है, जिसका ज्ञान उस परम प्रिय की उपस्थिति में है और जो तेरी इच्छा के अनुरूप है। वस्तुतः उसका ज्ञान सभी वस्तुओं को अपने में समाविष्ट किये हुए है। मेरे जीवन की सौगंध तू अपना मुखड़ा मेरी ओर कर और आशंकित न हो। वस्तुतः दैवी देवदूतों के बीच तू उच्च स्थान पर है सत्य ही, प्रज्वलित झाड़ी के मध्य में सृष्टि की पाती पर तेरा छिपा हुआ रहस्य अंकित किया गया है। शीघ्र ही ईश्वर तुझे सभी मानवों पर शासन करने का अधिकार प्रदान करेगा, क्योंकि उसका शासन समस्त सृष्टि में श्रेष्ठ है। अध्याय 31

हे शिया अनुयायियों के समूह ! तुम ईश्वर से और हमारे धर्म से डरो जो उसके विषय में है जो 'ईश्वर का सर्वमहान स्मरण' है। क्योंकि, इसकी अग्नि महान है जैसाकि मातृग्रंथ में आदेशित है। अध्याय 11

प्रातः और संध्या काल में सुविधानुसार कुरआन का सस्वर पाठ करो, तथा उस शाश्वत ईश्वर की अनुमति से, इस पक्षी के मधुर स्वरांकन में, जो आकाश में अपना राग गा रहा है, इस ग्रंथ के श्लोकों को गाओ। अध्याय 12

हे पश्चिम के लोगो, अपने नगरों से बाहर आओ और उस दिवस से पहले ईश्वर की सहायता करो जब बादलों की परछाई में, दया का वह स्वामी तुम तक नीचे आयेगा, परिक्रमा करते हुए दवेदूतों[30] के साथ जो उसकी प्रशंसा को उदात्त करते हैं एवं उनके लिये क्षमादान की याचना करते हैं जिन्होंने हमारे चिह्नों में सच्चा विश्वास किया है। वस्तुतः उसका आदेश पारित हो चुका है और जैसा कि मातृग्रंथ में दिया गया है, ईश्वर का समादेश, वास्तव में प्रकट किया जा चुका है...

ईश्वर के एक तथा अविभाज्य धर्म में भेदभाव से मुक्त, सच्चे बन्धुओं जैसे बन जाओ, क्योंकि, वस्तुतः ईश्वर चाहते हैं कि इस धर्म में तुम्हारे हृदय, तुम्हारे बन्धुओं के लिये दर्पण बन जायें, ताकि तुम्हें उनमें अपना ही प्रतिबिम्ब दिखायी दे और उन्हें, तुम में अपना। यह उस सर्वशक्तिशाली ईश्वर का सच्चा पथ है और वह वास्तव में तुम्हारे कर्मों से अभिज्ञ है। अध्याय 46

हे धरती के लोगो ! मेरे आह्वान की ओर ध्यान दो जो इस पावन वृक्ष के परिवेश से गूँज रहा है - ऐसा वृक्ष जो पूर्ववर्ती अग्नि से प्रज्वलित किया गया है: उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है; वह उदात्त है, सर्वबुद्धिमान है। हे तुम जो उस दयालु के सेवक हो ! तुम में से प्रत्येक इस 'द्वार' के माध्यम से प्रवेश करो और उस दुष्ट के पदचिह्नों पर न चलो क्योंकि

वह तुम्हें अपवित्रता के रास्तों पर चलने के लिये प्रेरित करता है; सत्य ही, वह तुम्हारा घोषित शत्रु है।[31] अध्याय 51

तुम धैर्य रखो, हे कुर्रातुलऐन, क्योंकि ईश्वर ने वास्तव में सभी देशों में और इनमें निवास करने वाले लोगों पर तुम्हारी प्रभुसत्ता स्थापित करने की शपथ ली है। वह ईश्वर है और वस्तुतः वह सभी वस्तुओं पर शक्तिसम्पन्न है। अध्याय 53

मेरी महिमा की सौगंध ! शक्ति के अपने हाथों से मैं अविश्वासियों को प्रतिशोध का स्वाद चखने पर बाध्य करूँगा जिसका ज्ञान मेरे अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं है और निष्ठावानों पर कस्तूरी की सुगंधयुक्त ऐसे झोंके प्रवाहित करूंगा जो मैंने अपने राजसिंहासन के अन्ततम हृदय में अंर्ततम किये हैं और वस्तुतः ईश्वर का ज्ञान सभी वस्तुओं को अपने में समाहित किये हुए है।

हे प्रकाश के समूह ! ईश्वर के न्याय की सौगंध, हम स्वार्थपूर्ण इच्छा से नहीं बोलते, न ही इस ग्रंथ का एक भी अक्षर उस परम सत्य ईश्वर की अनुमति के बिना प्रकट किया गया है। ईश्वर से डरो और उसके धर्म के सम्बन्ध में कोई शंका न करो, क्योंकि, वस्तुतः इस 'द्वार' का रहस्य उसके लेख के रहस्यवादी कथनों में छिपा हुआ है और उस दृश्य एवं अदृश्य के स्वामी, ईश्वर के हाथ से गोपनीयता के अभेद्य परदे के परे लिखा जा चुका है।

वस्तुतः ईश्वर ने इस 'द्वार' के चतुर्दिक सभी ओर दिव्य अमृत के महासागर सृजित किये हैं, जो अस्तित्व के सार से किरमिज़ी रंगत पा चुके हैं तथा वांछित फल की प्रेरक शक्ति से जीवन प्राप्त कर चुके हैं; और उनके लिये ईश्वर ने कोमल, किरमिज़ी माणिक्य नौकाओं का प्रबन्ध किया है जिसमें उस सर्वोच्च ईश्वर की अनुमति से, बहा के लोगों के अतिरिक्त अन्य कोई सवार नहीं होगा; और वस्तुतः वह सर्वप्रतापशाली सर्वबुद्धिमान है। अध्याय 57

उस स्वामी ने, सत्य ही, मुझे प्रेरणा दी हैः वस्तुतः, मैं ईश्वर हूँ, वह जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, और मैं वास्तव में युगप्राचीन हूँ...

हे दिव्य साम्राज्य के लोगो ! ईश्वर के न्याय की सौगंध, यदि तुम इस रेखा पर, जो दो रेखाओं के बीच सीधी खड़ी है, दृढ़ रहते हो, तो तुम सत्य ही, इस अद्‌भुत प्रकटीकरण के निर्झर स्रोत से, उसके 'स्मरण' के हाथ से अर्पित किया जाने वाला जीवंत जल ग्रहण करोगे...

मैं तुम्हारे सच्चे स्वामी की सौगंध खाता हूँ, उसकी जो आकाश और धरती का स्वामी है, कि उसके 'स्मरण' से सम्बद्ध दिव्य प्रतिज्ञा परम सत्य के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं और जैसा कि मातृग्रंथ में आदेशित है, यह पूरी हो कर रहेगी।

कहोः हे धरती के लोगो ! यदि तुम, मेरे लेखों जैसा एक भी अक्षर प्रस्तुत करने के लिये एकजुट हो जाओ, तो तुम ऐसा कदापि न कर सकोगे[32], और वस्तुतः ईश्वर सभी वस्तुओं का ज्ञान रखता है...,

कहो हे कुर्रातुल ऐन, वस्तुतः चन्द्रमा अस्त हो चुका है; वस्तुतः रात्रि भी समेट ली गई है; वस्तुतः प्रभात आलोकित हो उठा है[33], वस्तुतः तुम्हारे सच्चे स्वामी, ईश्वर का आदेश पूरा हो चुका है...

हे महान एवं सर्वशक्तिमान स्वामी, इस प्रकटीकरण की उद्घोषणा करने के लिये, अपने सामर्थ्य की दिव्य शक्ति से तूने मुझे परम शून्य से उत्पन्न एवं प्रकट किया है। मैंने तेरे अतिरिक्त अन्य किसी को अपना विश्वासी नहीं बनाया है; मैंने तेरी इच्छा के अतिरिक्त किसी अन्य इच्छा को नहीं थामा है। तू, सत्य ही, सर्वोपरि परिपूरक है और तेरे पीछे वह सत्य ईश्वर खड़ा है, वह जो सभी वस्तुओं से उच्च है। वह सर्वोच्च, सर्वशक्तिशाली, सम्पोषक ईश्वर, मेरे लिये वास्तव में यथेष्ट है। अध्याय 58

हे तुम जो 'ईश्वर के अवशिष्ट' हो ! मैंने तुम्हारे लिये स्वयं को पूर्णतया त्याग दिया है; मैंने तुम्हारे लिये दुर्वचन स्वीकार किये हैं, और तुम्हारे प्रेम के पथ में, शहादत के अतिरिक्त अन्य किसी चीज़ की लालसा नहीं की। वह उच्च रक्षक, युगप्राचीन ईश्वर मेरा यथेष्ट साक्षी है।

हे कुर्रातुल-ऐन ! इस महत्वपूर्ण आह्वान में तुम्हारे द्वारा उच्चरित किये गये शब्दों ने मुझे अत्यंत दुःखी किया है। फिर भी, अटल निर्णय, उस ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी के हाथ में नहीं है तथा उसके अतिरिक्त अन्य कोई आदेश जारी नहीं करता। मेरे जीवन की सौगंध, तुम, ईश्वर की दृष्टि में, सृष्टि में परम प्रियतम हो। वस्तुतः, ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी में शक्ति नहीं है, और मेरा यथेष्ट साक्षी तुम्हारा स्वामी है, जो सत्यतः, सर्वशक्तिशाली प्रतिशोधी है। अध्याय 58

हे धरती के लोगो ! ईश्वर के न्याय की सौगंध, उस परम सत्य की शक्ति से, इस ग्रंथ ने, उसके विषय में जो सर्वोच्च प्रमाण और 'अपेक्षित क़ाइम' है, ईश्वर के शक्तिशाली शब्द धरती एवं आकाश में व्याप्त कर दिये हैं, और वस्तुतः ईश्वर को सभी वस्तुओं का ज्ञान है। इस दिव्य प्रेरणा प्राप्त ग्रंथ ने, उन सभी के लिये जो पूरब और पश्चिम में हैं, उसका प्रमाण दृढ़तापूर्वक स्थापित कर दिया है, अतः सावधान रहो, ताकि ईश्वर के विषय में, तुम सत्य के अतिरिक्त अन्य कुछ न कहो, क्योंकि मैं तुम्हारे स्वामी की सौगंध खाता हूँ कि मेरे इस सर्वोच्च प्रमाण का साक्ष्य सभी वस्तुएं देती हैं...

हे ईश्वर के सेवकों ! तुम धैर्य धरो, क्योंकि, इस सामर्थ्यशाली 'शब्द' की शक्ति से, वह जो परम सत्य है, तुम्हारे बीच अचानक प्रकट होगा, और तब तुम, प्रत्यक्ष सत्य से हत्बुद्धि हो जाओगे और इसे रोकने के लिये तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं होगी[34]; और वस्तुतः मैं सभी मानवजाति पर साक्ष्य हूँ। अध्याय 59

वस्तुतः वे जो इन अद्भुत, दिव्य श्लोकों का उपहास करते हैं, मात्र स्वयं ही को उपहास का पात्र बनाते हैं, और सत्य ही, हम उनके अन्याय[35] के बढ़ाने में उनकी सहायता करते हैं। वस्तुतः ईश्वर का ज्ञान सभी सृजित वस्तुओं से श्रेष्ठ है...

सत्य ही, अविश्वासी ईश्वर की उस 'परम् सत्ता के स्मरण' से अलग करने का प्रयास करते हैं, परन्तु ईश्वर ने अपने 'स्मरण'[36] के माध्यम से अपने 'प्रकाश'[37] को पूर्णता प्रदान करने का दृढ़निश्चय किया है और वह वास्तव में सभी वस्तुओं पर शक्तिसम्पन्न है...

वस्तुतः मसीह हमारा 'शब्द' है जिसे हमने मेरी[38] को प्रदान किया था; और किसी को वह न कहने दो जिसे ईसाई 'तीन में से तीसरा' कहते हैं,[39] क्योंकि यह उस 'स्मरण' की झूठी निन्दा करने के बराबर होगा जो मातृग्रंथ के आदेशानुसार, सर्वोच्च अधिकार से विभूषित है। सत्यतः ईश्वर, मात्र एक ईश्वर है और उसके अतिरिक्त किसी अन्य का होना, उसकी महिमा से दूर है। पुनरूथान दिवस में, जो उसे प्राप्त करेंगे, मात्र उसके सेवक हैं और ईश्वर, सत्य ही, पर्याप्त रक्षक है। वस्तुतः, मैं ईश्वर और उसके 'शब्द' का सेवक होने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं, एवं उस सर्वोच्च ईश्वर के समक्ष प्रार्थना में माथा टेकने में प्रथम व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं, और सत्यतः ईश्वर सभी वस्तुओं का साक्षी है। अध्याय 61

हे कुरआन के लोगों ! जब तक तुम ईश्वर के स्मरण और इस ग्रंथ के समक्ष झुक नहीं जाते, तुम शून्य के समान हो। यदि तुम ईश्वर के धर्म का पालन करते हो, तो हम तुम्हें तुम्हारे पापों के लिये क्षमा कर देंगे और यदि तुम हमारे आदेश से मुँह मोड़ लेते हो, तो हम सत्य ही, अपने ग्रंथ में तुम्हारी आत्माओं के लिए सर्वमहान अग्नि का दण्ड निर्धारित करेंगे। वस्तुतः हम, मनुष्यों के साथ, लेशमात्र भी अन्यायपूर्ण बर्ताव नहीं करते। अध्याय 67

हे धरती के लोगो ! वस्तुतः इस निर्भ्रान्त ग्रंथ से विभूषित, ईश्वर का देदीप्यमान प्रकाश तुम्हारे बीच प्रकट हुआ है, ताकि शान्ति के पथ पर तुम्हारा सही मार्गदर्शन हो सके, तथा ईश्वर की अनुमति से, तुम अंधकार से बाहर निकल कर प्रकाश में तथा इस दूर तक फैले हुए सत्य मार्ग[40] में प्रवेश कर सको...

ईश्वर ने, मात्र शून्यता से एवं अपने आदेश की शक्ति के माध्यम से, आकाश और धरती और जो कुछ भी उसके बीच है, का सृजन किया है। वह अपनी शाश्वत एकता में एकमात्र एवं अतुलनीय है और उसके पावन सार के साथ बराबरी करने वाला कोई नहीं, न ही, उसके स्वयं के अतिरिक्त कोई आत्मा है, जो उसे उचित रूप से समझ सके...

हे धरती के लोगों ! वस्तुतः 'उसका स्मरण', एक ऐसे अन्तराल के पश्चात ईश्वर से तुम तक आया है, जिसके दौरान कोई संदेशवाहक नहीं थे[41], ताकि उस एक सत्य ईश्वर के दिवस की प्रत्याशा में वह तुम्हें अपवित्रता से शुद्ध एवं पवित्र कर सके; अतः सम्पूर्ण हृदय से, उससे दिव्य आशीर्वादों की याचना करो, क्योंकि, सत्य ही, हमने, धरती के सभी निवासियों के लिये उसे साक्षी एवं प्रज्ञा का स्रोत बनने के लिये चुना है...

हे कुर्रातुल-ऐन ! उस दयालु स्वामी की कृपा के चिह्न स्वरूप, तुम पर जो भेजा गया है उसे उद्घोषित करो, क्योंकि यदि तुम यह नहीं करोगी, तो लोगों को हमारे रहस्य का ज्ञान कभी नहीं होगा, मनुष्य को[42] सृजित करने का ईश्वर का उद्देश्य है कि वह उसे जान सके। सत्यतः ईश्वर को सभी वस्तुओं का ज्ञान है और वह समस्त मानवजाति की आवश्यकता के परे, स्वावलम्बी है। अध्याय 62

जब भी निष्ठावान इस ग्रंथ के श्लोकों को उच्चरित होते हुए सुनेंगे, उनकी आँखें आँसू से छलक जायेंगी तथा 'सर्वमहान स्मरण' से उनके हृदय गहन रूप से प्रभावित हो उठेंगे क्योंकि वे

सर्वस्तुत्य ईश्वर से प्रेम करते हैं। वह ईश्वर है, सर्वज्ञाता, शाश्वत है। वे, वास्तव में उस सर्वोच्च स्वर्ग के निवासी हैं जहाँ वे अनंतता तक निवास करेंगे। वस्तुतः वहाँ उन्हें अन्य कुछ दिखाई नहीं देगा सिवाय उसके जो ईश्वर की ओर से आता है, कोई भी चीज उनकी समझ के दायरे से परे नहीं होगी। वहाँ, स्वर्ग में वे उन अनुयायियों से मिलेंगे जो अपने से उच्चरित 'शान्ति, शान्ति' के शब्दों से उन्हें सम्बोधित करेंगे...

हे निष्ठावानों के समूह ! अपने कानों को मेरी वाणी की ओर, जो ईश्वर के स्मरण द्वारा उद्घोषित की गयी है प्रवृत्त करो। वस्तुतः ईश्वर ने मुझ पर यह प्रकट किया है कि उस स्मरण का वह मार्ग जो मेरे द्वारा स्वीकार किया गया है, सत्यतः ईश्वर का सीधा मार्ग है और जो कोई भी इस सच्चे धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म पर विश्वास प्रकट करता है, वह, जब न्याय के दिवस में अपने कर्मों के हिसाब के लिये बुलाया जायेगा, तो पाएगा कि, जैसा कि इस ग्रंथ में अभिलिखित है, उसे ईश्वर के धर्म से कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ है...

हे राजाओ के समूह, तुम ईश्वर से डरो, कहीं तुम उससे दूर न रह जाओ जो 'उसका स्मरण' है (बाब), जबकि वह सत्य, एक ग्रंथ एवं ईश्वर के चिह्नों सहित तुम्हारे पास आया है, जैसा कि उसकी अद्भुत वाणी द्वारा उच्चारित किया गया था जो 'ईश्वर का स्मरण' है। तुम ईश्वर से कृपा की याचना करो, क्योंकि तुम्हारे द्वारा उसमें विश्वास करने पर ईश्वर ने तुम्हारे लिये एक उद्यान का विधान किया है जिसका विस्तार सम्पूर्ण स्वर्ग के विस्तार जितना है। वहाँ तुम उन उपहारों एवं अनुग्रहों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं पाओगे जो उस सर्वशक्तिशाली ने इस महत्वपूर्ण धर्म के कारण, कृपापूर्वक प्रदान किये हैं जैसा कि मातृग्रंथ में आदेशित है। अध्याय 63

हे ईश्वर की चेतना ! मेरी उस उदारता को याद करो जो मैंने तुम्हें तब प्रदान की थी जब मैंने अपने मंदिर के मध्यतम हृदय में तुमसे संलाप किया था तथा पावन चेतना की शक्ति से तुम्हारी सहायता की थी ताकि तुम, ईश्वर के अतुलनीय मुखारबिंदु के रूप में, मनुष्यों के समक्ष ईश्वर के उन आदेशों को उद्घोषित करो जो दिव्यात्मा के अन्तर में प्रतिष्ठापित हैं।

वस्तुतः ईश्वर ने तुम्हें दिव्य श्लोकों एवं प्रज्ञा से तब प्रेरित किया था जब तुम एक बालक ही थे और तुम्हारे सर्वमहान नाम के प्रभाव के माध्यम से दुनिया के लोगों पर कृपापूर्वक अपना अनुग्रह प्रदान करने की कृपा की थी, क्योंकि मानवों को वास्तव में इस ग्रंथ का अल्पतम ज्ञान भी नहीं है। अध्याय 63

हे धरती के लोगो ! क्या उस एक सत्य ईश्वर में परम आश्रय प्राप्त करने के लिये, इस उदात्त अस्तित्व के अतिरिक्त तुम अन्य कोई द्वार खोजने का प्रयास करोगे ?...

जब ईश्वर ने स्मरण का सृजन किया, तो उसने अपनी इच्छा की बलिवेदी पर उसे सभी सृजित वस्तुओं के समूह भेंट कर दिया। इस पर देवदूतों का समूह उस अद्वितीय, अतुलनीय ईश्वर के प्रति आराधना में झुक गये, जबकि उसके स्मरण के समक्ष झुक जाने से इन्कार करते हुए शैतान अहंकार से भर गया; अतः, ईश्वर के ग्रंथ में उसे उद्धत एवं श्रापित के रूप में पहचाना जाता है।[43] अध्याय 67

उस एक सत्य, जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, कहता हैः सत्यतः, जो कोई भी ईश्वर के 'स्मरण' के स्वर्गारोहण के पश्चात उसके दर्शन करता है, यह ऐसा ही है मानो उसने, अपने शक्तिशाली राजसिंहासन पर विराजमान उस ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया है। वस्तुतः यह उस सर्वोच्च ईश्वर का मार्ग है, जिसका अटल आदेश मातृग्रंथ में दिया गया है.

कहो, हे दुनिया के लोगो ! क्या तुम उन नामों के कारण मुझसे ईश्वर के विषय में बहस करते हो, जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने दुष्टात्मा से प्रेरित होकर ईश्वर के लिये चुने हैं?[44] सत्यतः यह ग्रंथ ईश्वर ने सच्चाई के साथ मुझ तक नीचे भेजा है ताकि तुम्हें ईश्वर के सच्चे नामों को पहचानने की सामर्थ्य दी जा सके, क्योंकि तुम भ्रम में सत्य से दूर भटक चुके हो। वस्तुतः हमने ईश्वर के स्मरण के विषय में, प्रत्येक सृजित वस्तु के अस्तित्व में आने पर उसके साथ एक संविदा की है, और, जैसा कि बाब के हाथ से लिखे गये ग्रंथ में आदेशित है, ईश्वर के बाध्यकारी आदेश को रोकने वाला कोई नहीं होगा। अध्याय 68

बाब की अनुपस्थिति में, लोगों ने एक ऐसी गरजती हुई प्रतिमा स्थापित करके बछड़े की उपकथा का पुनः अभिनय किया, जो मनुष्य के रूप में पशुओं के नाक-नक्श का मूर्त रूप थी.....[45]

लोग जब भी तुमसे निर्धारित समय के बारे में प्रश्न करें, तो कहनाः वस्तुतः इसका ज्ञान केवल ईश्वर, मेरे स्वामी के पास है[46] जो अदृश्य का ज्ञाता है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है - वह जिसने तुम्हें एक ही आत्मा[47] से रचा है और मेरा उस पर कोई नियत्रंण

नहीं जो मुझे लाभान्वित करता है या हानि पहुँचाता है, मात्र जैसी मेरे स्वामी की इच्छा हो।[48] ईश्वर स्वावलम्बी है और वह, मेरा स्वामी, सभी वस्तुओं पर सर्वोच्च रहता है। अध्याय 59

क्या लोगों को यह अनोखा प्रतीत होता है कि हमने एक ऐसे व्यक्ति पर ग्रंथ प्रकट किया है जो उन्हीं में से एक है ताकि उन्हें पवित्र बनाया जा सके एवं उन्हें यह शुभ समाचार दिये जा सके कि उनके स्वामी की उपस्थिति में निश्चित रूप से उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा ? सत्यतः वह सभी वस्तुओं का साक्षी है...

जब अविश्वासियों के समक्ष इस ग्रंथ के श्लोक सुनाये जाते हैं, तो वे कहते हैं: 'हमें कुरआन जैसा ग्रंथ देते हो और उसके श्लोकों में फेर-बदल करते हो।' कहोः 'ईश्वर ने मुझे इसकी अनुमति नहीं दी है कि मैं अपनी इच्छानुसार इनमें फेर-बदल करूँ।' मैं केवल उसका अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर प्रकट किया जाता है। वस्तुतः सम्बन्ध-विच्छेद के दिन मैं अपने उस स्वामी से डरूँगा, जिसके आगमन का अटल विधान उसने सत्यतः किया है।[49] अध्याय 71

हे धरती के लोगो ! वस्तुतः वह सत्य ईश्वर यह कहते हुए पुकार रहा हैः वह जो 'स्मरण' है, वास्तव में ईश्वर की ओर से परम सत्य है और सत्य के परे, सिवाय भ्रम के, अन्य कुछ नहीं रह जाता[50] और भ्रम के परे अटल रूप से विहित अग्नि के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है...

हे कुर्रातुल ऐन ! सत्य की शक्ति से अपने सत्यवादी वक्षस्थल की ओर संकेत करो और पुकार उठो: मैं उस एक सत्य ईश्वर की सौगंध खाता हूँ, यहाँ ईश्वर का प्रतिनिधित्व स्थित है; मैं सत्यतः वह हूँ जिसे सर्वोत्तम पुरस्कार माना जाता है[51] और मैं सत्यतः वह हूँ जो सर्वश्रेष्ठ आवास है। अध्याय 72

हे तुम अनुयायियों के समूह ! एक बार सत्य प्रकट हो जाये, तो मेरे विरुद्ध अस्वीकार के शब्द उच्चारित न करना, क्योंकि इसके पूर्व तुम्हारे समक्ष कुरआन में बाब का आदेश उपयुक्त ढंग से उद्घोषित किया जा चुका है। मैं तुम्हारे स्वामी की सौगंध खाता हूँ, कि यह ग्रंथ वही कुरआन है जो पूर्व में नीचे भेजी गयी थी। अध्याय 81

हे तुम जो हृदय का सँजोया हुआ फल हो ! इस रहस्यवादी 'पक्षी' के राग को सुनो जो आकाश की उदात्तम ऊँचाइयों से गा रहा है। सत्यतः उस 'स्वामी' ने मुझे यह उद्घोषित करने के लिये प्रेरित किया हैः वस्तुतः मैं ईश्वर हूँ, वह जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। वह सर्वशक्तिशाली, सर्वबुद्धिमान है।

हे मेरे सेवकों ! तुम उत्सुकतापूर्वक इस सर्वोच्च पुरस्कार की खोज करो, क्योंकि मैंने सत्यतः ईश्वर के 'स्मरण' के लिये ऐसे उद्यानों का सृजन किया है जो मेरे अतिरिक्त अन्य सभी के लिये अबोधगम्य हैं और इनमें कुछ भी किसी के लिये भी विधिसंगत नहीं बनाया गया है सिवाय उनके जिनका जीवन उसके पथ में त्याग दिया गया है। अतः उस सर्वोच्च ईश्वर से याचना करो कि वह तुम्हें यह श्रेष्ठ पुरस्कार प्रदान करे, और सत्य ही, वह सर्वोच्च है, सर्वमहान है। यदि हमारी इच्छा होती, तो हम सभी मनुष्यों को अपने 'स्मरण' के इर्द-गिर्द एक ही धर्म में ले आये होते, परन्तु वे मतभेद करना बंद नहीं करेंगे,[52] जब तक कि ईश्वर सत्य की शक्ति से वह सम्पादित नहीं करेगा जो वह चाहता है। उस 'स्मरण' की दृष्टि में, यह आदेश सत्य ही, अटल रूप से विहित किया जा चुका है...

ईश्वर ने, सत्यतः लोगों को चेतावनी देने के लिये, अनुयायियों को सही मार्गदर्शन देने के लिये तथा इस ग्रंथ के रहस्यों पर प्रकाश डालने के लिये तुम्हें चुना है। अध्याय 85

यदि हमारी इच्छा हो तो हम में यह शक्ति है कि हमारे प्रकटीकरण के मात्र एक शब्द के द्वारा, इस दुनिया और इसमें जो कुछ भी है उन सभी को, पलक झपकने मात्र से भी कम समय में हमारे धर्म का सत्य समझने के लिये बाध्य कर सकते हैं...

सत्य ही, तुमसे पहले भी अन्य संदेशवाहकों की हँसी उड़ायी गयी है[53] और तुम ईश्वर के सेवक के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हो, जो सत्य की शक्ति द्वारा सतत बना हुआ है। शीघ्र ही हम ऐसे लोगों के दिनों को बढ़ा देंगे जिन्होंने अपने कृत्यों के कारण सत्य को बहिष्कृत किया है।[54] और वस्तुतः ईश्वर, लेशमात्र भी किसी के साथ अन्यायपूर्ण बर्ताव नहीं करेगा। अध्याय 87

हे धरती के लोगों ! उस एक सत्य ईश्वर के न्याय की सौगंध, उसके 'स्मरण' द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रमाण एक सूर्य की भाँति है जिसे उस कृपालु के हाथ ने आकाश के मध्यतम हृदय में ऊँचा उठाया है, जहाँ से यह अपनी सर्वोत्कृष्ट भव्यता में चमक रहा है...

ईश्वर का 'स्मरण' और उसके दिवस के विषय में, हमने हर उस संदेशवाहक के साथ एक पृथक संविदा स्थापित की है, जिसे हमने पूर्व में भेजा है। महिमा के साम्राज्य में एवं शक्ति के माध्यम से 'ईश्वर का स्मरण' एवं उसका दिवस, उसके ऐसे देवदूतों के समक्ष प्रत्यक्ष हैं जो उसकी कृपा के सिंहासन की परिक्रमा करते हैं। अध्याय 91

हे उषा काल के पल ! इस 'द्वार के दिवानक्षत्र' से वह दिव्य प्रकाश-पुँज की देदीप्यमान महिमा अपनी दीप्ति बिखेरे, उससे पहले तुम यह याद करो कि पलक झपकने मात्र से पहले ईश्वर का नियत दिवस सत्यतः आ पहुँचा होगा। इस मातृग्रंथ में ईश्वर का ऐसा ही आदेश पारित हुआ है। अध्याय 94

हे निष्ठावानों के समूह ! वस्तुतः धर्मग्रंथों में, या व्यापक रूप से संसार में, अथवा मनुष्यों के हृदयों में ईश्वर द्वारा प्रकट किये गए प्रत्येक चिह्न का उद्देश्य उन्हें यह पूर्णतया समझाना है कि यह 'स्मरण' वास्तव में ईश्वर की ओर से एक सत्य है। वस्तुतः शाश्वत सत्य की शक्ति से वह ईश्वर सभी वस्तुओं से अवगत है...

हे तुम जो महिमा के सिंहासन की परिक्रमा करते हो ! मेरा आह्वान सुनो जो प्रज्वलित झाड़ी के मध्य से उठा है, 'वस्तुतः मैं ही ईश्वर हूँ और मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अतः मेरी उपासना करो और उसके लिये जो सर्वमहान 'स्मरण' है, लोगों के कपट से मुक्त प्रार्थना अर्पित करो, क्योंकि वस्तुतः, वह एक सत्य ईश्वर, तुम्हारा स्वामी, परम सत्य के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। वस्तुतः, वे जो उसके अतिरिक्त किसी अन्य की स्तुति करते हैं, अग्नि के निवासियों के सहचर हैं, जबकि वह जो 'ईश्वर का स्मरण' है, वस्तुतः उस प्रज्वलित झाड़ी के बीच, दृढ़ एवं अविचलित, सत्य के मार्ग पर निवास करता है।'...

हे धरती के लोगो ! उस 'सर्वमहान स्मरण' को वह कष्ट न देना जो पावन भूमि में उम्माय्यों ने क्रूरतापूर्वक हुसैन को दिया था। ईश्वर के न्याय की सौगध, वह वास्तव में 'शाश्वत सत्य' है, और वस्तुतः ईश्वर उसका साक्षी है। अध्याय 17

सत्य ही, ईश्वर ने हमारे उद्देश्य का प्रस्ताव आकाश और धरती, तथा पहाड़ों के समक्ष रखा था, परन्तु उन्होंने इसे सहन करने से इन्कार कर दिया और इससे डर गये। यद्यपि, इस मनुष्य, 'अली', जो 'ईश्वर के महान स्मरण' के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं, ने इसे सहन करने

का उत्तरदायित्व ले लिया। अतः उस सर्वव्यापी ईश्वर ने, अपने परिरक्षित ग्रंथ में उसे 'एक अपकृत' कह कर उल्लिखित किया है और लोगों की दृष्टि के समक्ष उसके साधारण होने के कारण, उस ग्रंथ के न्याय के अनुसार, उसे 'अज्ञात' की उपाधि दी गयी हैं।....[55]

सत्यतः शीघ्र ही हम उन्हें सर्वाधिक कष्टदायी यातनाओं एवं घोरतम कष्टकर दण्ड से प्रताड़ना देंगे जिन्होंने फरात की भूमि पर हुसैन (इमाम हुसैन) के विरुद्ध युद्ध किया था...

ईश्वर हुसैन के हृदय, उसकी तीक्ष्ण प्यास की चुभन तथा उस अतुलनीय, युग-प्राचीन ईश्वर के लिये उसकी सहिष्णुता को भलीभाँति जानता है; और वस्तुतः ईश्वर इसका साक्षी है। अध्याय 12

सिनाई पर्वत से पुकार रहे अपने स्वामी की वाणी की ओर ध्यान दो, 'वस्तुतः उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, और मैं 'वह सर्वोच्च हूँ' जिसे, परमेश्वर के विधान के अनुसार, मातृग्रंथ में आवृत किया गया था।' अध्याय 19

यह पुस्तक जिसे हमने भेजा है, वास्तव में आशीर्वादों से भरपूर है[56] तथा सत्य की साक्षी देती है ताकि लोग यह समझ सकें कि अपने स्मरण के पक्ष में ईश्वर का निर्णायक प्रमाण उसके सदृश है जिससे, अवतारों की मुहर, मुहम्मद को विभूषित किया गया था और वस्तुतः जैसाकि मातृग्रंथ में आदेशित है, यह धर्म महान है। अध्याय 66

'यह स्मरण' सत्यतः ईश्वर के यशस्वी प्रकाश का शेषांश है, और यह तुम्हारे लिये सर्वोत्तम होगा,[57] यदि तुम, सत्य ही, उस सर्वोच्च ईश्वर के प्रति निष्ठावान बने रहते हो...

हमने सत्य ही, ईश्वर की अनुमति से तुम्हें अपने चिह्नों से विभूषित तथा अपनी अद्वितीय प्रभुसत्ता से प्रबलित कर मुनष्यों के समक्ष भेजा है। वह सत्यतः ईश्वर की 'धरोहर' का नियुक्त धारक है...

हे कुर्रातुल ऐन ! जैसाकि तुम्हें आदेशित किया गया है, अटल रूप से दृढ़ रहो और न तो मनुष्यों के बीच आस्थाहीनों से, न ही उनके कथनों से स्वयं को दुःखी होने दो, क्योंकि, उस सर्वमहान ईश्वर के न्याय की सौगंध, पुनरूत्थान के दिवस में, तुम्हारा स्वामी उनका फैसला करेगा और सत्य ही, ईश्वर सभी वस्तुओं का साक्षी है। अध्याय 84

ईश्वर की दृष्टि में यह धर्म सत्यतः मुहम्मद के धर्म का स्वत्व है; अतः तुम उस एक सत्य ईश्वर की उपस्थिति में उस स्वर्गिक आनन्दधाम एवं उसकी सुप्रसन्नता के सर्वोच्च उद्यान को प्राप्त करने की शीघ्रता करते, यदि तुम ईश्वर के प्रमाणों एवं चिह्नों के समक्ष कदाचित धैर्यवान एवं कृतज्ञ होते। अध्याय 48

हे मेरे सेवकों! यह ईश्वर का वह निर्धारित दिवस है जिसका वचन तुम्हारे दयालु स्वामी ने उसकी पुस्तक में तुम्हें दिया था; अतः, सत्य ही, उस सर्वमहान स्मरण के पथ पर चलते हुए ईश्वर के नाम का अतिशय स्मरण करो...

वस्तुतः ईश्वर ने अपने 'स्मरण' को अनुमति नहीं दी है कि वह जो चाहे और जिस प्रकार चाहे, कह सकता है। वास्तव में, वह जो कुछ भी चुनता है, वह अन्य किसी के द्वारा नहीं बल्कि हमारे द्वारा ही चुना जाता है। सत्य ही वह स्वामी, सभी वस्तुओं का साक्षी है। अध्याय 87

सत्यतः हमने, सिनाई में उस प्रज्वलित झाड़ी के मध्य से ईश्वर की अनुमति द्वारा, मूसा के साथ वार्तालाप किया और उस रहस्यवादी पर्वत तथा उसके निवासियों के समक्ष उसके प्रकाश की एक अत्यन्त सूक्ष्म झलक प्रकट की, जिससे वह पर्वत अपनी नींव तक हिल गया और धूल में बिखर गया...

हे धरती के लोगों ! मैं तुम्हारे स्वामी की सौगंध खाता हूँ ! तुम वैसे ही कृत्य करोगे जैसे पूर्व की पीढ़ियों ने किये हैं। अतः तुम स्वयं को ईश्वर के भयंकर, सर्वाधिक दुःखद प्रतिशोध की चेतावनी दो। क्योंकि वस्तुतः ईश्वर सभी वस्तुओं से शक्तिसम्पन्न है। अध्याय 53

हे कुर्रातुल ऐन ! मैं उस 'महान घोषणा' के अतिरिक्त तुझमें अन्य कुछ नहीं देखता - वह घोषणा जो स्वर्गदूतों द्वारा उच्चारित की गयी है। इस नाम के द्वारा, मैं साक्षी देता हूँ, वे जो महिमा के सिंहासन की परिक्रमा करते है, तुझे सदा से जानते हैं।

हे अनुयायियों के समूह ! क्या तुम अपने मन में उस पर कोई सन्देह रखते हो जिसकी ओर 'ईश्वर का स्मरण' तुम्हारा आह्वान कर रहा है ? उस एकसत्य ईश्वर के न्याय की सौगंध। वह जिसे सत्य की शक्ति से प्रकट किया गया है, उस परम सत्य के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। क्या तुम्हें बाब के विषय में सन्देह है ? वस्तुतः वह वही है, जो हमारी अनुमति से,

आकाश और धरती के साम्राज्यों को अपनी मुट्ठी में जकड़े हुए है और सत्य ही वह स्वामी उससे अवगत है जो तुम कर रहे हो....

मैं, वास्तव में, तुम्हारे जैसा ही एक मनुष्य हूँ। फिर भी, ईश्वर अपनी इच्छानुसार जो भी अनुग्रह मुझे प्रदान करना चाहता है, करता है, और वह जो तुम्हारे स्वामी ने मातृग्रंथ में आदेशित किया है, वह असीम है। अध्याय 88

सत्य ही, ईश्वर ने काबा के पावन गृह में मुझ पर प्रकट किया, 'वस्तुतः मैं ईश्वर हूँ, मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, मैंने स्वयं के लिये तुम्हारा चयन किया है और तुम्हें इस स्मरण के रूप में चुना है। सत्यतः, जो कोई भी बाब के मार्ग में चलते हुए, तुम्हारे प्रति निष्ठावान रहता है, उसके लिये निश्चित ही आने वाले लोक का पुरस्कार निर्धारित किया गया है...' इस ग्रंथ में यह आदेशित किया गया है कि उस स्मरण के धर्म की सिद्धि पर, परमेश्वर के विधानानुसार, सर्वमहान घटना घट चुकी होगी और ईश्वर, सत्य ही, सभी वस्तुओं पर शक्तिशाली है। अध्याय 79

हे कुर्रातुल ऐन ! वस्तुतः मैं वह हूँ, मातृग्रंथ में जिसका अभिवादन 'महान घोषणा' के नाम से किया गया है। कहोः मुझे ले कर लोगों में दुःखद मतभेद उत्पन्न हुए हैं, जबकि, वास्तव में, मेरे और बाब के बीच कोई अन्तर नहीं है; और वह शाश्वत सत्य, ईश्वर, इसका पर्याप्त साक्षी है। अध्याय 77

मैं वह रहस्यवादी पताका हूँ जिसे सर्वशक्तिमत्ता के हाथों ने लहराया है, मैं वह दीपक हूँ, जिसे ईश्वर की उँगली ने प्रज्वलित किया है और अमर भव्यता के साथ चमकने में समर्थ बनाया है। मैं उस सर्वोच्च प्रकाश की ज्वाला हूँ जो सिनाई के ऊपर, उस आनन्दित स्थान पर दीप्त हुई थी और प्रज्वलित गिरिश्रृंग के बीच छिपी हुई थी। अध्याय 94

पूर्ण न्याय के चिह्न स्वरूप, हमने प्रत्येक संदेशवाहक को, अपने स्मरण के विषय में समाचार भेजे हैं और वस्तुतः ईश्वर दुनिया के सभी लोगों पर सर्वोच्च है। अध्याय 83

3

फारसी बयान के कुछ उद्धरण

एक आत्मा का मार्गदर्शन करना धरती की सभी सम्पदाओं के स्वामित्व से बेहतर है, क्योंकि जब तक वह आत्मा दिव्य एकता के वृक्ष की छाँव तले है, तब तक वह और जिसने उसका मार्गदर्शन किया है, दोनों ही, ईश्वर की सुकोमल दया के पात्र होंगे, जबकि धरती की वस्तुओं का स्वामित्व, मौत के समय समाप्त हो जायेगा। मार्गदर्शन का पथ प्रेम एवं सहानुभूति का पथ है, न कि बल एवं दबाव का। अतीत में ईश्वर का यही तरीका रहा है और भविष्य में भी रहेगा ! वह जिसे चाहे उसे अपनी दया की छाँव तले प्रवेश प्रदान करने में समर्थ बनाता है। वस्तुतः वह सर्वोच्च रक्षक है।

किसी भी आत्मा के लिये ईश्वर के अवतार के दिवस में उससे प्रभावित होने, उसके श्लोकों को सुनने और उन पर विश्वास करने, उसकी उस उपस्थिति - जो ईश्वर की उपस्थिति के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है - में प्रवेश करने, उसकी सुप्रसन्नता के दिव्य साम्राज्य के महासागर में तैरने तथा उसकी दिव्य एकता के आनन्दधाम के उत्तम फलों का भाग ग्रहण करने से बढ़कर अद्‌भुत कोई स्वर्ग नहीं है। 11.16[58]

तुम ईश्वर की उपासना इस प्रकार करो कि यदि तुम्हारी उपासना तुम्हे अग्नि की ओर ले जाये, तो तुम्हारी आराधना में कोई परिवर्तन नहीं हो, और तब भी ऐसा ही करो यदि तुम्हारा पुरस्कार स्वर्ग हो। ऐसी ही और मात्र ऐसी ही उपासना होनी चाहिए जो उस एक सत्य ईश्वर के लिये उचित है। यदि तुम भय के कारण उसकी उपासना करते हो, तो यह उसकी उपस्थिति के पावन दरबार में अनुचित होगा और तुम्हारे द्वारा किया गया ऐसा कृत्य उत्तम नहीं माना जायेगा जो उसके अस्तित्व की एकता को समर्पित हो। या फिर, यदि तुम्हारी दृष्टि स्वर्ग पर टिकी है और तुम ऐसी आशा लिये हुए उसकी उपासना करते हो, तो इस सत्य के बावजूद, कि स्वर्ग की कामना मनुष्य करते हैं, तुम ईश्वर की बराबरी उसकी सृष्टि से करने लगोगे।

अग्नि एवं स्वर्ग, दोनों ही ईश्वर के समक्ष झुकते हैं। अग्नि के भय अथवा स्वर्ग की कामना के बगैर, उसकी, उसी के कारण आराधना ही उसके सत्व को शोभा देता है। यद्यपि, जब सच्ची उपासना अर्पित की जाती है, तो उपासक अग्नि से मुक्ति प्राप्त कर लेता है और ईश्वर की सुप्रसन्नता के स्वर्ग में प्रवेश को प्राप्त होता है, फिर भी, उसके कर्म का यह ध्येय नहीं होना चाहिए। ईश्वर के अनुग्रह एवं कृपा, सदा उसके रहस्यमय विवेक की अपेक्षा के अनुसार प्रवाहित होते हैं।

सर्वाधिक स्वीकार्य योग्य प्रार्थना वह है जो चरम आध्यात्मिकता और प्रदीप्ति से अर्पित की जाती है। इसका लम्बे समय तक का होना न तो ईश्वर को प्रिय रहा है और न रहेगा। जितने ही अधिक अनासक्त और विशुद्ध भाव से प्रार्थना की जाती है, उतना ही अधिक वह आराधना ईश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य होती है। vii19

पुनरूत्थान का दिवस, वह दिवस है जब, किसी अन्य दिवस की भाँति ही, सूर्य उदय और अस्त होता है। पुनरूत्थान का दिवस कितनी बार उदय हुआ और जिस भूमि पर यह घटित हुआ, वहाँ के लोग इस घटना से अनभिज्ञ रहे। यदि उन्होंने सुना होता, तो वे विश्वास नहीं करते और यही कारण है कि उन्हें बताया नहीं गया !

जब ईश्वर के संदेशवाहक (मुहम्मद) प्रकट हुए, तो उन्होंने अविश्वासियों के समक्ष यह घोषित नहीं किया, कि नवजीवन आ चुका है, क्योंकि वे इस समाचार को सहन नहीं कर सकते थे। सत्यतः, वह दिवस एक अत्यधिक शक्तिशाली दिवस है, क्योंकि इसमें, वह दिव्य वृक्ष, अनन्तता से अनन्तता तक यह उद्घोषित करता है, 'वस्तुतः मैं ईश्वर हूँ। मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है'। फिर भी, वे जिन पर परदा पड़ा हुआ है, यह मानते हैं कि वह उन्हीं जैसा कोई एक है और वे उसे एक आस्थावान कहने से भी इन्कार कर देते हैं, यद्यपि उसके दिव्य साम्राज्य के क्षेत्र में, ऐसी उपाधि उसके पूर्व के प्रकटीकरण के सर्वाधिक नगण्य अनुयायी को सदा के लिये प्रदान की जाती है। अतः, यदि ईश्वर के संदेशवाहक के दिवस में, लोगों ने उन्हें कम-से-कम अपने समय का एक आस्थावान ही माना होता, तो वे उन्हें सात वर्षों तक जब वे पहाड़ों पर थे, अपने पावन गृह (काबा) से कैसे वंचित रखते ? इसी प्रकार, बयान के बिन्दु के इस विधान में, यदि लोगों ने उसे आस्थावान नाम प्रदान करने से इन्कार न किया होता, तो वे उसे इस पर्वत पर कैद कैसे कर पाते, बिना यह समझे कि विश्वास के सारतत्व का अस्तित्व उसकी ओर से एक शब्द पर निर्भर करता है ? उनके हृदय सच्ची अन्तर्दृष्टि की शक्ति से वंचित हैं, और इसलिये वे देख नहीं सकते, जबकि वे जिन्हें चेतना की दृष्टि प्रदान की गयी है, पतंगे की भाँति सत्य के प्रकाश के इर्द-गिर्द घूमते है, जब तक कि वे स्वाहा नहीं हो जाते। यही कारण है कि पुनरूत्थान के दिवस को सभी दिवसों में महानतम कहा जाता है, जबकि यह किसी अन्य दिवस जैसा ही होता है। viii9

दिव्य एकता में विश्वास करने वालों की दृष्टि में, ईश्वर के आदेशों के अनुपालन से बढ़कर कोई स्वर्ग नहीं है और जिन्होंने ईश्वर को जाना है, उनकी दृष्टि में, उसके नियमों के उल्लंघन तथा किसी आत्मा पर, एक राई के दाने जितना भी अत्याचार करने से भीषण कोई अग्नि नहीं है। पुनरूत्थान के दिवस में, ईश्वर, सत्य ही, सभी मनुष्यों का न्याय करेगा और वस्तुतः हम सभी उसकी कृपा की याचना करेंगे। v 9

ईश्वर उनसे प्रेम करता है जो पवित्र हैं। बयान में तथा ईश्वर की दृष्टि में, पवित्रता और बेदाग़ स्वच्छता के अतिरिक्त, अन्य कुछ भी अधिक प्रिय नहीं है...

बयान के विधान में ईश्वर किसी भी आत्मा को आनन्द एवं उल्लास से वंचित नहीं देखना चाहता है। सत्यतः वह यह चाहता है कि सभी परिस्थितियों में, आन्तरिक एवं बाह्य, दोनों प्रकार से, सभी ऐसी पवित्रता से विभूषित हों कि स्वयं तक को कोई ग्लानि महसूस न हो।v 14

इसी प्रकार बयान के बिन्दु के प्रकटीकरण पर विचार करो। ऐसे भी लोग हैं जो प्रत्येक रात्रि से प्रातःकाल तक स्वयं को ईश्वर की उपासना में व्यस्त रखते हैं, और वर्तमान में भी, जबकि सत्य का सूर्य अपने प्रकटीकरण के गगन में अपने चरम बिन्दु के निकट पहुँच रहा है, उन्होंने अब तक अपने आराधना के स्थल नहीं छोड़े हैं। यदि उनमें से किसी को भी, कभी भी ईश्वर के अद्‌भुत वचन पढ़कर सुनाए जाते तो वह चिल्ला उठताः 'तुम मुझे अपनी प्रार्थना अर्पित करने से क्यों रोक रहे हो ?' हे तुम जो पर्दों में लिपटे हुए हो ! यदि तुम ईश्वर का नाम जपते हो, तो तुम उससे वंचित रहकर स्वयं को क्यों क्षति पहुँचाते हो, जिसने तुम्हारे हृदय में आराधना का प्रकाश प्रदीप्त किया है ? यदि उसने यह आज्ञा न प्रकट की होतीः 'वस्तुतः, तुम ईश्वर का उल्लेख करो'[59] तो ईश्वर को अपनी भक्ति अर्पित करने के लिये तुम्हें क्या चीज़ प्रेरित करती और तुम प्रार्थना में किसकी ओर उन्मुख होते ?

तुम यह निश्चित रूप से जान लो कि जब भी तुम उसका उल्लेख करते हो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, केवल तब ही तुम ईश्वर का नाम लेते हो। इसी प्रकार तुम्हें बयान के श्लोकों की ओर ध्यान देना चाहिए और इसके सत्य को स्वीकार करना चाहिए, केवल तब ही ईश्वर के प्रकटित श्लोक तुम्हें लाभ पहुँचायेंगे। अन्यथा तुम इनसे क्या लाभ प्राप्त कर सकते हो ? यदि तुम जीवन के आरम्भ से अन्त तक आराधना में स्वयं को समर्पित करते और अपने दिनों को

ईश्वर के स्मरण में व्यतीत कर देते, परन्तु इस युग के उसके प्रकटीकरण के व्याख्याता में अविश्वास करते, तो क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारे कर्म तुम्हें कोई लाभ प्रदान करते ? दूसरी ओर, यदि तुम सच्चे ज्ञान से उसमें विश्वास करते हो और उसे पहचानते हो, और वह कहता हैः 'मेरी आराधना में व्यतीत किये गये तुम्हारे सम्पूर्ण जीवन को मैंने स्वीकार किया है', तो निश्चित रूप से तुम सर्वाधिक उत्कृष्टता से उसकी उपासना करते रहे हो। अपने कर्म करने का तुम्हारा उद्देश्य यह है कि ईश्वर कृपापूर्वक उन्हें स्वीकार करे; और दिव्य स्वीकृति कदापि प्राप्त नहीं हो सकती सिवाय उसे स्वीकारने पर, जो उसके प्रकटीकरण का व्याख्याता है। उदाहरण के लिये, यदि ईश्वर के संदेशवाहक - उन पर दिव्य आशीर्वाद बने रहें - किसी एक कर्म को स्वीकार करते थे, तो सत्य ही ईश्वर इसे स्वीकार करता था; अन्यथा यह उस व्यक्ति की स्वार्थपूर्ण इच्छाओं में ही रह जाता जिसने इसे सम्पादित किया था एवं ईश्वर की उपस्थिति में नहीं पहुँचता। इसी प्रकार, कोई भी कर्म, जो बयान के बिन्दु द्वारा स्वीकार किया जाता है, वह ईश्वर द्वारा स्वीकार किया जाता है, क्योंकि, इस नश्वर संसार के पास उस युगप्राचीन की उपस्थिति तक पहुँचने का अन्य कोई मार्ग नहीं है। जो कुछ भी अवतरित होता है, उसके प्रकटीकरण के व्याख्याता के माध्यम से आता है और जो कुछ भी अर्पित होता है, उसके प्रकटीकरण के व्याख्याता को अर्पित होता है। viii 19

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उस सर्वशक्तिशाली ने ये श्लोक उसी प्रकार उसे (बाब को) दिये हैं, जिस प्रकार उसने ईश्वर के संदेशवाहक को भेजे थे। सत्यतः लोगों के बीच प्रसारित होने वाले ऐसे ही श्लोक, सौ हज़ार से कुछ कम नहीं हैं, जबकि इनमें उसके धर्मपत्र, उसकी प्रार्थनायें अथवा उसके ज्ञानपूर्ण उपदेश तथा दार्शनिक प्रबन्ध शामिल नहीं हैं। उसके द्वारा पाँच घंटों की अवधि में प्रकट किए गये श्लोकों की संख्या एक हज़ार से कुछ कम नहीं है। वह उस गति से श्लोकों का पाठ करता है जो उसके लिपिक की लिखने की क्षमता के अनुरूप हो। अतः इसका भलीभाँति अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि, उसके प्रकटीकरण के आरम्भ से लेकर अब तक उसे निर्विघ्न कार्य करने दिया गया होता, तो उसकी लेखनी से प्रसारित होने वाले लेखों का परिमाण कितना अपार होता।

यदि तुम यह दावा करते हो कि, इन श्लोकों को अपने आप में प्रमाण नहीं माना जा सकता, तो कुरआन के पन्नों का अवलोकन करो। यदि ईश्वर ने अपने संदेशवाहक - उन पर ईश्वर के आशीर्वाद बने रहें - के पैग़म्बर होने की वैधता को सिद्ध करने के लिये, इसमें प्रकटित

श्लोकों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रमाण स्थापित किया होता, तब ही तो तुम इन श्लोकों में अपने संशय रख सकते हो...

ग्रंथ के यथेष्ट प्रमाण होने के सम्बन्ध में, ईश्वर ने प्रकट किया हैः 'क्या उनके लिये यह पर्याप्त नहीं है कि उनके समक्ष सुनाये जाने के लिये हमने तुम तक एक ग्रंथ भेजा है ? वस्तुतः, इसमें उनके लिये जो विश्वास करते हैं, एक कृपा और एक चेतावनी है।'[60] जैसा कि ग्रंथ में प्रमाणित किया गया है, जब ईश्वर यह साक्ष्य दे चुके हैं कि ग्रंथ एक यथेष्ट प्रमाण है, तो कोई व्यक्ति यह कहकर सत्य का खण्डन कैसे कर सकता है कि यह ग्रंथ, अपने आप में एक यथेष्ट प्रमाण नहीं है ? ii 1

चूँकि यह दिवस एक महान दिवस है अतः तुम्हारे लिये स्वयं को अनुयायियों से अभिन्न समझना अत्यधिक कष्टकर होगा क्योंकि उस दिवस के आस्थावान स्वर्ग के निवासी हैं, जबकि अविश्वासी अग्नि के वासी हैं। और तुम यह निश्चित रूप से जान लो कि स्वर्ग का अर्थ है उसे पहचानना और उसके समक्ष झुक जाना जिसे ईश्वर प्रकट करेगा तथा अग्नि से तात्पर्य ऐसी आत्मायें हैं जो उसके समक्ष झुकने में अथवा उसकी सुप्रसन्नता के प्रति समर्पित होने में विफल रहेंगी। उस दिवस में तुम स्वयं को स्वर्ग का निवासी एवं उसमें सच्चा विश्वास करने वाला समझोगे, जबकि वास्तव में तुम स्वयं को परदों से आवृत रहने की क्षति पहुँचा चुके हो और तुम्हारा निवास निम्नतम अग्नि होगा, यद्यपि तुम स्वयं भी इससे अवगत नहीं होगे।

उसके प्रकटीकरण की तुलना कुरआन के बिन्दु के प्रकटीकरण से करो। बाईबिल के ऐसे अक्षरों की संख्या कितनी अपार है जो उत्सुकतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, फिर भी, उसके प्रकटीकरण के समय से लेकर पाँच वर्ष तक, निष्ठावानों के नायक (इमाम अली) और वे जो गुप्त रूप से उसमें विश्वास करते थे, के अतिरिक्त अन्य कोई भी स्वर्ग का निवासी न बन सका, यद्यपि वे स्वयं को स्वर्ग के निवासी समझते थे।

इसी प्रकार, इस प्रकटीकरण को देखो। दिव्य कल्पना के माध्यम से लोगों के सत्वों को क्रियाशील किया गया है, और वर्तमान दिवस तक तीन सौ तेरह अनुयायी चुने गये हैं। साद (इस्फहान) की भूमि पर, जो कि बाह्य रूप से एक महान नगर प्रतीत होता है, जिसके मदरसों के प्रत्येक कोने में, ऐसे लोगों की बहुत बड़ी संख्या है जिन्हें ज्ञानी एवं आचार्य समझा जाता है, फिर भी जब अन्तरतम सार उजागर करने का समय आया, तो मात्र एक

गेहूँ छानने वाले ने अनुयायी के वस्त्र धारण किये। इस प्रकटीकरण के विषय में पैगम्बर मुहम्मद के बंधु-बाँधवों, उन पर ईश्वर की ओर से शांति प्राप्त हो - द्वारा जो कहा गया था, कि जो दीन हैं उन्हें उदात्त बनाया जायेगा और जो उदात्त हैं उन्हें दीन बनाया जायेगा, उसका रहस्य यही है।

वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, का प्रकटीकरण भी ऐसा ही है। जो यह सोच भी नहीं सकते कि उनके हिस्से में ईश्वर की अप्रसन्नता भी आ सकती है, और जिनके सद्कर्म सभी के लिये उदाहरण होंगे, उन लोगों में ऐसे कई होंगे जो उसके धर्म को अस्वीकार करने पर स्वयं निम्नतम अग्नि का साकार रूप बनेंगे; जबकि जिन्हें कोई भी किसी योग्य नहीं समझ सकता था ऐसे दीन सेवकों में उनकी संख्या कितनी बड़ी है जिन्हें सच्ची आस्था से सम्मानित किया जायेगा और जिन्हें वह, उदारता का निर्झर-स्रोत, प्रभुत्व का वस्त्र प्रदान करेगा, क्योंकि ईश्वर के धर्म में जो कुछ भी सृजित किया जाता है, वह उसके शब्द की शक्ति के माध्यम से सृजित किया जाता है। viii 14

ईश्वर के संदेशवाहक के अवतरण के समय सभी उत्सुकतापूर्वक उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, फिर भी, तुम सुन चुके हो कि उसके प्रकट होने पर लोगों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया, इस तथ्य के बावजूद कि यदि वे कभी उसे अपने स्वप्न में देख लेते थे, तो वे इस पर गर्व किया करते थे।

इसी प्रकार, बयान के बिन्दु के अवतरण में लोग उसके नाम के उच्चारित होने पर खड़े हो जाते तथा उसके आगमन के लिये दिन-रात भक्तिमय भाव से याचना करते और यदि वे उसका स्वप्न देख लेते, तो अपने स्वप्नों की महिमा गाया करते; फिर भी, अब जबकि उसने ऐसे सर्वशक्तिशाली प्रमाण से विभूषित होकर स्वयं को प्रकट किया है जिससे उनका अपना धर्म प्रमाणित होता है, तथा ऐसे असंख्य लोगों के बावजूद जो उत्कंठापूर्वक उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, उसके श्लोकों को सुनने के पश्चात वे अपने घरों में चैन से आराम कर रहे हैं; जबकि इस क्षण वह एकाकी और परित्यक्त अवस्था में माहकू के पर्वत में कैद है।

स्वयं से सावधान रहो, हे बयान के लोगों, कहीं तुम ऐसे कर्म न करो कि दिन-रात तो उसके लिये विलाप करो, उसके नाम के उच्चारित होने पर उठ खड़े हो, परन्तु सिद्धि के इस दिवस में मानो एक परदे के कारण तुम उससे दूर रह जाओ - एक ऐसा दिवस जब तुम्हें न केवल

उसके नाम पर उठ खड़ा होना चाहिए, अपितु उस तक पहुँचने का एक मार्ग खोजना चाहिए जो उसके नाम का साकार रूप है। vi15

उसके प्रकटीकरण के समय जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, सभी को बयान की शिक्षाओं से भलीभाँति प्रशिक्षित हो जाना चाहिए, ताकि कोई भी अनुयायी बाहरी तौर पर तो बयान को दृढ़तापूर्वक थामे रहे और इस कारण से ही उसके प्रति अपनी निष्ठा को गवाँ बैठे। यदि कोई भी ऐसा करता है, तो उसके विरुद्ध 'ईश्वर में अविश्वास करने वाला' का अभिनिर्णय पारित किया जाएगा।

मैं ईश्वर के पवित्र सत्व की सौगंध खाता हूँ, यदि उसके प्रकटीकरण के दिवस में जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, बयान के सभी अनुयायी उसकी सहायता करने में एक हो जायें, तो एक भी आत्मा, बल्कि धरती पर सृजित ऐसी एक भी वस्तु नहीं होगी जिसे स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त न हो। स्वयं से सावधान रहो, क्योंकि उसके प्रकट होने के समय, ऐसे कर्मों के बजाय जो बयान में निर्धारित किये गये हैं, मात्र उसकी सहायता करना ही ईश्वर के धर्म का कुल योग है। परन्तु, उसके प्रकटीकरण के पूर्व, यदि कोई इन नियमों का जौ के दाने के बराबर भी उल्लंघन करता है, तो उसने उसके आदेश का उल्लंघन किया होगा।

जो कुछ भी तुम्हें उसके प्रकटीकरण के स्रोत से भटकाये उससे ईश्वर की शरण लो और उसकी डोर को कसकर थाम लो, क्योंकि जो कोई भी उसकी निष्ठा को दृढ़तापूर्वक थाम लेता है, उसे समस्त लोकों में मोक्ष प्राप्त हुआ है और होता रहेगा।

'ईश्वर की कृपा ऐसी ही है; वह जिसे चाहता है, उसे यह प्रदान करता है और ईश्वर अपार कृपा का स्वामी है।'[61] v 5

अपने जीवन के आरम्भ से अन्त तक तुम ईश्वर के लिये अपने कार्य करते हो, फिर भी एक भी कर्म उसके लिये नहीं होता जो ईश्वर का प्रकटीकरण है, जिसकी ओर प्रत्येक सद्कर्म लौट जाता है। यदि तुमने इस प्रकार आचरण किया होता, तो पुनरूत्थान के दिन तुम्हें इतना दुःख न भुगतना पड़ता।

देखो यह धर्म कितना महान है, फिर भी लोग किस प्रकार आवरणों में लिपटे हुए हैं। मैं ईश्वर के पावन सत्व की सौगंध खाता हूँ कि ईश्वर को अर्पित की गयी प्रत्येक सच्ची प्रशंसा

एवं कर्म सिवाय उसे अर्पित की गयी प्रशंसा एवं कर्म के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा।

स्वयं को धोखा न दो कि तुम ईश्वर के लिये सदाचारी हो, जबकि ऐसा नहीं है। क्योंकि यदि तुम सत्य ही अपने कार्य ईश्वर के लिये करते, तो तुम इन्हें उसके लिये कर रहे होते जिसे ईश्वर प्रकट करेगा और उसके नाम की प्रशंसा कर रहे होते। इस पर्वत के लोग, जो कि सच्चे ज्ञान से वंचित हैं, निरन्तर ये शब्द उच्चारित करते हैं, 'ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं'; परन्तु इससे उन्हें क्या लाभ ? ज़रा विचार करो ताकि तुम एक आवरण की भाँति उससे दूर न रह जाओ जो प्रकटीकरण का दिवास्रोत है। VIII.19.

सभी कालों तथा सभी परिस्थितियों में, ईश्वर अपने प्राणियों से पूर्णतया स्वतंत्र रहा है। वह सदा से यह इच्छा संजोये हुए है और था कि सभी मनुष्य, अत्यधिक प्रेमपूर्वक उसके स्वर्गोद्यान में प्रवेश करें, कि कोई भी किसी को दुःखी न करे, एक क्षण के लिये भी नहीं, और यह कि पुनरूत्थान के दिवस तक, जो कि उसके सूर्य को चिह्नित करता है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, सभी उसकी सार-सम्भाल एवं सुरक्षा के पालने में निवास करें।

ब्रह्माण्ड के उस स्वामी ने सभी मनुष्यों के साथ अपनी संविदा स्थापित किये बगैर न तो कभी किसी पैगम्बर को भेजा है, न ही उसने कोई ग्रंथ भेजा। उसने सभी मनुष्यों के साथ अपनी संविदा स्थापित की है, जिसमें अगले प्रकटीकरण तथा अगले ग्रंथ को स्वीकार करने के लिये उनका आह्वान किया गया है; क्योंकि उसके अनुग्रह का उद्गार असीम और अपार है। VI.16.

हे मेरे प्राणियों, तुम कितने आवृत हो,[62]...जिन्होंने, किसी अधिकार के बगैर, उसे एक पर्वत (माहकू) के हवाले कर दिया है, जिसके निवासियों में से एक भी उल्लेख करने के योग्य नहीं है... उसके साथ, अर्थात मेरे साथ, कोई नहीं है, सिवाय उसके जो मेरी पुस्तक के जीवित अक्षरों में से एक है। उसकी उपस्थिति में, जो कि मेरी उपस्थिति है, रात को एक आलोकित दीपक भी नहीं है ! और फिर भी, (उपासना) स्थलों पर, जो कि विविध श्रेणियों में उस तक पहुँचते हैं, अनगिनत दीपक जल रहे हैं ! धरती की समस्त वस्तुएँ उसके लिये सृजित की

गयीं हैं और सभी उसके लाभों का भाग ग्रहण करते हैं, फिर भी वे उससे इतने आवृत हैं कि उसे एक दीपक से भी वंचित रहते हैं !

अतः इस दिवस में, मैं अपनी सृष्टि का साक्षी हूँ, क्योंकि मेरी उपस्थिति में मेरे अतिरिक्त, अन्य किसी का साक्ष्य उल्लेख करने योग्य नहीं है। मैं इसकी पुष्टि करता हूँ कि मेरे जीवों के लिये मेरे मुखमण्डल के समक्ष खड़े होने एवं मेरे पावन शब्दों में विश्वास करने से अधिक उदात्त कोई स्वर्ग नहीं है, जबकि उनके लिये मेरे उदात्त व्यक्तित्व के प्रकटीकरण से आवृत होने एवं मेरे शब्दों में अविश्वास करने से अधिक भीषण न तो कोई अग्नि थी और न होगी।

तुम विवाद कर सकते हो कि वह हमारी ओर से कैसे बोल सकता है ? जैसा कि मेरे ग्रंथ के उद्धरणों में प्रतिबिम्बित होता है, क्या तुमने उन अनुचित शब्दों का अवलोकन नहीं किया जो तुमने पूर्व में कहे थे और अब भी तुम लज्जा महसूस नहीं करते ? अब तुम मेरे ग्रंथ के सत्य को निर्णायक रूप से स्थापित होते हुए देख चुके हो और आज, उस ग्रंथ के माध्यम से ही तुम में से प्रत्येक मुझ में अपना विश्वास घोषित करता है। वह दिन दूर नहीं जब तुम सहज ही समझ जाओगे कि इन पावन श्लोकों में तुम्हारे विश्वास में ही तुम्हारा यश निहित है। फिर भी, आज, जब केवल इस धर्म में विश्वास ही तुम्हें सच्चा लाभ पहुँचा सकता है, तुमने उन वस्तुओं के कारण स्वयं को इससे वंचित कर लिया है जो तुम्हारे लिये हानिकारक हैं और जो तुम्हें क्षति पहुँचायेंगी, जबकि वह जो मेरे व्यक्तित्व का प्रकटीकरण है, हर प्रकार की क्षति से सदा मुक्त रहा है और रहेगा, और अब तक प्रकटित अथवा भविष्य में प्रकट होने वाली कोई भी हानि अन्ततः तुमको ही लौट जायेगी। ii.i

ऐसे लोगों की संख्या कितनी भी बड़ी क्यों न हो जो प्रत्येक शास्त्र में प्रवीण हैं, फिर भी यह उनके पावन शब्द का उनके द्वारा पालन ही है जो उनकी आस्था को निर्धारित करेगा, क्योंकि प्रत्येक शास्त्र का सार, सिवाय दिव्य नियमों के ज्ञान के तथा उसकी सुप्रसन्नता के समक्ष झुक जाने के अन्य कुछ नहीं है। II.1.

कोई भी सृजित वस्तु अपने स्वर्ग को तब तक प्राप्त नहीं कर सकती जब तक वह पूर्णता की अपनी उच्चतम निर्धारित अवस्था में प्रकट नहीं हो जाती। उदाहरण के लिये, यह स्फटिक, उस पत्थर के स्वर्ग को चित्रित करता है जिससे इसके तत्व की रचना हुई है। इसी प्रकार, स्वयं स्फटिक के स्वर्ग में भी विभिन्न चरण होते हैं...जब तक यह एक पत्थर था, यह मूल्यहीन था, परन्तु यदि यह एक माणिक्य की उत्कृष्टता प्राप्त कर लेता है - जो क्षमता

इसमें निहित है - तो यह प्रति कैरट कितने मूल्य का होगा ? इसी प्रकार प्रत्येक सृजित वस्तु के विषय में विचार करो।

परन्तु, मनुष्य का सर्वोच्च स्थान, प्रत्येक विधान में ईश्वर में आस्था के माध्यम से तथा उसके द्वारा जो प्रकट किया गया है उसे स्वीकार करने से प्राप्त होता है, न कि ज्ञान के माध्यम से; क्योंकि प्रत्येक देश में ऐसे ज्ञानी लोग हैं, जो विविध शास्त्रों में प्रवीण हैं। यह धन के माध्यम से भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है; क्योंकि यह भी उसी प्रकार प्रत्यक्ष है कि प्रत्येक देश में विभिन्न वर्गों के बीच ऐसे लोग हैं जिनके पास धन-सम्पत्ति है। अन्य क्षणिक वस्तुएँ भी ऐसी ही हैं।

अतः, सच्चा ज्ञान, ईश्वर का ज्ञान है और यह सिवाय प्रत्येक विधान में उसके अवतार को पहचानने के, अन्य कुछ नहीं है। न ही ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सब कुछ से निर्धन होने एवं उसके अतिरिक्त अन्य सब कुछ से पवित्र रहने के अतिरिक्त कोई धन है - यह एक ऐसी अवस्था है जिसे तब ही प्राप्त किया जा सकता है जब यह उसके प्रति व्यक्त हो जो उसके प्रकटीकरण का दिवास्रोत है। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को पूर्व के प्रकटीकरणों की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। यह किसी भी परिस्थिति में स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि, जैसा कि मनुष्य के लिये उचित है, उन्नीस वर्ष की आयु प्राप्त होने पर, उसे भ्रूण के रूप में अपने उद्भव के दिवस के लिये आभार प्रकट करना चाहिये। क्योंकि, यदि भ्रूण नहीं होता, तो वह अपनी वर्तमान अवस्था को कैसे प्राप्त करता ? इसी प्रकार, यदि आदम द्वारा सिखाया गया धर्म न होता, तो यह धर्म अपने वर्तमान चरण को प्राप्त नहीं होता। अतः उस अन्त तक जिसका कोई अन्त नहीं, तुम ईश्वर के धर्म के विकास पर विचार करो। V.4.

मुहम्मद की उद्घोषणा से अब तक बारह सौ सत्तर वर्ष बीत चुके हैं और प्रत्येक वर्ष अनगिनत लोगों ने ईश्वर के गृह (काबा) की परिक्रमा की। इस अवधि के अन्तिम वर्ष में, उसने, जो स्वयं इस गृह का संस्थापक है, तीर्थ के लिये प्रस्थान किया। हे महान ईश्वर ! वहाँ प्रत्येक पंथ के तीर्थयात्रियों का विशाल सम्मिलन था। फिर भी, उनमें से एक ने भी उसे नहीं पहचाना, यद्यपि उसने प्रत्येक को पहचान लिया - आत्मायें, जो उसके पूर्व के आदेश से कस कर जकड़ी हुई थीं। वह एकमात्र व्यक्ति जिसने उसे पहचाना और उसके साथ जिसने तीर्थ किया, वह है जिसके इर्द - गिर्द आठ वाहिद,[63] परिक्रमा करते हैं, जिसकी पूर्ण अनासक्ति के कारण तथा ईश्वर-इच्छा के प्रति जिसके सम्पूर्ण समर्पण के कारण, ईश्वर ने

देवदूतों के समक्ष उस पर गौरव किया। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे एक विशेष अनुग्रह का पात्र बनाया गया, नहीं, यह वह अनुग्रह है जो ईश्वर ने सभी मनुष्यों को प्रदान किया है, फिर भी उन्होंने स्वयं को इससे वंचित रखने का दुःख दिया है। उसके प्रकटीकरण के प्रथम वर्ष में यूसुफ की सुरा (अध्याय) पर की गयी टिप्पणी को व्यापक रूप से वितरित किया गया था। फिर भी, जब लोगों ने देखा की सह-समर्थक आगे नहीं आ रहे हैं, तो वे इसे स्वीकार करने में झिझकने लगे; जबकि उन्हें यह विचार नहीं आया कि स्वयं कुरआन, जिसमें आज असंख्य लोग निष्ठा रखते है, को भी अरबी जगत के अन्तरतम हृदय में प्रकट किया गया था, फिर भी, बाह्य रूप से, लगभग सत्ताइस वर्ष तक इसके सत्य को निष्ठावानों के नायक (इमाम अली) - उन पर ईश्वर की शान्ति विराजमान हो - के अतिरिक्त अन्य किसी ने स्वीकार नहीं किया। इमाम अली ने ईश्वर के उच्चतम प्रमाण द्वारा प्रस्तुत किये गये निर्णायक सबूतों के उत्तर में इसके सत्य को पहचान लिया और अपनी दृष्टि दूसरों पर केन्द्रित नहीं की। अतः पुनरूत्थान के दिवस में ईश्वर सभी से उसकी समझ के विषय में प्रश्न करेंगे, न कि उसके द्वारा दूसरों के पदचिह्नों का अनुसरण करने के विषय में। कितनी ही बार एक व्यक्ति पावन श्लोकों को सुनने पर विनम्रतापूर्वक झुक जाता और सत्य को स्वीकार कर लेता, जबकि उसका अगुआ ऐसा नहीं करता। अतः प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए इसके बजाय कि कोई और यह उसके लिये उठाये। वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, के आगमन के समय, विद्वानों में विशिष्टतम एवं मनुष्यों में दीनतम, दोनों का समान रूप से न्याय किया जायेगा। कितनी बार मनुष्यों में सर्वाधिक नगण्य ने सत्य को स्वीकार किया है, जबकि सर्वाधिक ज्ञानीजन परदों में लिपटे रहे हैं। अतः प्रत्येक विधान में कुछ लोग दूसरों के पदचिह्नों का अनुसरण करने के कारण अग्नि में प्रवेश कर बैठते हैं। iv18.

किसी व्यक्ति के लिये सम्पूर्ण बयान और बयान के विधान में लिखे गये समस्त ग्रंथों को लिखने से बेहतर है उसके श्लोकों में से मात्र एक श्लोक लिखना। क्योंकि उसके पावन लेख, जो कि अगले प्रकटीकरण तक बने रहेंगे, के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं को रद्द कर दिया जायेगा। और यदि कोई, सच्ची आस्था के साथ उस प्रकटीकरण का एक अक्षर मात्र भी अंकित करेगा तो उसका प्रतिदान, अतीत के सभी दिव्य लेखों तथा पूर्व के विधानों के दौरान जो कुछ भी लिखा गया है, वह अंकित करने से प्राप्त होने वाले प्रतिदान से भी अधिक महान होगा। इसी प्रकार तुम एक प्रकटीकरण से दूसरे में यह जानते हुए आगे बढ़ो

कि ईश्वर के ज्ञान में तुम्हारी प्रगति का कोई अन्त नहीं होगा, वैसे ही जैसे इसका कोई आरम्भ नहीं हो सकता। VII.13.

हे बयान के लोगों ! सावधान रहो; क्योंकि पुनरूत्थान के दिवस में पलायन करने के लिये किसी को कोई स्थान नहीं मिलेगा। वह अचानक दीप्त होगा और अपनी इच्छानुसार न्याय घोषित करेगा। यदि उसकी इच्छा होगी तो वह दीन-हीन को उदात्त और उदात्त को दीन बनने में वैसे ही समर्थ करेगा, जिस प्रकार उसने बयान में किया था, कदाचित तुम समझ सकते और उसके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं कर सकता। वह जो भी विहित करेगा, पूर्ण होगा और कुछ भी अपूर्ण नहीं रहेगा। VII.9.

चूँकि सभी मनुष्य उसके ईश्वरत्व एवं स्वामित्व के चिह्नों की छाया से उत्पन्न हुए हैं, वे सदा एक श्रेष्ठ और उच्च मार्ग लेने की ओर प्रवृत्त होते हैं। और चूँकि वे अपने प्रिय को पहचानने योग्य विवेकी दृष्टि से वंचित हैं वे उसके प्रति विनम्रता एवं दीनता प्रकट करने के अपने कर्त्तव्य में चूक जाते हैं। फिर भी, उनके जीवन के आरम्भ से अन्त तक, पूर्व के धर्म में स्थापित किये गये नियमों के अनुरूप, वे ईश्वर की उपासना करते हैं, धर्मनिष्ठतापूर्वक उसकी आराधना करते हैं, उसकी दिव्य वास्तविकता के समक्ष झुकते हैं और उसके उदात्त सत्व के प्रति समर्पण प्रदर्शित करते हैं। परन्तु, उसके प्रकटीकरण की घड़ी में वे सभी अपनी दृष्टि स्वयं की ओर फेर लेते हैं और इसलिये उसमें आवृत्त हो जाते हैं, क्योंकि वे व्यर्थकल्पनाओं के कारण उसे अपने जैसा ही एक साधारण व्यक्ति समझ बैठते हैं। ऐसी तुलना ईश्वर की महिमा से दूर है। वास्तव में, वह भव्य अस्तित्व भौतिक सूर्य के सदृश्य है, उसके वचन, किरणों के समान है और सभी अनुयायी, यदि वे उसमें सच्चा विश्वास करते हैं, तो ऐसे दर्पणों के समान हैं जिनमें वह सूर्य प्रतिबिम्बित होता है। अतः उनका प्रकाश एक प्रतिबिम्ब मात्र है। VII.15.

हे बयान के लोगों ! यदि तुम उसमें विश्वास करते हो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तो तुम अपने ही लिये विश्वास करते हो। वह सभी मनुष्यों से सदा स्वतंत्र रहा है और रहेगा। उदाहरण के लिये, यदि तुम सूर्य के समक्ष असंख्य दर्पणों को रखो, तो वे सभी सूर्य को प्रतिबिम्बित करेंगे तथा उसकी छवियाँ प्रस्तुत करेंगे, जबकि अपने आप में वह सूर्य इन दर्पणों से तथा इनके द्वारा उत्पन्न किये गये प्रकाश से पूर्णतया स्वतंत्र है। उस अनन्त

अस्तित्व के प्रकटीकरण के साथ इनके सम्बन्ध में इन अनिश्चित जीवों की सीमाएँ ऐसी ही हैं...

इस दिवस में, ईश्वर के संदेशवाहक के आदेश के अनुपालन में प्रत्येक वर्ष ईश्वर के पावन गृह तक तीर्थ करने वाले लोगों की संख्या सत्तर हज़ार से कुछ कम नहीं है। जिसने इस आदेश का विधान किया, स्वयं उसने सात वर्ष तक मक्का के पहाड़ों में शरण ली और यह, इसके बावजूद कि वह जिसने यह आदेश दिया है, इस आदेश से कहीं अधिक महान है। अतः ये सभी लोग जो इस समय तीर्थ के लिये जाते हैं, वे सच्चे ज्ञान के कारण ऐसा नहीं करते, अन्यथा उसकी वापसी के इस दिवस में, जो कि पूर्व के उसके विधान से अधिक शक्तिशाली है, वे उसके आदेश का अनुपालन करते। परन्तु, देखो अब क्या हुआ है। वे लोग जो उसके पूर्व के धर्म में विश्वास करने का दावा करते हैं, जो दिन के समय में और रात्रि बेला में उसके नाम पर उपासना में माथा टेकते हैं, अब उसे एक पर्वत पर स्थान दिया है, जबकि इनमें से प्रत्येक उसे पहचानने में अपना सम्मान समझता है। VII.15.

भक्ति के क्षणों में एकांत का आदेश देने का कारण यह है कि, तुम अपना सर्वोत्तम ध्यान ईश्वर के स्मरण को दे सको, कि सभी समय तुम्हारा हृदय उसकी चेतना से अनुप्राणित हो और एक आवरण के कारण अपने परम प्रियतम के आशीष से वंचित न रह जाओ। केवल शब्दों में ही अपनी जिह्वा से ईश्वर की प्रशंसा न करो, यदि तुम्हारा हृदय महिमा के शिखर एवं प्रार्थना के उस केन्द्र बिन्दु से जुड़ा नहीं है। इस प्रकार, यदि तुम पुनरूत्थान के दिवस में जीवित रहे, तो तुम्हारा हृदय-दर्पण उसकी ओर अभिमुख रहेगा जो सत्य का दिवास्रोत है; और जैसे ही उसका प्रकाश दीप्तिमान होगा, तुम्हारे हृदय में उसकी भव्यता तुरन्त प्रतिबिम्बित होगी क्योंकि वह समस्त अच्छाइयों का स्रोत है, और सब कुछ उसी को वापस लौट जाता है। परन्तु जब वह प्रकट होता है तब यदि तुमने चिन्तन में अपनी ओर मुहँ फेर लिया है, तो यह तुम्हें लाभ नहीं पहुँचायेगा, जब तक कि तुम उसके द्वारा प्रकट किये गये शब्दों से उसके नाम का उल्लेख नहीं करते, क्योंकि आगामी प्रकटीकरण में वही ईश्वर का स्मरण है, जबकि जो भक्ति तुम वर्तमान में अर्पित कर रहे हो, वह बयान के बिन्दु द्वारा निर्धारित की गयी है, परन्तु पुनरूत्थान के दिवस में जो देदीप्यमान हो कर चमकेगा, वह बयान के बिन्दु में प्रतिष्ठापित आन्तरिक वास्तविकता का प्रकटीकरण होगा - एक ऐसा

प्रकटीकरण जो इससे पहले आने वाले प्रकटीकरण से अधिक शक्तिशाली, अतुलनीय रूप से अधिक शक्तिशाली होगा। ix.4.

यह उचित है कि प्रत्येक प्रार्थना के पश्चात, सेवक को अपने माता-पिता के लिये ईश्वर से याचना करनी चाहिए कि वह उन्हें दया और क्षमा प्रदान करे। इस पर ईश्वर का आह्वान होगा। अपने माता-पिता के लिये तुमने जो माँगा है उसका हज़ारों हजार गुना प्रतिदान तुम्हें प्राप्त होगा।' वह धन्य है जो ईश्वर से प्रार्थना करते समय अपने माता-पिता का स्मरण करता है। वस्तुतः उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, शक्तिशाली, परम प्रियतम। VIII.16.

चूँकि यह भौतिक ढांचा उस आन्तरिक देह का सिंहासन है, अतः जो कुछ भी पहले के साथ घटित होता है, दूसरे को महसूस होता है। वास्तव में, वह जो आनन्द में हर्षित होता है एवं कष्ट से दुःखी होता है, देह का आन्तरिक मंदिर है, न की स्वयं देह। चूँकि यह देह वह सिंहासन है जिस पर आन्तरिक देह स्थापित है, अतः ईश्वर ने यह विहित किया है कि जहाँ तक सम्भव हो, देह को सुरक्षित रखा जाना चाहिए, ताकि ऐसा कुछ भी, जो घृणा उत्पन्न करता है, न अनुभूत हो। आन्तरिक देह को अपना भौतिक देह, जो इसका सिंहासन है, दिखायी देता है। अतः यदि दूसरे को सम्मानित किया जाता है, तो यह ऐसा ही है जैसे पहला इसका प्राप्तकर्ता है। इसी प्रकार इसका विपरीत भी सत्य है।

अतः, यह विहित किया गया है कि मृत देह के साथ अत्यधिक सम्मान एवं आदर के साथ बर्ताव करना चाहिए। V.12.

यदि तुम उसके प्रकट होने के समय, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, अपने कर्म बयान के बिन्दु के लिये करते हो, तो यह माना जायेगा कि वे ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य के लिये किये गये हैं, क्योंकि उस दिवस में बयान का बिन्दु अन्य कोई नहीं, बल्कि वह है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा...

यही कारण है, कि प्रत्येक प्रकटीकरण के आरम्भ में एक विशाल जनसमूह जिसे यह खुशफहमी होगी कि उनके कर्म ईश्वर के लिये हैं, डूब जायेगी और अधर्मी हो जायेगी और यह समझ भी नहीं पायेगी, सिवाय उनके जिन्हें वह अपने आदेश से मार्गदर्शित करता है।

मनुष्य के लिये, पूरब और पश्चिम की सभी वस्तुओं के स्वामित्व से बेहतर है एक आत्मा का मार्गदर्शन करना। इसी प्रकार वह जो मार्गदर्शित है, उसके लिये धरती पर विद्यमान सभी वस्तुओं से बेहतर है मार्गदर्शन, क्योंकि इस मार्गदर्शन के कारण वह अपनी मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में प्रवेश को प्राप्त होगा, जबकि निम्न संसार की वस्तुओं के कारण, अपनी मृत्यु के पश्चात वह अपने परिणाम को प्राप्त करेगा। अतः ईश्वर चाहता है कि वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, के शब्दों की शक्ति के माध्यम से सभी मनुष्यों को सही मार्गदर्शन प्राप्त होना चाहिये, परन्तु, वे जो दम्भी हैं, स्वयं को मार्गदर्शित नहीं होने देंगे। वे सत्य से वंचित रहेंगे, कुछ अपने ज्ञान के कारण, कुछ अन्य अपने यश और शक्ति के कारण, तथा कुछ अन्य उनके स्वयं के कारणों से, जिनमें एक भी, मृत्यु के समय उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचायेंगे।

अत्यंत सावधान रहो, ताकि उसके नेतृत्व में जो दिव्य मार्गदर्शन का स्रोत है, तुम सभी अपने कदमों को उस सेतु पर सही दिशा की ओर ले जाने में समर्थ बन सको जो तलवार से भी पैना और केश से भी सूक्ष्म है, ताकि अपने जीवन के आरम्भ से अन्त तक तुमने ईश्वर के प्रेम के निमित्त जो कुछ भी किया है, वह सब कदाचित एकाएक तुम्हारे ज्ञान के बिना, ऐसे कृत्यों में परिवर्तित न हो जाये जो ईश्वर की दृष्टि में, स्वीकार करने के योग्य न हों। वस्तुतः ईश्वर जिसे चाहे उसे पूर्ण दृढ़ता के पथ पर मार्गदर्शित करता है। VII.2.

सभी उत्सुकतापूर्वक उसके प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, फिर भी चूँकि उनके आन्तरिक नेत्र उसकी ओर केन्द्रित नहीं हैं, अतः उसका दुःखी होना अवश्यम्भावी है। ईश्वर के संदेशवाहक - उन पर ईश्वर के आशीर्वाद विराजमान हों - के प्रकरण में, कुरआन के प्रकटीकरण के पूर्व, सभी उसकी धर्मपरायणता एवं श्रेष्ठ सदगुणों का साक्ष्य देते थे। अब, कुरआन के प्रकटीकरण के पश्चात, उसे देखो। उनका इतना घोर अपमान किया गया, कि इसका वर्णन करने में लेखनी भी लज्जित है। इसी प्रकार बयान के बिन्दु को देखो। उनके उद्देश्य की उद्घोषणा के पूर्व उनके परिचितों के समक्ष उनका आचरण स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष है। अब, उनके प्रकटीकरण के पश्चात, यद्यपि उन्होंने वर्तमान समय तक विभिन्न विषयों पर लगभग पाँच सौ हज़ार श्लोक प्रकट किये हैं, फिर भी, देखो कैसे-कैसे मिथ्यापवाद उच्चरित किये जा रहे हैं, इतने अशोभनीय कि उनके उल्लेख मात्र से यह लेखनी लज्जा से

आक्रान्त हो उठी है। परन्तु, यदि सभी मनुष्य ईश्वर के आदेशों का पालन करते, तो उस दिव्य वृक्ष को कोई दुःख न होता। VI.11.

वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उसके कार्य सूर्य की भाँति हैं, जबकि मनुष्यों के कर्म, यदि ये ईश्वर की सुप्रसन्नता के अनुरूप हैं, तो तारों के अथवा चंद्रमा के समान हैं।... अतः यदि बयान के अनुयायी, उसके प्रकटीकरण के समय, उसके नियमों का पालन करते हैं जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, एवं स्वयं को तथा स्वयं के कार्यों को, सूर्य के प्रकाश से प्रभावित होने वाले सितारे समझते हैं, तो वे अपने अस्तित्व के फल प्राप्त करेंगे; अन्यथा 'सितारे' की उपाधि से वे वंचित रह जायेंगे। इसके विपरीत अस्तित्व का फल उन्हें मिलेगा जो उसमें सच्चा विश्वास करते हैं, जो दिन के समय फीके पड़ जाते हैं और रात्रि में नवजीवन के प्रकाश से दमक उठते हैं।

यद्यपि इसका फल ऐसा ही है, यदि पुनरूत्थान के दिवस में कोई इसका पालन करे। समस्त ज्ञान एवं समस्त सद्कर्मों का सार यही है, यदि कोई कदाचित इसे प्राप्त करे। यदि दुनिया के लोगों ने अपनी दृष्टि इस सिद्धान्त पर केन्द्रित की होती, तो किसी भी विधान के आरम्भ में, दिव्य प्रकटीकरण का कोई भी व्याख्याता उन्हें अस्तित्वहीन वस्तुएँ कभी न समझता। परन्तु, सत्य तो यह है कि रात्रिबेला के दौरान प्रत्येक व्यक्ति वही प्रकाश देखता है जो वह स्वयं अपनी स्वयं की क्षमतानुसार फैलाता है, इस बात से विस्मृत हो कर, कि पौ फटने पर सूर्य की चकाचैंध कर देने वाली भव्यता के समक्ष, यह प्रकाश क्षीण हो जायेगा एवं चरम शून्य में बदल जायेगा।

दुनिया के लोगों का प्रकाश उनका ज्ञान एवं वाणी है; जबकि 'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' के प्रतापशाली स्पंदन से फैलने वाली भव्यता, उसके शब्द हैं, जिनकी शक्ति से वह अस्तित्व के संसार को समाप्त कर, इसे स्वयं से सम्बद्ध करते हुए, अपने अधिकार में रखता है, फिर ईश्वर के मुखांग स्वरूप, उसके दिव्य प्रकाश के उदात्त स्रोत के रूप में वह महिमावंत एवं प्रतापशाली उद्घोषित करता है कि 'वस्तुतः, मैं ईश्वर हूँ, मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है; सत्य ही, मेरे अतिरिक्त अन्य सभी मेरे प्राणी

हैं। कहो, हे मेरे प्राणियों ! तुम्हें केवल एक मात्र मुझसे ही डरना होगा'। VIII.1.

तुम यह जान लो कि बयान में पवित्रता को ईश्वर की निकटता प्राप्त करने का सर्वाधिक स्वीकार्य माध्यम एवं सभी कर्मों में अत्यंत सराहनीय समझा जाता है। अतः अपने कानों को पवित्र कर लो ताकि तुम ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई उल्लेख न सुनो, और अपने नेत्रों को पवित्र कर लो, ताकि तुम ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कुछ न देखो, अपने अन्तःकरण को निर्मल कर लो, ताकि यह ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कुछ महसूस न करे, और अपनी जिह्वा को शुद्ध कर लो, ताकि यह ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई उद्घोष न कर सके, और अपने हाथों को स्वच्छ कर लो, ताकि यह ईश्वर के शब्दों के अतिरिक्त अन्य कुछ न लिख सके और अपने ज्ञान को परमार्जित कर लो, ताकि यह ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कुछ न समझे, और अपना हृदय पवित्र कर लो, ताकि यह ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई इच्छा न रखे, और इसी प्रकार अपने सभी कर्मों एवं कार्य-व्यवस्थाओं को पवित्र कर लो, ताकि तुम्हारा पोषण शुद्ध प्रेम के स्वर्ग में हो सके, और तुम उस पवित्रता से विभूषित हो जाओ जो उसे सर्वाधिक प्रिय है, कदाचित तुम उसकी उपस्थिति को प्राप्त कर सको जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, और उन सब से अलग हो जाओ जो उससे विमुख हो गये हैं और उसका समर्थन नहीं करते। इस प्रकार तुम ऐसी पवित्रता प्रकट करोगे जो तुम्हें लाभ पहुँचायेगी।

तुम यह जान लो, कि वह प्रत्येक कर्ण, जो सच्ची आस्था के साथ उसके शब्दों पर ध्यान देता हैं, अग्नि से संरक्षित रहेगा। अतः, अनुयायी, उसे पहचानने के माध्यम से, उसके दिव्य शब्दों की उत्कृष्ट विशिष्टता को समझ सकेगा, सम्पूर्ण हृदय से, दूसरों की अपेक्षा उसे चुनेगा और उनके प्रति अपना हृदय लगाने से इंकार कर देगा जो उसमें अविश्वास करते हैं। अगले जीवन में कोई व्यक्ति जो कुछ भी प्राप्त करता है, वह मात्र इस आस्था का फल है। सत्यतः, कोई भी मनुष्य, जो सच्ची आस्था के साथ सम्पूर्ण हृदय से उसके शब्दों का पाठ करता है, निश्चित रूप से स्वर्ग का पात्र है; और वह जिसका अन्तःकरण सच्ची आस्था के साथ उसके शब्दों की साक्षी देता है, स्वर्ग में निवास करेगा और ईश्वर की उपस्थिति को प्राप्त करेगा; और वह जिसकी जिह्वा सच्ची आस्था के साथ उसके शब्दों को उच्चारित करती है, उसका निवास स्वर्ग में होगा, जहाँ, उस सदाजीवी ईश्वर की प्रशंसा एवं महिमागान से वह हर्षोन्मादित हो उठेगा, जिसकी महिमा के प्रकटीकरण कभी समाप्त नहीं होते और जिसकी पावनता की नवजीवनदायी श्वांस कभी चूकती नहीं है। प्रत्येक हाथ जो सच्ची आस्था के साथ उसके शब्दों को लिखता है, इस लोक एवं आने वाले लोक में ईश्वर द्वारा उन वस्तुओं

से भर दिया जायेगा जो अत्यंत मूल्यवान हैं; और प्रत्येक हृदय जो उसके शब्दों को कंठस्थ करता है - यदि वह अनुयायी है - तो ईश्वर उसके हृदय को अपने प्रेम से भर देगा; और प्रत्येक हृदय जो उसके शब्दों से अत्यधिक प्रेम करता है, तथा उसके नामोच्चारण पर स्वयं में सच्ची आस्था के चिह्न प्रदर्शित करता है, और इन शब्दों का उदाहरण है, 'ईश्वर के उल्लेख पर उनके हृदय विस्मय से पुलकित हो उठते हैं'[64] वह हृदय दिव्य अनुग्रह की दृष्टि का पात्र बन जायेगा और पुनरूत्थान के दिवस में ईश्वर द्वारा अत्यंत प्रशंसित होगा। IX.10

'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' के प्रकट होने के समय यदि धरती के सभी निवासी उस वस्तु की साक्षी देते हैं जिसके विषय में उसकी' साक्षी भिन्न है, तो 'उनकी' गवाही सूर्य के समान होगी, जबकि अन्य की किसी ऐसे दर्पण में दिखायी देने वाले झूठे प्रतिबिम्ब की भाँति होगी जो सूर्य की ओर अभिमुख नहीं है क्योंकि यदि यह कुछ और होता, तो न का प्रमाण उसके' प्रमाण का एक यथार्थ प्रतिबिम्ब होता।

मैं ईश्वर के पावनतम सार की सौगंध खाता हूँ कि 'उसके' द्वारा उच्चारित किये गये शब्दों की मात्र एक पंक्ति, धरती के सभी निवासियों के द्वारा उच्चारित किये गये असंख्य शब्दों से अधिक उदात्त है। नहीं, ऐसी तुलना करने के लिये मैं क्षमा माँगता हूँ। दर्पण में सूर्य के प्रतिबिम्ब की तुलना, दृश्य आकाश में उस सूर्य की अद्भुत किरणों के साथ कैसे की जा सकती है ? एक का स्थान अस्तित्वहीनता का है, जबकि, ईश्वर के न्याय की सौगंध - उसका नाम स्तुत्य एवं पावन हो, दूसरे का स्थान सभी वस्तुओं की वास्तविकता का है.....

उसके प्रकटीकरण के दिवस में यदि कोई सम्राट अपनी स्वयं की सत्ता का उल्लेख करता है, तो यह वैसा ही होगा मानो एक दर्पण यह कह कर सूर्य को चुनौती दे रहा होः 'यह प्रकाश मुझ में है'। ऐसा ही माना जायेगा यदि उसके दिवस में कोई व्यक्ति ज्ञान का व्याख्याता होने का दावा करता है, अथवा जो धन-सम्पत्ति का मालिक है अपने प्रभाव का प्रदर्शन करता है, या यदि कोई शक्तिशाली व्यक्ति अपने स्वयं के प्रभुत्व का प्रदर्शन करता है, या वह जो वैभव से विभूषित हुआ है, अपने यश का दिखावा करता है। नहीं, ऐसे लोग अपने साथियों के उपहास के पात्र बन जाते हैं और उसके द्वारा वे कैसे आँके जायेंगे, जो सत्य का सूर्य है! III.12.

'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' से प्रश्न करने की अनुमति किसी को भी नहीं है, सिवाय उनके जो उसके लायक हो, क्योंकि उसका स्थान दिव्य प्रकटीकरण के सत्व का है... संसार में उदारता के जितने भी प्रमाण हैं, केवल उसी की उदारता की एक छवि हैं; तथा प्रत्येक वस्तु अपने अस्तित्व के लिये उसके अस्तित्व की ऋणी है... आरम्भ से लेकर अन्त तक, बयान उसके समस्त गुणों का भण्डार है तथा उसकी अग्नि एवं उसका प्रकाश, दोनों ही का खज़ाना है। यदि कोई प्रश्न पूछने का इच्छुक है, तो उसे केवल लिखित में ही ऐसा करने की अनुमति दी जाती है, ताकि उसके लिखित उत्तर से, वह भरपूर ज्ञान प्राप्त कर सके तथा यह उसके लिये अपने प्रियतम की ओर से एक चिह्न स्वरूप हो। परन्तु, किसी को भी ऐसा कुछ नहीं पूछना चाहिए जो उसके उदात्त स्थान के लिये अयोग्य हो, यदि कोई व्यक्ति, माणिक के किसी व्यापारी से भूसे के मूल्य के विषय में प्रश्न करेगा तो वह कितना अज्ञानी माना जायेगा और ऐसा करना कितना अस्वीकार्य होगा। दुनिया के उच्चतम पद के लोगों के प्रश्न भी इसी प्रकार उसकी उपस्थिति में अस्वीकार्य होंगे, सिवाय उन शब्दों के, जो अपने प्रकटीकरण के दिवस में वह अपने स्वयं के विषय में उच्चारित करेगा।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जो अपनी भ्रमित अवधारणाओ से प्रेरित होकर, उसे लिखते हैं और उसके विषय में प्रश्न करते हैं जो बयान में प्रकट किया गया है, और वह उन्हें यह कहते हुए ऐसे शब्दों में उत्तर देता है जो उसके स्वयं के नहीं हैं अपितु दैवी प्रेरणा के हैं: 'वस्तुतः मैं ईश्वर हूँ; मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, मैंने सभी वस्तुओं को अस्तित्व प्रदान किया है, मैंने अतीत में दिव्य संदेशवाहकों को उठ खड़ा किया है और उन पर ग्रंथ प्रकट किये हैं। सावधान रहो कि तुम उस ईश्वर के अतिरिक्त - जो मेरा स्वामी और तुम्हारा स्वामी है - किसी अन्य की उपासना न करे। यह वास्तव में एक असंदिग्ध सत्य है। फिर मेरे प्रति भी यह ऐसा ही होगा; यदि तुम मुझमें विश्वास करते हो, तो तुम अपनी ही आत्मा का भला करोगे और यदि तुम मुझमें विश्वास नहीं करते, न ही उसमें जो ईश्वर ने मुझ पर प्रकट किया है, तो तुम मानो एक आवरण के द्वारा उससे विलग हो जाओगे क्योंकि इससे पहले भी मैं तुमसे स्वतंत्र था और इसके बाद भी स्वतंत्र रहूँगा। अतः हे ईश्वर के प्राणियों, तुम्हारे लिये यही उचित है कि तुम अपनी सहायता स्वयं करो और मेरे द्वारा प्रकट किये गये श्लोकों में विश्वास करो...' III.13.

पुनरूत्थान के दिवस तक, जो कि उसका दिवस है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, 'बयान' ईश्वर का अचूक तुला बना रहेगा। जो कोई भी, उसके अनुसार आचरण करता है जो इसमें प्रकट किया गया है, वह उसकी स्वीकृति की छत्रछाया के स्वर्ग में निवास करेगा तथा ईश्वर की उपस्थिति में सर्वोदात्त अक्षरों में गिना जायेगा; जबकि, जो भी इस पथ से विमुख होगा, चाहे यह एक क्षणमात्र जितना ही क्यों न हो, वह अग्नि के हवाले हो जायेगा तथा प्रतिवाद के अंधकार तले एकत्र किया जायेगा। कुरआन में भी यह सत्य इसी प्रकार प्रकट किया गया है जहाँ कई स्थानों पर ईश्वर ने यह निर्धारित किया है कि जो भी उसके द्वारा नियत की गयी सीमाओं के विरुद्ध न्याय पारित करेगा, उसे अविश्वासी माना जायेगा...।

इन दिनों में ऐसे कितने कम लोग हैं जो कुरआन में निर्धारित किये गये आदर्शों का पालन करते हैं। नहीं, ऐसे लोग अब कहीं नहीं मिलते, सिवाय वे जिन्हें ईश्वर चाहता है। फिर भी, यदि कोई ऐसा व्यक्ति है भी, तो उसके सद्कर्म उसे कोई लाभ नहीं पहुँचायेंगे, यदि वह बयान में प्रकटित आदर्शों का पालन करने में विफल रहा है; वैसे ही जैसे ईसाई पादरियों के सद्कर्म उन्हें कोई लाभ न पहुँचा सके, क्योंकि ईश्वर के संदेशवाहक - ईश्वर के आशीर्वाद उन पर विराजमान हों - के प्रकट होने के समय, उन्होंने स्वयं को बाईबिल के नियमों तक सीमित कर लिया।

यदि कुरआन में दिए गये दिव्य मापदण्ड का वास्तव में पालन किया जाता, तो उसके विरुद्ध प्रतिकूल निर्णय घोषित नहीं किये जाते जो दिव्य सत्य का 'वृक्ष' है। जैसा कि प्रकट किया गया हैः 'चाहे आसमान फट जाये और धरती टुकड़े-टुकड़े हो जाये, और पर्वत बिखर जाये।'[65] और फिर भी उनके हृदय इन पर्वतों से कितने अधिक सख्त रहे होंगे कि अप्रभावित रह गये ! सत्य ही, ईश्वर की दृष्टि में उसकी सुप्रसन्नता प्राप्त करने से अधिक यशस्वी कोई स्वर्ग नहीं है। II.6.

उस एक सत्य ईश्वर की तुलना सूर्य से की जा सकती है और विश्वासी की एक दर्पण से। जैसे ही दर्पण को सूर्य के समक्ष रखा जाता है, यह उसके प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने लगता है। एक अविश्वासी की तुलना एक पत्थर से की जा सकती है। इसे कितनी भी देर तक सूर्य के प्रकाश के सामने रखा जाये, यह सूर्य को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता। अतः, पहला बलिदान के रूप में अपना जीवन न्योछावर कर देता है, जबकि दूसरा जो भी करता है, वह

ईश्वर के विरुद्ध होता है। वास्तव में, यदि ईश्वर चाहे तो, वह पत्थर को भी दर्पण में परिवर्तित करने में सक्षम हैं परन्तु व्यक्ति स्वयं अपनी अवस्था से ही सन्तुष्ट रहता है। यदि वह स्फटिक बनना चाहता, तो ईश्वर स्फटिक का रूप धारण करने में उसकी सहायता करता। क्योंकि उस दिवस में जो भी कारण एक विश्वासी को उसमें विश्वास करने के लिये प्रेरित करता है, वही एक अविश्वासी के समक्ष भी उपलब्ध होता है। परन्तु, जब दूसरा स्वयं को आवरणों से आवृत कर लेता है, तो वही आवरण उसे विलग कर देते हैं। अतः, जैसा कि आज स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष है, वे जिन्होंने अपने मुखड़े उस एक सत्य ईश्वर की ओर उन्मुख किये हैं, उन्होंने बयान के कारण उसमें विश्वास किया है, जबकि वे जो एक पर्दे से आवष्त हैं इसी के कारण वंचित रखे गये हैं। VI.4

मैं ईश्वर के पावनतम सत्व की सौगंध खाता हूँ - उदात्त एवं प्रतापशाली है वह - कि 'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' के प्रकटीकरण के दिवस में, बयान का एक हज़ार बार किया गया पाठ, उसके एक श्लोक के पाठ की बराबरी नहीं कर सकता जिसे ईश्वर प्रकट करेगा।

ज़रा विचार करो और यह देखो कि इस्लाम में प्रत्येक वस्तु की मूलभूत एवं अनन्त उत्पत्ति का वर्णन ईश्वर के ग्रंथ में है। इसी प्रकार उसके अवतरण के दिवस के विषय में विचार करो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा - वह जिसके हाथों में प्रमाणों का स्रोत है - और भ्रान्तिपूर्ण विषयों को लेकर स्वयं को उससे दूर न होने दो, क्योंकि वह अपरिमेय रूप से इन से उदात्त है, क्योंकि प्रत्येक प्रमाण ईश्वर के उस ग्रंथ से प्राप्त होता है जो स्वयं में सर्वोच्च प्रमाण है, उस जैसा प्रमाण प्रस्तुत करने में मनुष्य असमर्थ है। यदि तर्क, व्याकरण, विज्ञान, विधान, न्यायशास्त्र तथा अन्य ऐसे विषयों में प्रवीण सैकड़ों ज्ञानीजन, ईश्वर के ग्रंथ से विमुख हो जाते हैं, तो उन्हें अविश्वासी ही घोषित किया जायेगा। अतः उन सर्वोच्च प्रमाणों में ही फल है, न कि अन्य वस्तुओं में। तुम यह निश्चित रूप से जान लो कि बयान में प्रकट किये गये प्रत्येक अक्षर का उद्देश्य है केवल उसके प्रति समर्पण जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, क्योंकि यह वही है जिसने अपने स्वयं के प्रकटीकरण के पूर्व बयान को प्रकट किया है। V.8.

इस प्रकटीकरण में ब्रह्माण्ड के स्वामी ने बयान के बिन्दु को अपने शक्तिशाली वचन एवं देदीप्यमान चिह्न प्रदान करने की कृपा की है और सभी सृजित वस्तुओं के लिये इन्हें अपना अद्वितीय प्रमाण निर्धारित किया है। यदि धरती के सभी निवासी मिलकर एकत्र हो जायें, तब भी वे उन श्लोकों जैसा एक भी श्लोक प्रस्तुत करने में असमर्थ रहेंगे, जो ईश्वर ने

बयान के बिन्दु की जिह्वा से प्रवाहित किये हैं। यदि कोई भी जीवित प्राणी शांत रह कर मनन करे तो वह असंदिग्ध रूप से यह समझ लेगा कि ये श्लोक मनुष्य के कार्य नहीं है अपितु इनका श्रेय केवल उस एक अतुलनीय ईश्वर को दिया जाना चाहिए, जो उसकी जिह्वा से जब चाहे, इन्हें प्रवाहित करवाता है और उसने सिवाय ईश्वर की आदि इच्छा के केन्द्र बिन्दु के अतिरिक्त अन्य किसी के माध्यम से न तो इन्हें प्रकट किया है, न करेगा। यह वही है, जिसके विधान के माध्यम से दिव्य संदेशवाहक अवतरित किये जाते हैं तथा दिव्य ग्रंथ भेजे जाते हैं। यदि यह कार्य मनुष्य सम्पादित कर सकता, तो कुरआन के प्रकटीकरण से लेकर बयान के प्रकटीकरण तक, बारह सौ सत्तर वर्ष की अवधि के दौरान अवश्य ही कोई न कोई कम से कम एक श्लोक तो प्रस्तुत कर ही चुका होता। परन्तु, सभी मनुष्यों ने स्वयं को असमर्थ पाया और ऐसा करने में पूर्णतया असफल है, यद्यपि उन्होंने ईश्वर के शब्द की ज्योति को अपनी प्रबल शक्ति से बुझा देने के प्रयास किये हैं। II.1

तुम देखते हो कि तीर्थ एवं परिक्रमा के लिये प्रतिवर्ष मक्का जाने वाले लोगों की संख्या कितनी बड़ी है, जबकि वह जिसके शब्द की शक्ति के माध्यम से वह काबा (मक्का का पवित्रस्थल) आराधना का पात्र बना है, इस पर्वत पर परित्यक्त कर दिया गया है। वह अन्य कोई नहीं, स्वयं ईश्वर का संदेशवाहक है, क्योंकि ईश्वर के प्रकटीकरण की तुलना सूर्य से की जा सकती है। इसके उद्गम कितने ही असंख्य क्यों न हो, फिर भी सूर्य केवल एक ही है तथा सभी प्राणियों का जीवन इस पर निर्भर करता है। यह स्पष्ट एवं प्रमाणित है कि समस्त पूर्ववर्ती विधानों का उद्देश्य ईश्वर के संदेशवाहक मुहम्मद के आगमन के लिये मार्ग प्रशस्त करना रहा। मुहम्मदी विधान सहित, इन सभी का, बारी-बारी से, उद्देश्य रहा है काइम द्वारा उद्घोषित किया जाने वाला प्रकटीकरण। इसी प्रकार इस प्रकटीकरण के साथ-साथ, इसके पूर्ववर्ती प्रकटीकरणों का मूल उद्देश्य रहा है उसके धर्म के आगमन की उद्घोषणा करना जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। और यही इस धर्म का उद्देश्य है कि - उसका धर्म जिसे ईश्वर प्रकट करेगा-पूर्व के सभी प्रकटीकरणों के साथ-साथ उसका प्रकटीकरण भी करे जो इसके पश्चात आयेगा। और परवर्ती का उद्देश्य, जो कि पूर्व के सभी प्रकटीकरणों से कुछ कम नहीं है, उस प्रकटीकरण के लिये मार्ग प्रशस्त करना है जो भविष्य में आयेगा। सत्य के सूर्य के उदय और अस्तगमन की प्रक्रिया इसी प्रकार जारी रहेगी - एक ऐसी प्रक्रिया जिसका कोई आरम्भ नहीं था और जिसका कोई अन्त नहीं होगा।

उसका कल्याण होगा जो प्रत्येक युग में उस युग के लिये ईश्वर के उद्देश्य को पहचान लेता है तथा जो अपनी दृष्टि अतीत की ओर फेर कर वर्तमान से वंचित नहीं रहता। IV.12.

इस अध्याय का सार यह है, पुनरूत्थान के दिवस से अभिप्राय है दिव्य वास्तविकता के वृक्ष का प्रकट होना, परन्तु ऐसा देखने में नहीं आया कि शिया इस्लाम का कोई भी अनुयायी पुनरूत्थान के दिवस का अर्थ समझ सका हो; बल्कि उन्होंने ऐसी अवास्तविक वस्तु की कल्पना की है जिसके साथ ईश्वर का कोई सम्बन्ध नहीं है। ईश्वर की दृष्टि में तथा उनके अनुसार जो कि दिव्य रहस्यों में दक्ष हैं, पुनरूत्थान के दिवस से जो अभिप्राय है, वह यह है कि, किसी भी काल में एवं किसी भी नाम से उस दिव्य वास्तविकता के वृक्ष के प्रकट होने के समय से लेकर उसके अंतर्ध्यान होने के क्षण तक का समय यही पुनरूत्थान का दिवस है।

उदाहरण के लिये, ईसा मसीह - उन पर शान्ति विराजमान हो - के मिशन के आरम्भ से उनके स्वर्गारोहण के दिवस तक, मूसा का पुनरूत्थान काल था। क्योंकि उस कालावधि में, ईश्वर का प्रकटीकरण उस दिव्य वास्तविकता के माध्यम से दीप्त हुआ जिसने उन सभी को अपने शब्द से पुरस्कृत किया जिन्होंने मूसा में विश्वास किया और उन सभी को अपने शब्द से दण्डित किया जिन्होंने विश्वास नहीं किया; क्योंकि उस दिवस के लिये ईश्वर का प्रमाण वह था, जिसकी पुष्टि उन्होंने दृढ़तापूर्वक बाईबिल में की थी। और ईश्वर के संदेशवाहक - उन पर ईश्वर के आशीर्वाद विराजमान हो - के प्रकटीकरण के आरम्भ से उनके स्वर्गारोहण के दिवस तक ईसा मसीह - उन पर शान्ति विराजमान हो - का पुनरूत्थान काल था जिसमें दिव्य वास्तविकता का वृक्ष, मुहम्मद के व्यक्तित्व में प्रकट हुआ, उन सभी को अपने शब्द से पुरस्कृत करते हुए जो ईसा मसीह में विश्वास करते थे तथा इन सभी को अपने शब्द से दण्डित करते हुए, जो उनमें विश्वास नहीं करते थे। और, जैसा कि कुरआन में भविष्यवाणी की गयी है, बयान के वृक्ष के प्रकट होने के क्षण से उसके अंतर्ध्यान तक, ईश्वर के संदेशवाहक का पुनरूत्थान काल है; जिसका आरम्भ हिजरी सन 1260 में जमादियुल-अव्वल की पाँच तारीख की संध्या को दो घंटे और ग्यारह मिनट बीत जाने पर हुआ,[66] जो कि मुहम्मद के मिशन की उद्घोषणा का 1270 वाँ वर्ष है। यह कुरआन के पुनरूत्थान काल के दिवस का आरम्भ है और दिव्य वास्तविकता के वृक्ष के अंतर्ध्यान तक कुरआन का नवजीवन है। प्रत्येक वस्तु की पूर्णता का चरण तब प्राप्त होता है जब इसका पुनरूत्थान काल आरम्भ होता है। इस्लाम धर्म की पूर्णता इस प्रकटीकरण के आरम्भ में निष्पादित हुई; और इस धर्म के उदय होने से लेकर इसके अस्तगमन तक, इस्लाम के वृक्ष के फल, वे जो भी

हों, प्रत्यक्ष हो जायेंगे। बयान का पुनरूत्थान काल उसके प्रकट होने पर आरम्भ होगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। क्योंकि आज बयान बीज की अवस्था में है; 'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' के प्रकटीकरण के आरम्भ में इसकी आभा पूरी तरह प्रत्यक्ष हो जायेगी। उसे इसलिये प्रकट किया जायेगा कि उसके द्वारा रोपे गये वृक्षों के फलों को वह एकत्र कर सके; इस प्रकार काइम (वह जो उठ खड़ा होगा) जो मोहम्मद (ईश्वर की कृपा विराजमान हो उन पर) के वंशज का प्रकटीकरण वैसा ही है जैसा ईश्वर के संदेशवाहक का उनके अवतरण का उद्देश्य उन फलों को एकत्र करने का था जिनके बीजों को कुरआन के श्लोकों के माध्यम से मोहम्मद ने लोगों के दिलों में रोपा था। इस्लाम के फल केवल उसके (काइम के) प्रति निष्ठा व्यक्त किये बिना एवं उसमें विश्वास किये बिना एकत्र नहीं किये जा सकते हैं। फिर भी, वर्तमान समय में, केवल प्रतिकूल प्रभाव के परिणाम प्राप्त हुए हैं; क्योंकि यद्यपि वह इस्लाम के अन्तरतम हृदय में प्रकट हुआ है और सभी लोग उससे (काइम से) अपने सम्बन्ध के कारण उसमें विश्वास प्रदर्शित करते हैं, फिर भी उन्होंने अन्यायपूर्वक उसे माहकू के पर्वत में परित्यक्त कर दिया है, और यह, इसके बावजूद कि ईश्वर ने सभी लोगों से, पुनरूत्थान के दिवस के आगमन का वादा किया है क्योंकि उस दिवस में सभी लोग ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे और उसकी उपस्थिति को प्राप्त होंगे; जिसका अर्थ है, उसके समक्ष उपस्थित होना तथा उसकी उपस्थिति को प्राप्त होना जो दिव्य वास्तविकता का वृक्ष है; क्योंकि ईश्वर के पावनतम सार के समक्ष उपस्थित होना सम्भव नहीं है, न ही उससे मिलन के प्रयत्न की कल्पना ही की जा सकती है। उसके समक्ष उपस्थित होने तथा उससे मिलने के विषय में जो साध्य है, वह है प्राथमिक वृक्ष को प्राप्त होना। II.7

ईश्वर द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमाणों की तुलना, धरती के लोगों द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमाणों से नहीं की जा सकती; और संदेह की परछायी से परे, ईश्वर द्वारा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया सिवाय उसके माध्यम से जो उसका सर्वोच्च प्रमाण नियुक्त किया गया है। साथ ही, प्रकटित श्लोकों का प्रमाण मात्र ही अपने आप में धरती की समस्त वस्तुओं की शक्तिहीनता को निर्णायक रूप से प्रदर्शित करता है, क्योंकि यह वह प्रमाण है जो ईश्वर की ओर से आया है और पुनरूत्थान के दिवस तक कायम रहेगा।

और यदि कोई इस वृक्ष के प्रकटीकरण पर विचार करे, तो वह बगैर किसी सन्देह के, ईश्वर के धर्म की भव्यता का साक्ष्य देगा। क्योंकि यदि वह जिसके जीवन के मात्र चौबीस वर्ष बीते हैं, और जो उन विषयों से वंचित है जिसमें सभी विद्वान हैं, अब इस तरह बगैर

पूर्वचिन्तन अथवा हिचकिचाहट के, श्लोकों का उच्चारण करता है, पाँच घँटे की अवधि के दौरान कलम को रोके बगैर प्रार्थना के एक हज़ार श्लोक लिखता है, तथा ईश्वर का सच्चा ज्ञान एवं उसके अस्तित्व की एकता जैसे उदात्त विषयों पर इस प्रकार व्याख्याएँ एवं प्रबन्ध प्रस्तुत करता है जो आचार्य एवं दार्शनिक स्वीकार करते हैं कि उनकी समझ शक्ति से परे हैं, तो कोई सन्देह नहीं है कि जो कुछ भी प्रकट किया गया है, वह दैवी प्रेरणा से है। जीवन भर के उनके परिश्रमपूर्ण अध्ययन के बावजूद, ये धर्मगुरु, अरबी की एक पंक्ति लिखने में कितनी कठिनाई महसूस करते हैं ! फिर भी, ऐसे प्रयासों के परिणाम, मात्र ऐसे शब्द हैं जो उल्लेख करने योग्य नहीं हैं। यह सब कुछ लोगों के लिये प्रमाण हैं; अन्यथा ईश्वर का धर्म इतना शक्तिसम्पन्न एवं यशस्वी है कि इसके स्वयं के माध्यम के अतिरिक्त इसे कोई भी किसी अन्य माध्यम से नहीं समझ सकता; बल्कि अन्य सब कुछ इसी के द्वारा समझा जाता है। II.1.

ईश्वर की स्तुति हो कि उसने हमें उससे अवगत कराया है जिसे पुनरूत्थान के दिवस में ईश्वर प्रकट करेगा, ताकि हम अपने अस्तित्व के फल से लाभ प्राप्त कर सकें और ईश्वर की उपस्थिति प्राप्त करने से वंचित न रह जायें। वास्तव में हमारी रचना का ध्येय यही है तथा हमारे द्वारा किये गये प्रत्येक सद्कर्म के मूल में निहित एकमात्र उद्देश्य यही है। ऐसी है वह उदारता जो ईश्वर ने हमें प्रदान की है; वस्तुतः वह सर्वप्रदाता, कृपालु है। तुम यह जान लो कि यदि तुम असंदिग्ध आस्था में विश्वास करते हो, तो तुम ऐसा करने में सफल हो जाओगे। परन्तु, चूँकि तुम अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं के अन्तःआवरणों के कारण असंदिग्ध आस्था की अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकते, इसलिये तुम अग्नि में रहोगे, यद्यपि इसे समझ नहीं सकोगे। उसके प्रकटीकरण के दिवस में, जब तक कि तुम उसमें सच्चा विश्वास नहीं करते, तुम्हें अग्नि से कोई भी नहीं बचा सकेगा, यद्यपि तुम प्रत्येक सद्कर्म ही क्यों न करो। यदि तुम सत्य को स्वीकार करते हो, तो ईश्वर के ग्रंथ में तुम्हारे लिये समस्त शुभ एवं मंगल नियत किया जायेगा और इसी कारण से अगले पुनरूत्थान तक तुम उस सर्वोच्च स्वर्ग में आनन्दित रहोगे।

ध्यानपूर्वक विचार करो, क्योंकि यह मार्ग अत्यंत सीधा है, यद्यपि जबकि यह आकाश एवं धरती तथा जो कुछ भी इनके बीच है, से अधिक विस्तृत है। उदाहरण के लिये, यदि उन सभी को, जो ईसा मसीह का वादा पूरा होने की अपेक्षा कर रहे थे, ईश्वर के संदेशवाहक,

मुहम्मद के प्रकटीकरण के प्रति आश्वस्त किया गया होता, तो ईसा मसीह के कथनों से कोई भी मुँह न मोड़ता। बयान के बिन्दु का प्रकटीकरण भी ऐसा ही है, यदि सभी का आह्वान किया गया होता कि यही वह प्रतिज्ञापित मेहदी है (वह जो मार्गदर्शित है) जिसकी भविष्यवाणी ईश्वर के संदेशवाहकों ने की थी, तो एक भी अनुयायी ईश्वर के संदेशवाहक के कथनों से मुँह नहीं मोड़ता। 'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा' का प्रकटीकरण भी ऐसा ही है, देखो वही बात है; क्योंकि यदि सभी आशान्वित हो जायें कि 'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा', वही है जिसकी भविष्यवाणी बयान ने की है, तो कोई भी मुँह नहीं मोड़ेगा। IX.3.

ईश्वर के नाम से, जो सर्वोदात्त, परम पावन है! उस सर्वश्रेष्ठ स्वामी के पावन एवं यशस्वी दरबार की समस्त स्तुति एवं महिमा शोभा देती है, जो अनन्तता से, अपने स्वयं के दिव्य सत्व के रहस्य में रहा है और अनन्तता तक निरन्तर रहेगा, जो सदैव ही, सभी सृजित जीवों की पहुँच एवं ज्ञान की सीमा से परे, अपनी श्रेष्ठ अनन्तता में निवास करता रहा है और सदा करता रहेगा। उसके द्वारा सृजित किया गया तथा समस्त जीवों के अस्तित्वों पर अंकित किया गया उसके अद्वितीय प्रकटीकरण का चिह्न, उसे जानने की उनकी शक्तिहीनता के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। जो प्रकाश उसने सभी सृजित वस्तुओं पर फैलाया है, वह उसके स्वयं के व्यक्तित्व की भव्यता के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। वह स्वयं, सभी समय, अपने प्राणियों से किसी भी प्रकार के सम्बन्ध से अपरिमेय रूप से उदात्त है। उसने समस्त सृष्टि को इस प्रकार रूप दिया है, कि पुनरूत्थान के दिवस में, अपनी अन्तर्जात शक्तियों द्वारा सभी सृजित वस्तुएँ ईश्वर के समक्ष यह साक्षी दे सकें कि कोई भी मनुष्य उसके समकक्ष या बराबरी का नहीं है और वह किसी भी समानता, सादृश्य, या तुलना से परे है। अपने दिव्य अस्तित्व की श्रेष्ठ महिमा में वह सदा एकमेव एवं अतुलनीय रहा है और सदा रहेगा, तथा अपने सर्वश्रेष्ठ स्वामित्व की भव्यता में वह सदा अवर्णित रूप से शक्तिशाली रहा है। उसे उचित रूप से पहचानने में कोई भी कभी समर्थ नहीं रहा, न ही कोई व्यक्ति कभी भी उसे इस प्रकार समझने में सफल रहेगा जो वास्तव में उचित और शोभनीय है, क्योंकि कोई भी वास्तविकता जिस पर 'अस्तित्व' शब्द लागू होता है, उस सर्वशक्तिशाली की सर्वश्रेष्ठ इच्छा से सृजित हुई है जिसने उस पर अपने स्वयं के अस्तित्व का वह प्रकाश डाला है जो उसके पावनतम स्थान से चमक रहा है। साथ ही, उसने सभी सृजित वस्तुओं की वास्तविकता में अपनी पहचान का प्रतीक अमानत के रूप में रखा है,

ताकि सभी निश्चित रूप से यह जान लें कि आदि और अन्त, प्रकट और निगूढ़, रचनाकार एवं पालनहार, सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञाता वही है, वह जो सब कुछ सुनता और देखता है, वह जो अपनी शक्ति में अपराजेय है और अपनी स्वयं की पहचान में सर्वोपरि है, वह जो अनुप्राणित करता है और मुक्ति प्रदान करता है, सर्वशक्तिशाली, अगम्य, सर्वोदात्त, सर्वोच्च है वह। उसके दिव्य सत्य का प्रत्येक प्रकटीकरण उसकी महिमा की भव्यता, उसकी उदात्त पावनता, उसकी एकता की अगम्य उच्चता तथा उसके प्रताप एवं शक्ति की परमोच्चता को दिखलाता है। उसके स्वयं के प्रथम होने के अतिरिक्त उसके आरम्भ का कोई आरम्भ नहीं रहा है तथा उसके स्वयं के अन्तिम होने के अतिरिक्त, उसके अन्त का कोई अन्त नहीं है।I.1.

दिव्य वास्तविकता का प्रकटीकरण सदा से इसकी गोपनीयता के समरूप रहा है, तथा इसकी गोपनीयता इसके प्रकटीकरण के समरूप। 'ईश्वर के प्रकटीकरण' से अभिप्राय है दिव्य वास्तविकता का वह वृक्ष जो उसके अतिरिक्त अन्य किसी को इंगित नहीं करता और यही वह दिव्य वृक्ष है जिसने संदेशवाहक उत्थित किये हैं और करता रहेगा एवं पावन ग्रंथ प्रकट किये हैं और करता रहेगा। अनन्तता से अनन्तता तक, यह दिव्य वृक्ष, ईश्वर के प्राणियों के बीच उसकी गोपनीयता एवं प्रकटीकरण के सिंहासन के रूप में कार्य करता रहा है और सदा करता रहेगा और प्रत्येक युग में, जिस किसी के माध्यम से वह चाहे, इसे प्रकट करता है। कुरआन के प्रकटीकरण के समय उसने मुहम्मद के आगमन के माध्यम से अपनी लोकातीत शक्ति का प्रभाव डाला, तथा बयान के प्रकटीकरण के अवसर पर, उसने बयान के बिन्दु को प्रकट करके अपनी परम शक्ति को प्रदर्शित किया, और जब वह दीप्तिमान होगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तब उसके माध्यम से वह जैसा चाहे, जिसके साथ चाहे और जिसके लिये चाहे, अपने धर्म के सत्य को सिद्ध करेगा। वह सभी वस्तुओं के साथ है, फिर भी उसके साथ कुछ भी नहीं है। वह न तो किसी वस्तु के भीतर है, न ही किसी के ऊपर और न इसके पास। उसके सिंहासन पर स्थापित होने के विषय में किसी भी उल्लेख का अर्थ यह है कि उसके प्रकटीकरण का व्याख्याता, सर्वश्रेष्ठ सत्ता के स्थान पर स्थापित हो चुका है....

वह सदा से अस्तित्व में रहा है और सदा अस्तित्व में बना रहेगा। वह सदा से सभी मनुष्यों के लिये रहस्यमय रहा है और सदा रहेगा, क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य सभी, सदा उसके

आदेश की शक्ति से सृजित होते रहे हैं और होते रहेंगे। वह प्रत्येक उल्लेख या स्तुति से उच्च है तथा प्रशंसा के प्रत्येक शब्द अथवा प्रत्येक तुलना के परे, पवित्र है। कोई भी सृजित वस्तु उसे समझ नहीं सकती, जबकि वह, सत्य ही, सभी वस्तुओं को समझता है। जब भी यह कहा जाता है कि 'उसे कोई सृजित वस्तु नहीं समझ सकती', तो इसका सम्बन्ध उसके प्रकटीकरण के दर्पण से है, जो वह है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। वस्तुतः वह इतना अधिक उच्च एवं उदात्त है कि कोई भी व्यक्ति उसकी ओर संकेत नहीं कर सकता। II.8.

4

दलाइल-ए-साबिह के अंश

सात प्रमाण

तुमने धर्म के मूल सिद्धान्तों एवं इसके आदेशों के विषय में पूछा हैः तुम यह जानो कि धर्म में प्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ है ईश्वर का ज्ञान। उसकी दिव्य एकता को स्वीकारने से यह अपनी पूर्णता को प्राप्त होता है, तब फिर उसे स्वीकार करने पर यह अपनी सिद्धि तक पहुँचता है, कि उसका पावन एवं उदात्त मंदिर, उसका लोकातीत प्रताप, समस्त गुणों से पवित्र है। और तुम यह जानो कि अस्तित्व के इस संसार में, ईश्वर का ज्ञान केवल उस ज्ञान के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है जो उसकी दिव्य वास्तविकता का दिवास्रोत है।

हे दयालु ईश्वर ! इस्लाम के प्रभाव-क्षेत्र में, वर्तमान में, दुनिया पर शासन करने वाले सात शक्तिशाली शासक हैं। इनमें से किसी को भी उसके (बाब के) प्रकटीकरण की जानकारी नहीं दी गयी है, किसी ने भी उसमें विश्वास नहीं किया है। कौन जानता है, कि वे इच्छाओं से भरे रहते हुए तथा यह समझे बिना ही इस भूलोक से चल देंगे, कि वह जिसकी उन्हें प्रतीक्षा थी, वह आ चुका है। उन राजाओं के साथ भी ऐसा ही हुआ था जिन्होंने बाईबिल में दृढ़ विश्वास किया था। उन्होंने ईश्वर के अवतार (मुहम्मद) के आगमन की प्रतीक्षा की और जब वह वास्तव में प्रकट हुए, तो वे उसे पहचानने में विफल रहे। देखो कितनी अधिक है वह राशि जो ये शासक खर्च करते हैं, किन्तु किसी ऐसे अधिकारी को नियुक्त करने का लेशमात्र भी विचार किये बगैर जो उनके स्वयं के राज्य में उन्हें ईश्वरावतार से परिचित कराने के कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो ! ऐसा करके वे उस उद्देश्य को प्राप्त कर चुके होते जिसके लिये उन्हें सृजित किया गया है। उनकी समस्त इच्छाएँ, अपने नाम के चिह्न पीछे छोड़ जाने पर केन्द्रित थीं और अब भी हैं।

इसी प्रकार ईश्वर के संदेशवाहक मोहम्मद के विधान पर विचार करो जो बयान के प्रकटीकरण के प्रारम्भ तक, बारह सौ सत्तर वर्षों[67] तक बना रहा। उन्होंने सभी को उस प्रतिज्ञापित काइम के आगमन की प्रतीक्षा करने को निर्दिष्ट किया। इस्लाम के विधान में जो कृत मुहम्मद से शुरु हुए, उन्हें अपनी पूर्णता काइम के प्रकटीकरण के माध्यम से प्राप्त करनी चाहिए। ईश्वर ने उसे उस प्रमाण के साथ विभूषित कर प्रकट किया है जिससे ईश्वर का संदेशवाहक विभूषित था, ताकि कुरआन के किसी भी अनुयायी को उसके धर्म की वैधता के बारे में कोई सन्देह न रह जाए, क्योंकि कुरआन में यह लिखा गया है कि सिवाय ईश्वर के, अन्य किसी में भी श्लोक प्रकट करने की क्षमता नहीं है। 1270 वर्ष की कालावधि में, कुरआन के अुनयायियों में से किसी ने भी कभी किसी व्यक्ति को निर्णायक प्रमाणों के साथ प्रकट होते हुए नहीं देखा। अब उस अमर स्वामी ने इस चिर प्रतीक्षित प्रतिज्ञापित को एक

ऐसे स्थान से, जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता, तथा एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से जिसके ज्ञान का कोई महत्व नहीं था, प्रकट किया है एवं सर्वोच्च प्रमाण के साथ विभूषित किया है। उसकी आयु पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं है, फिर भी उसकी महिमा ऐसी है कि इस्लाम के विद्वानों में से कोई भी इसकी बराबरी नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य का यश उसके ज्ञान में निहित है। विद्धानों को देखो, जिन्हें, उसके पावन लेखों को समझने की उनकी योग्यता के कारण सम्मानित किया जाता है, और ईश्वर ने उन्हें इस कोटि तक उदात्त किया है कि वह उनके सम्बन्ध में कहता है कि: 'इसका अर्थ, सिवाय ईश्वर के एवं उनके जिन्हें सच्चा ज्ञान है।'[68] अन्य कोई नहीं समझ सकता ऐसे में यह कितना आश्चर्यजनक है कि उसके श्लोकों को, इतने चकित कर देने वाले ढंग से प्रकट करने के लिये, इस 25 वर्षीय अशिक्षित व्यक्ति को चुना गया हो। यदि मुस्लिम धर्मगुरुओं के पास, इन पावन लेखों का अर्थ समझने में गर्व करने का कारण है, तो उसकी महिमा इन पावन लेखों को प्रकट करने में है, ताकि इनमें से कोई भी, उसके शब्दों में विश्वास करने से न हिचकिचाये। ईश्वर ने उसके अन्दर जो दिव्य सामर्थ्य एवं शक्ति प्रकट की है वह इतनी महान है कि यदि उसकी इच्छा हो और कोई अवरोध बाधा न बने, तो वह पाँच दिनों और रातों की अवधि में, कुरआन के बराबर श्लोक प्रकट कर सकता है जबकि कुरआन 23 वर्षों की अवधि में अवतरित हुआ था। तुम इस पर विचार एवं चिन्तन करो। क्या पूर्व के युगों में कभी उसके जैसा कोई प्रकट हुआ है या क्या यह विशिष्टता, वस्तुतः उसी तक सीमित है ?

विचार करो उन विविध अनुग्रहों पर जो उस प्रतिज्ञापित द्वारा प्रदान किये गये हैं, तथा मोक्ष प्राप्त करने में उन्हें समर्थ बनाने के लिये उसकी उदारता के उन उद्गारों पर जो उसने इस्लाम के अनुयायियों के सम्मिलन में व्याप्त किये हैं। वास्तव में यह देखो कि वह जो सृष्टि का उद्भव है, वह जो इस आयत का व्याख्याता है कि, 'सत्य ही, मैं ईश्वर हूँ,' जिसने उस प्रतिज्ञापित काईम, मुहम्मद के वंशज, के आगमन के लिये द्वार (बाब) के रूप में स्वयं का अभिज्ञान कराया और अपने प्रथम ग्रंथ में कुरआन के नियमों के अनुपालन का आदेश दिया, ताकि एक नये ग्रंथ एवं एक नये प्रकटीकरण के कारण लोग अव्यवस्था से ग्रसित न हो जायें और उसके धर्म को अपने स्वयं के धर्म जैसा न समझ बैठें, कदाचित वे सत्य से विमुख न हो जायें तथा उस उद्देश्य की उपेक्षा न कर बैठें जिसके लिये उन्हें अस्तित्व प्रदान किया गया था।

आओ मैं तुम्हारे लिये कुछ विवेकपूर्ण तर्क प्रस्तुत करता हूँ। यदि आज, कोई व्यक्ति इस्लाम धर्म को स्वीकार करना चाहता है, तो क्या ईश्वर का प्रमाण उसके लिये निर्णायक साबित होगा ? यदि तुम यह विवाद करते हो कि नहीं होगा, तो ऐसा कैसे हो सकता है कि मृत्यु के पश्चात ईश्वर उसे दण्डित करें, और यह कि जब तक वह जीवित है, उसे 'अविश्वासी घोषित किया जाये ? यदि तुम इस बात की पुष्टि करते हो कि यह प्रमाण निर्णायक है, तो तुम यह साबित कैसे करोगे ? यदि तुम्हारा दावा सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है, तो एक बाध्यकारी प्रमाण के रूप में मात्र शब्द स्वीकार्य नहीं हैं; परन्तु यदि तुम कुरआन को प्रमाण समझते हो, तो यह एक महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष प्रमाण होगा।

अब बयान के प्रकटीकरण पर विचार करो। यदि कुरआन में आस्था रखने वालों ने स्वयं के लिये भी उसी प्रकार के प्रमाण लागू किये होते जो वे अविश्वासियों के लिये प्रस्तुत करते हैं, तो एक भी आत्मा वंचित नहीं रह गयी होती तथा पुनरूत्थान के दिवस में सभी ने मोक्ष प्राप्त कर लिया होता।

यदि कोई ईसाई यह तर्क करता है कि, 'मैं कुरआन को प्रमाण कैसे मान लूँ जबकि इसे समझने में मैं असमर्थ हूँ', तो ऐसा तर्क स्वीकार्य नहीं होगा। इसी प्रकार, कुरआन के लोग अवज्ञापूर्वक कहते हैं, 'बयान के श्लोकों की वाग्मिता समझने में हम असमर्थ हैं, हम इसे प्रमाण कैसे मान सकते हैं ?' जो कोई भी ऐसे शब्द उच्चारित करता है, उससे कहो, 'हे तुम जो अशिक्षित हो ! तुमने इस्लाम धर्म को किस प्रमाण के आधार पर स्वीकार किया है ? क्या उस पैगम्बर के आधार पर जिसे तुमने कभी देखा नहीं ? क्या उन चमत्कारों के आधार पर जिनके तुम कभी साक्षी नहीं थे ? यदि तुमने इस्लाम को अनजाने ही स्वीकार किया है, तो तुमने ऐसा क्यों किया? परन्तु यदि तुमने कुरआन को प्रमाण के रूप में पहचान कर इस धर्म को स्वीकार किया है, इसलिये कि तुमने इसके समक्ष विद्वानों एवं निष्ठावानों को स्वयं की शक्तिहीनता व्यक्त करते हुए सुना है, परन्तु यदि तुमने इन दिव्य श्लोकों को सुनते ही एवं ईश्वर के सच्चे धर्म के प्रति अपने स्वैच्छिक प्रेम के कारण, पूर्ण विनम्रता एवं दीनता की भावना से अपनी प्रतिक्रिया जतायी है-ऐसी भावना जो सच्चे प्रेम एवं ज्ञान का सर्वशक्तिशाली चिह्न है - तो ऐसे प्रमाण सदा से सुस्थिर माने जाते रहे हैं और रहेंगे।'

दिव्य सत्य के संवाहक को पहचानना, ईश्वर को पहचानने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं, तथा उससे प्रेम करना, ईश्वर से प्रेम करने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। मैं उस उदात्त एवं प्रतापशाली ईश्वर के उच्च सत्व की सौगंध खाता हूँ कि मैं नहीं चाहता था कि मनुष्य मेरी विशिष्टता को जानें और मैंने यह आदेश दिये थे कि मेरा नाम गुप्त रखा जाये, क्योंकि मैं इन लोगों की अक्षमता से पूर्णतया परिचित था, जो कि अन्य कोई नहीं अपितु वे लोग हैं जिन्होंने एक ऐसे व्यक्ति के विषय में, जो ईश्वर के दूत से कम नहीं था, यह टिप्पणी की थी कि, 'वह निश्चित ही विक्षिप्त है'।[69] यदि अब वे उन लोगों से अलग होने का दावा करते हैं, तो उनके कर्म ही उनके दृढ़ कथनों की असत्यता की साक्षी देते हैं। वह जो ईश्वर साक्षी देता है, उसके सर्वोच्च प्रमाण के साक्ष्य के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। यदि दुनिया के सभी लोग किसी एक वस्तु की साक्षी देते हैं, और यदि वह किसी अन्य वस्तु की साक्षी देता है, तो उसकी गवाही ईश्वर की गवाही मानी जायेगी, जबकि उसके अतिरिक्त अन्य सभी, सदा से अस्तित्वहीन जैसे रहे हैं और रहेंगे; क्योंकि यह उसकी शक्ति है, जिसके माध्यम से एक वस्तु अपना अस्तित्व प्राप्त करती है।

आस्था के मामलों में इन लोगों की निष्ठा के स्तर पर विचार करो। अपने स्वयं के कार्यों के मामलों में वे दो न्यायनिष्ठ गवाहों की गवाही से भलीभाँति संतुष्ट रहते हैं, फिर भी, इतनी बड़ी संख्या में सद्चरित्र व्यक्तियों की गवाही के बावजूद, वे उसमें विश्वास करने से हिचकिचाते हैं जो दिव्य सत्य का संवाहक है।

उन प्रमाणों को, जो लोगों ने अपनी व्यर्थ कल्पनाओं के कारण ईश्वर के संदेशवाहकों से माँगे, उनमें से अधिकांश को कुरआन में अस्वीकार कर दिया है, जैसे कि इज़राईल की संतानों की सुरा (आयत 17) में यह प्रकट किया गया है: 'और वे कहते हैं, कि हम तुम पर तब तक कदापि विश्वास नहीं करेंगे जब तक तुम हमारे लिये धरती से एक झरना उत्पन्न नहीं कर दिखलाते; या खजूर एवं अंगूरों का उद्यान और उसके बीच से उफनती हुई नहरें नहीं प्रकट कर दिखलाते; या हम पर टुकड़े-टुकड़े कर के आसमान नहीं गिराते जैसा तुम कहते हो; या ईश्वर एवं फरिश्तों को अपनी गवाही देने नहीं ले आते; या तुम्हारे पास स्वर्ण का एक घर न हो; या तुम आकाश पर चढ़ कर नहीं दिखलाते, तब भी हम तुम्हारे आकाश पर चढ़ जाने का विश्वास नहीं करेंगे जब तक तुम एक पुस्तक नहीं उतार लाते जिसे हम

पढ़ सकें। तुम कहो, मेरे स्वामी की स्तुति हो, क्या मैं एक संदेशवाहक मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कुछ भी हूँ ?

अब न्याय करो ! अरबवासियों ने ऐसे शब्द उच्चरित किये और अब तुम, अपनी इच्छाओं से प्रेरित होकर अन्य वस्तुओं की माँग कर रहे हो? तुममें और उनमें अन्तर ही क्या है ? यदि तुम कुछ देर विचार करो, तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि एक दीन सेवक के लिये यह आवश्यक है कि वह ईश्वर द्वारा निर्धारित किये गये किसी भी प्रमाण को मौन स्वीकृति दे और अपनी व्यर्थ कल्पनाओं का अनुसरण न करे। यदि लोगों की इच्छाएँ तृप्त की जातीं, तो धरती पर एक भी अविश्वासी नहीं रह जाता। क्योंकि एक बार ईश्वर के संदेशवाहक लोगों की इच्छा तृप्त कर देते, तो वे बेझिझक उनके धर्म को स्वीकार कर लेते। यदि तुम अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं के अनुसार कोई प्रमाण प्राप्त करना चाहते हो, तो ईश्वर तुम्हें बचाये; बल्कि तुम्हें यह शोभा देता है कि तुम उस अचूक प्रमाण का समर्थन करो जिसे ईश्वर ने नियुक्त किया है। तुम्हारे विश्वास का ध्येय ही उसकी सुप्रसन्नता प्राप्त करना है। फिर तुम अपनी आस्था के प्रमाण के लिये कुछ ऐसा क्यों प्राप्त करना चाहते हो जो उसकी सुप्रसन्नता के विरुद्ध है ?

स्वयं को ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं से मुक्त कर लो, उसके अतिरिक्त अन्य सभी से अलग होकर स्वयं को ईश्वर से शोभित कर लो और इस प्रार्थना का पाठ करो:

कहो: ईश्वर सर्वोपरिपरिपूरक है, समस्त आसमानों में तथा धरती पर, ऐसा कुछ भी नहीं जिसे नहीं कर सकता है वह पूरा। वस्तुतः वह स्वयं में ज्ञाता, पालनहार, सर्वशक्तिशाली है।

ईश्वर की सर्वोपरिपूरक शक्ति को व्यर्थ कल्पना न समझो। यह वह सच्ची आस्था है जो तुम, प्रत्येक विधान में, ईश्वर के अवतार के लिये संजोये रखते हो। यह ऐसी आस्था है जो धरती पर विद्यमान सभी वस्तुओं की तुलना में स्वयं में पर्याप्त है, जबकि, इस आस्था के अतिरिक्त धरती की कोई भी सृजित वस्तु तुम्हें तृप्त नहीं कर सकती। यदि तुम विश्वासी नहीं हो, तो दिव्य सत्य का वृक्ष तुम्हें विलोपन का दण्डादेश देगा। यदि तुम विश्वासी हो, तो धरती पर विद्यमान समस्त वस्तुओं के परे तुम्हारी आस्था ही तुम्हारे लिये यथेष्ट होगी, भले ही तुम्हारे पास कुछ भी न हो।

एक परम्परा में यह उल्लिखत है कि ईसाइयों के सम्पूर्ण समूह में से केवल सत्तर के आसपास लोगों ने ईश्वर के संदेशवाहक के धर्म को स्वीकार किया। इसके दोषी उनके

विद्वजन हैं, क्योंकि यदि उन्होंने विश्वास किया होता, तो उनके देशवासियों के समूह ने भी उनका अनुसरण किया होता। देखो ! फिर अब क्या घटित हुआ है ! ईसाई धर्म के विद्वानों को ईसा मसीह की शिक्षाओं की सुरक्षा करने के कारण विद्वान माना जाता है, और फिर भी, विचार करो कि किस प्रकार वे स्वयं ही, मनुष्यों द्वारा धर्म स्वीकार करने तथा मोक्ष प्राप्त करने में विफल रहने का कारण बन गये हैं! क्या अब भी तुम उनके पदचिह्नों पर चलना चाहते हो ? पुनरूत्थान के दिवस में मोक्ष प्राप्त करने के लिये ईसा मसीह के अनुयायी अपने पुरोहितों के समक्ष झुक गये और उनकी आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप, उन्होंने अन्त में अग्नि में प्रवेश किया और उस दिवस में जब ईश्वर के संदेशवाहक प्रकट हुए, तो उन्होंने उनके उदात्त व्यक्तित्व से स्वयं को आवृत कर लिया। क्या तुम ऐसे विद्वानों का अनुसरण करना चाहते हो ?

नहीं, ईश्वर की सौगंध, न तो तुम विवेकहीन ज्ञानी बनो, न ही विवेकहीन अनुयायी, क्योंकि पुनरूत्थान के दिवस में ये दोनों ही समाप्त हो जायेंगे। बल्कि तुम्हें शोभा यह देता है कि तुम एक विवेकी विद्वान बनो, अथवा धर्म के एक सच्चे मार्गदर्शक की आज्ञाओं का पालन करते हुए ईश्वर के मार्ग में अन्तर्दृष्टि के साथ चलो।

प्रत्येक राष्ट्र में तुम्हें असंख्य आध्यात्मिक अगुआ दिखायी देंगे जो सच्चे ज्ञान से वंचित हैं तथा प्रत्येक जन-समुदाय में तुम्हें करोड़ों ऐसे अनुयायी मिलेंगे जो ऐसी विशिष्टताओं से रहित हैं। अपने हृदय में ज़रा इस पर मनन करो, अपने आप पर तरस खाओ और इन प्रमाणों एवं सबूतों से अपना ध्यान न हटाओ। परन्तु, अपनी व्यर्थ कल्पनाओं पर आधारित प्रमाणों एवं सबूतों की चाह न रखो, अपितु अपने प्रमाणों को उस पर आधारित करो जो ईश्वर ने नियुक्त किया है। इसके साथ ही, तुम यह जान लो कि न तो एक विद्वान व्यक्ति होना, न ही एक अनुयायी होना, अपने आप में यश का स्रोत है। जब यह ईश्वर की सुप्रसन्नता के अनुरूप हो, केवल उस परिस्थिति में, यदि तुम एक ज्ञान सम्पन्न हो, तो तुम्हारा ज्ञान सम्माननीय बन जाता है और यदि तुम एक अनुयायी हो, तो अपने मार्गदर्शक के प्रति तुम्हारी आज्ञाकारिता सम्माननीय बन जाती है। और सावधान, कहीं तुम ईश्वर की सुप्रसन्नता को व्यर्थ कल्पना न समझ बैठो; यह उसके संदेशवाहक की सुप्रसन्नता के समान है। ईसा मसीह के अनुयायियों के विषय में विचार करो। वे उत्सुकतापूर्वक ईश्वर की सुप्रसन्नता प्राप्त करना चाहते थे। फिर भी, उनमें से किसी ने भी उसके संदेशवाहक की सुप्रसन्नता प्राप्त नहीं की,

जो ईश्वर की सुप्रसन्नता के समरूप है, सिवाय उनके जिन्होंने उसके धर्म को स्वीकार किया था।

तुम्हारे पत्र का अवलोकन किया गया। यदि इस प्रकटीकरण के सत्य को विस्तृत प्रमाणों सहित पूर्णतया सिद्ध किया जाए, तो आकाश तथा धरती पर उपलब्ध सभी पत्रक उनमें नहीं समा सकते और वे अपर्याप्त सिद्ध होंगे।

फिर भी, इस विषय का सार एवं सत्व यह है कि इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि वह परमेश्वर, शाश्वत रूप से अपने उदात्त अस्तित्व के स्वतंत्र प्रभुत्व से विभूषित रहा है और अपने पावन सत्व की लोकातीत विभूति में, वह अनन्तता तक अगम्य रहेगा। किसी भी प्राणी ने कभी भी उसे उस प्रकार नहीं पहचाना है, जैसा कि उसकी पहचान के लायक हो, न ही किसी सृजित वस्तु ने कभी भी उसका ऐसा स्तुतिगान किया है, जो कि उसकी प्रशंसा के योग्य हो। वह प्रत्येक नाम से उदात्त है तथा प्रत्येक तुलना से परे और पावन है। सभी वस्तुओं का ज्ञान उसी के माध्यम से प्राप्त होता है, जबकि उसकी वास्तविकता इतनी उदात्त है कि इसे उसके अतिरिक्त अन्य किसी के माध्यम से जाना नहीं जा सकता। उसकी सृष्टि की प्रक्रिया का कोई आदि नहीं और इसका कोई अन्त नहीं हो सकता, अन्यथा उसकी दिव्य कृपा का अवसान अनिवार्य हो जाता। ईश्वर ने इस जगत के असंख्य प्राणियों के बीच न जाने कितने अवतार भेजे हैं एवं ग्रंथों को प्रकट किया है और अनन्तता तक ऐसा ही करना जारी रखेगा।

यदि तुम ईश्वर के नामों को, जो कि सभी वस्तुओं में प्रतिबिम्बित हैं, के महासागर पर विहार कर रहे हो, तो तुम यह जानो कि वह अपने प्राणियों के माध्यम से ज्ञात होने अथवा अपने सेवकों द्वारा वर्णित किये जाने से परे उच्च और पावन है। तुम जो भी देखते हो, वह सब कुछ उसकी इच्छा के अनुपालन से अस्तित्व में आया है। अतः कोई सृजित वस्तु उसकी सारभूत एकता को चिह्नित कैसे कर सकती है ? ईश्वर का अस्तित्व ही अपने आपमें उसकी स्वयं की एकता का प्रमाण है, जबकि प्रत्येक सृजित वस्तु, अपने स्वभाव में यह साक्षी देती है कि उसे ईश्वर ने रचा है। जो दिव्य सत्य के महासागर पर विहार करते हैं उनकी दृष्टि में परम विवेक का प्रमाण ऐसा ही है।

परन्तु यदि, तुम सृष्टि के महासागर पर विहार कर रहे हो, तो तुम यह जानो कि उस प्रथम स्मरण, जो ईश्वर की प्राथमिक इच्छा है, की तुलना सूर्य से की जा सकती है। ईश्वर ने

अपनी सामर्थ्य की शक्ति से उसका सृजन किया है, और उस आदि से जिसका कोई आरम्भ नहीं, उसने प्रत्येक विधान में अपने आदेश की अप्रतिरोध्य शक्ति से, उसे प्रकट होने में समर्थ बनाया है, और उस अन्त तक जिसका कोई अन्त नहीं, ईश्वर अपने अपराजेय उद्देश्य की सुप्रसन्नता के अनुसार, उसे प्रकट करते रहेंगे।

और तुम यह जानो कि वह वास्तव में सूर्य के सदृश है। यदि सूर्य का उदय होना उस अन्त तक जारी रहता है जिसका कोई अन्त नहीं, फिर भी, एक से अधिक सूर्य, न तो कभी था, न होगा; और यदि इसका अस्ताचल अनन्तता तक होता रहे, फिर भी, एक से अधिक सूर्य न तो कभी था, न होगा। यही वह प्राथमिक इच्छा है जो प्रत्येक ईश्वरावतार में प्रकट होती है तथा प्रत्येक प्रकटित ग्रंथ में अवतरित है। यह किसी आदि को नहीं जानती, क्योंकि वह प्रथम भी अपनी प्राथमिकता इसी से प्राप्त करता है; और किसी अन्त को नहीं जानती, क्योंकि वह अन्त भी अपनी अनन्तता के लिये इसका ऋणी है।

प्रथम अवतार के समय में, यह प्राथमिक इच्छा आदम में प्रकट हुई; नूह के दिवस में यह नूह में दिखायी दी; इब्राहिम के दिवस में उनमें; और इसी प्रकार मूसा में; ईसा मसीह के दिवस में; ईश्वर के धर्मप्रचारक मुहम्मद के दिवस में; 'बयान के बिन्दु' के दिवस में; और उसके दिवस में जिसे ईश्वर प्रकट करेगा; और उसके दिवस में जो उसके पश्चात आयेगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। अतः ईश्वर के पैगम्बरों द्वारा उच्चरित किये गये शब्दों का आन्तरिक अर्थ, 'मैं सभी अवतारों में हूँ', क्योंकि उनमें से प्रत्येक में, जो सदा से देदीप्यमान बनकर चमकता है, वह एक ही सूर्य रहा है और रहेगा।

5

नामों के ग्रंथ

से

कुछ उद्धरण

हे तुम जो 'बयान' से सुशोभित हो ! अति प्राचीन अनन्तता का वह दिवानक्षत्र अपनी उच्चता के क्षितिज पर दीप्तमान हो उससे पहले, तुम एक-दूसरे की भर्त्सना न करो। हमने तुम्हें एक ही वृक्ष से उत्पन्न किया है तथा उसी वृक्ष की पत्तियाँ और फल बनने में समर्थ बनाया है, ताकि कदाचित तुम एक-दूसरे के लिये सुख का स्रोत बनो। दूसरों को उसी दृष्टि से देखो जिस दृष्टि से तुम स्वयं को देखते हो, ताकि तुम्हारे बीच, घृणा की ऐसी कोई भावना छा न जाये जो पुनरूत्थान दिवस में तुम्हें उससे दूर कर दे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। तुम्हारे लिये यह उचित है कि तुम एक अविभाज्य लोगों के समुदाय बनो; तुम्हें इसी रूप में उसके समक्ष वापस लौटना चाहिए जिसे ईश्वर प्रकट करेगा।

वे जिन्होंने अपनी आपसी घृणा अथवा स्वयं को सही और दूसरों को गलत समझकर खुद को इस पुनरूत्थान से वंचित किया है, उन्हें, उनकी रात्रि[70] के दौरान ऐसी घृणा प्रदर्शित करने के कारण, पुनरूत्थान के दिवस में दण्डित किया गया था। इस तरह, ईश्वर का मुखबिंदु देखने से उन्होंने स्वयं को वंचित कर लिया, और ऐसा सिवाय आपसी भर्त्सना के अतिरिक्त अन्य किसी कारण से नहीं।

हे तुम जो 'बयान' से सुशोभित हो ! तुम्हें ऐसे कर्म करने चाहिए जो ईश्वर, तुम्हारे स्वामी को प्रसन्न करे, इस तरह उसकी सुप्रसन्नता प्राप्त करो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। अपने जीवन को आडम्बर में व्यतीत करते हुए, अपने धर्म को भौतिक लाभ का माध्यम न बनाओ, एवं इसके कारण, पुनरूत्थान दिवस में, विरासत में वह प्राप्त न करो जो उसकी अप्रसन्नता को अर्जित करे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, जबकि तुम यह समझते हो कि जो तुम कर रहे हो वह सही है। परन्तु, यदि तुम अपने धर्म में निष्ठा रखोगे, तो निश्चित ही ईश्वर तुम्हें अपनी दिव्य कृपा के कोषागार से पोषित करेगा।

ईश्वर, अपने स्वामी के लिये, तुम उसके प्रति सच्चे बनना जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, ताकि पुनरूत्थान दिवस में, उसके धर्म के प्रति भक्ति के कारण तुम्हें कदाचित मुक्ति प्राप्त हो सके। सावधान, कहीं उन समस्याओं के कारण जिनका तुम्हें तुम्हारी रात्रि के दौरान सामना करना पड़े, अथवा तुम्हारी उच्चता या निम्नता, तुम्हारी निकटता या दूरी जैसे मामलों पर विचार करने पर तुम्हारे बीच उत्पन्न होने वाले विवादों के कारण तुम एक-दूसरे को आवरणों से आवृत न कर दो।

इस प्रकार हमने तुम्हें ठोस रूप से प्रबोधित किया है - जो वास्तव में एक उचित प्रबोधन है - ताकि तुम इसे दृढ़तापूर्वक थामे रहो और पुनरूत्थान दिवस में इसके माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सको। वह समय निकट आ रहा है जब तुम स्वयं में एवं अपने घरों में शान्ति महसूस करोगे, एवं पाओगे कि वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, प्रकट हो चुका है और ईश्वर चाहता है कि तुम उसी प्रकार उसकी ओर वापस लौट जाओ, जिस प्रकार इस प्राथमिक बिन्दु के माध्यम से ईश्वर तुम्हें अस्तित्व में लाया था। किन्तु तुम तभी मार्गदर्शन चाहोगे, जबकि तुम अपनी स्वयं की इच्छाओं के पीछे भी भाग रहे होगे। तुम में से कुछ, अपने धर्म के कारण अहंकार से भर गये हो, और अन्य, अपने ज्ञान के कारण। तुम में से प्रत्येक, अपनी आत्मश्लाघा के माध्यम के रूप में 'बयान' के किसी एक भाग को कसकर थाम लेते हो।xvi.19.69 [71]

ईश्वर अपने सेवकों से पवित्र है और उसके एवं किसी सृजित वस्तु के बीच कभी कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता, जबकि तुम सभी उसके आदेश से उत्पन्न हुए हो। वस्तुतः वह है तुम्हारा स्वामी और तुम्हारा ईश्वर, तुम्हारा मालिक और तुम्हारा शासक। दिन के समय एवं रात्रि बेला में वह अपने आदेश से तुम्हारी क्रियाओं को निर्धारित करता है।

कहो, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, वह वास्तव में ईश्वर का प्राथमिक आवरण है। इस आवरण के परे, तुम ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं पाओगे जबकि इसके नीचे तुम्हें ईश्वर से प्रकट होने वाली समस्त वस्तुएँ दिखायी दे सकती हैं। वह अदृश्य, अगम्य, सर्वोच्च, परम प्रियतम है।

यदि तुम्हें ईश्वर की तलाश है, तो तुम्हारे लिये उसे खोजना उचित होगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, और यदि तुम नामों की नौका में निवास करने की इच्छा संजोये हुए हो, तो तुम उसकी ओर मार्गदर्शन करने वालों के रूप में प्रतिष्ठित होगे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, यदि तुम उसमें विश्वास करते हो। वस्तुतः तब अपने हृदयों को उसके उन उदात्त नामों का दिवास्रोत बना लो, जो कि इस पुस्तक में दर्ज किये गये हैं, ताकि तुम, सूर्य के समक्ष रखे गये दर्पणों की भाँति प्रतिबिम्ब प्राप्त कर सकोगे। XVI.17.

यदि कोई व्यक्ति किसी बात का दावा करे और अपने प्रमाण प्रस्तुत करे, तो उनके लिये जो उसका खण्डन करना चाहते हैं, आवश्यक है कि उसकी भाँति, वे भी प्रमाण प्रस्तुत करें।

यदि वे ऐसा करने में सफल हो जाते हैं, तो पहले व्यक्ति के शब्द व्यर्थ साबित होंगे और वे अप्रमाणित होंगे; अन्यथा न तो उसके शब्द समाप्त होंगे, न ही उसके द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमाण रद्द होंगे। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, हे तुम जो 'बयान' से सुशोभित हो, यदि तुम अपने आधिपत्य का दावा करने के लिये उत्सुक हो, तो किसी व्यक्ति का सामना तब तक न करो जब तक तुम वैसे प्रमाण प्रस्तुत न कर सको, जो उसने प्रस्तुत किये हों; क्योंकि तब सत्य दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जायेगा, जबकि इसके अतिरिक्त अन्य सब का नष्ट होना निश्चित है।

कितने असंख्य लोग थे जो, ईश्वर के संदेशवाहक, मुहम्मद के साथ विवाद करने में लगे रहते थे और जो अन्त में शून्य में विलीन हो गये, क्योंकि वे वैसे प्रमाण प्रस्तुत करने में असमर्थ थे जो ईश्वर ने 'उन' तक भेजे थे। यदि वे लज्जित एवं विनीत होते, और यदि वे उन प्रमाणों की प्रकृति को समझ पाते जिनसे वह विभूषित थे, तो वे उन्हें चुनौती कभी न देते। परन्तु वे स्वयं को अपने धर्म के हिमायती समझते थे। अतः उनकी पात्रतानुसार ईश्वर ने उन पर प्रहार किया और सत्य की शक्ति के माध्यम से सत्य को सिद्ध किया। यह वही है जो आज तुम इस्लामी धर्मकाल में स्पष्ट रूप से देख रहे हो।

तुम्हारे बीच ऐसा कौन है जो प्रत्येक विधान में वास्तवकिता के उदात्त राजसिंहासनों को चुनौती दे सकता है, जबकि समस्त अस्तित्व पूर्णतया उस पर आश्रित है ? ईश्वर ने वास्तव में उन सभी को मिटा दिया है जिन्होंने उस प्रारम्भ से, जिसका कोई आरम्भ नहीं, वर्तमान दिवस तक उसका विरोध किया है और सत्य की शक्ति के माध्यम से सत्य को निर्णायक रूप से सिद्ध किया है। वस्तुतः वह सर्वशक्तिशाली, सर्वसमर्थ, सर्वबलशाली है। XVII.11.

हे तुम जो बयान से सम्पन्न हो ! पुनरूत्थान दिवस में तुम चौकन्ने रहना, क्योंकि, उस दिवस में तुम्हें 'बयान' के वाहिद में दृढ़ विश्वास हो जायेगा, यद्यपि, तुम्हारे पिछले धर्म की तरह ही, जो कि किसी काम न आ सका, यह भी तुम्हें कदापि लाभ नहीं पहुँचा सकेगा, जब तक कि तुम उसके धर्म को स्वीकार नहीं करते जिसे ईश्वर प्रकट करेगा और उसमें विश्वास नहीं करते जो वह विहित करेगा। अतः तुम भलीभाँति ध्यान दो, कहीं तुम स्वयं को उससे विमुख न कर बैठो जो सभी संदेशवाहकों एवं पावन ग्रंथों का निर्झर-स्रोत है। इन स्रोतों से प्रकट होने वाली शिक्षाओं के कुछ अंशों को तुम दृढ़तापूर्वक अपना लो। XVII.15.

इस पर विचार करो, कि किस प्रकार, प्रत्येक प्रकटीकरण के आगमन के समय में, वे जो अपने हृदयों के द्वार उस प्रकटीकरण के रचयिता के प्रति खोलते हैं, सत्य को पहचान जाते हैं, जबकि उनके हृदय, जो कि सत्य को समझने में विफल रहते हैं, स्वयं को उससे विमुख करने के कारण दुःखी हो जाते हैं। फिर भी ईश्वर द्वारा दोनों पक्षों को समान रूप से हृदय की विशालता प्रदान की जाती है। ईश्वर किसी के हृदय को दुःखी करना नहीं चाहता, भले ही वह एक चींटी ही क्यों न हो, फिर एक श्रेष्ठ जीव के हृदय को कैसे दुःखी कर सकता है, सिवाय उस समय के, जब वह स्वयं को परदों में आवृत करने का दुःख देता है, क्योंकि ईश्वर सभी वस्तुओं का सृजनकर्ता है।

यदि उसके धर्म को स्वीकार करने में, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तुम एक भी व्यक्ति की सहायता करके उसके हृदय के द्वार खोलते, तो तुम्हारा अन्तरतम अस्तित्व उस भव्य नाम की प्रेरणाओं से भर जाता। अतः पुनरूत्थान दिवसों में यह कार्य निष्पादित करना तुम्हारे ज़िम्मे है, क्योंकि अधिकांश लोग असहाय हैं, और यदि तुम उनके हृदय के द्वार खोलते हो और उनके सन्देह दूर करते हो, तो वे ईश्वर के धर्म में आस्था व्यक्त करेंगे। अतः तुम उसके दिवसों में, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, अपनी पूरी क्षमता के साथ यह गुण प्रदर्शित करना, क्योंकि, सत्य ही, यदि तुम उसके लिये किसी व्यक्ति के हृदय के द्वार खोलते हो, तो यह तुम्हारे लिये प्रत्येक सद्कर्म से बेहतर होगा; क्योंकि उसमें विश्वास तथा उसकी वास्तविकता में आस्था के समक्ष, कर्म गौण हैं। XVII.15.

प्रत्येक आत्मा के शब्दों पर सावधानीपूर्वक विचार करने पर ध्यान दो, फिर उन प्रमाणों को दृढ़ता से थाम लो जो सत्य को प्रमाणित करते हैं। यदि तुम्हें किसी व्यक्ति के शब्दों में सत्यता दिखायी न दे, तो इन्हें विवाद का कारण न बनने दो, क्योंकि 'बयान' में तुम्हें व्यर्थ तर्क-वितर्क एवं विवाद में उलझने से मना किया गया है, ताकि पुनरूत्थान के दिवस में कदाचित तुम बहस में उलझकर उससे विवाद न कर बैठो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। XVII.16.

पुनरूत्थान दिवस में, जब वह, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, निर्णायक प्रमाणों से विभूषित होकर तुम्हारे समक्ष आयेगा, तो तुम उसके धर्म को सत्यहीन ठहराओगे, जबकि 'बयान' में ईश्वर ने तुम्हें अवगत कराया है, कि उसके धर्म में, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, और दूसरों के

धर्म में कोई तुलना नहीं है। ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य, ऐसा श्लोक कैसे प्रकट कर सकता है जो सम्पूर्ण मानवजाति को अभिभूत कर दे ? कहो ! महान है ईश्वर ! उसके अतिरिक्त, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा अन्य कौन स्वतः ऐसे श्लोक उच्चारित कर सकता है जो उसके स्वामी की ओर से आते हैं - एक ऐसा असाधारण कार्य जिसे सम्पादित करने की आशा कोई भी नश्वर मनुष्य कभी नहीं कर सकता ?

सत्य को, इसके स्वयं के अतिरिक्त, अन्य किसी से कदापि नहीं मिलाया जा सकता; कदाचित तुम उसके प्रमाण पर विचार करते। न ही भ्रम को सत्य के साथ सम्भ्रांत किया जा सकता है, यदि तुम कदाचित उस एक सत्य ईश्वर के प्रमाण पर मनन करते।

ऐसे लोगों की संख्या कितनी अधिक है जिन्होंने इस्लाम के अन्दर ही एक प्रयोजन का झूठा दावा किया है, और तुम, एक भी प्रमाण देखे बगैर, उनके पदचिह्नों पर चल दिये। तब तुम स्वामी की उपस्थिति में क्या सबूत प्रस्तुत कर सकते हो, यदि तुम कदाचित इस पर कुछ देर मनन करते?

तुम अपनी रात्रि[72] में भलीभाँति ध्यान दो कहीं तुम किसी आत्मा के दुःख का कारण न बन जाओ, चाहे तुम उसमें प्रमाण देख सको या नहीं, ताकि पुनरूत्थान दिवस में, कदाचित तुम उसे दुःखी न कर बैठो जिसकी मुट्ठी में प्रत्येक प्रमाण समाये हैं। और जब तुम्हें एक व्यक्ति में ईश्वर का प्रमाण दिखायी न दे, तो वह सत्य की शक्ति प्रकट करने में वस्तुतः विफल रहेगा; और उससे निपटने के लिये ईश्वर पर्याप्त है। तुम्हें वास्तव में किसी भी व्यक्ति को उदास नहीं करना चाहिए; ईश्वर निश्चित रूप से उसकी परीक्षा लेगा और उसका हिसाब करेगा। तुम्हारे लिये यह उचित है कि तुम अपने स्वयं के धर्म का दृढ़तापूर्वक साथ देते रहो और 'बयान' में निर्धारित किये गये आदेशों का पालन करो।

तुम उस व्यक्ति की भाँति हो जो एक फलोद्यान तैयार करता है और उसमें सभी प्रकार के फलों के वृक्ष रोपता है। जब उस स्वामी के आगमन का समय आता है, तब तुम उसके नाम से इस फलोद्यान पर कब्ज़ा कर लेते हो और जब वह स्वयं आता है, तो तुम उसे इससे दूर कर देते हो।

हमने वस्तुतः कुरआन का वृक्ष रोपा तथा इसके फलोद्यान में हर प्रकार के फल उपलब्ध कराये, जिनका तुम सभी भाग ग्रहण करते रहे हो। फिर जब हम उसे अधिकार में लेने आये जो हमने रोपा था, तो तुमने, उसे न पहचानने का साहस किया, जो उसका स्वामी है।

तुम हमारे लिये दुःख का कारण न बनो, न ही इस फलोद्यान से, जो हमारा है, हमें वंचित रखो, यद्यपि हम उन सभी से स्वतंत्र हैं जो तुम्हारे पास है। साथ ही, हम इस सम्पत्ति को, तुम में से किसी के लिये भी वैध नहीं बनायेंगे, चाहे यह सरसों के दाने जितना ही क्यों न हो। वस्तुतः, हिसाब हम लेते हैं।

हमने उसके नाम से 'बयान' का उद्यान रोपा है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, और उसके प्रकटीकरण के समय तक तुम्हें इसमें रहने की अनुमति प्रदान की है; अतः उस क्षण से, जब उसके धर्म का प्रारम्भ होगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, हम उन सभी वस्तुओं को तुम्हारे लिये निषिद्ध ठहराते हैं जिन्हें तुम अपनी समझते हो, जब तक कि तुम उसकी अनुमति से इनका स्वामित्व पुनः प्राप्त नहीं कर लेते। XVIII.3

हे तुम जिन्हें 'बयान' दी गयी है ! सावधान रहो, कहीं तुम उसके दिवसों में, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, स्वयं को ईश्वर की सुप्रसन्नता प्राप्त करने वाले न समझ बैठो, जबकि, वास्तव में तुम वह करते रहे हो जो उसे केवल अप्रसन्न करता है उसी प्रकार, जैसे उन्होंने किया था जो प्रथमिक बिन्दु के समय में जीवित थे, जिन्हें कभी यह विचार नहीं आया कि वे उन वस्तुओं की चाह रखते हैं जो उसके विपरीत हैं जो ईश्वर चाहता था। उन्होंने मानों एक परदे के द्वारा स्वयं को ईश्वर से दूर कर लिया था और उसका पालन करने में विफल रहे जो वह चाहता था। उन्होंने ऐसे लोगों के विषय में नहीं सोचा जो मुहम्मद के दिवसों में जीवित थे, जो यह मानते थे कि उन्हें ईश्वर की सुप्रसन्नता की चाह है, जबकि वास्तव में, एक बार मुहम्मद की सुप्रसन्नता प्राप्त करने में विफल होने पर वे स्वयं को इससे वंचित कर चुके थे। किन्तु वे समझ न सके।

हे तुम जो 'बयान' से सम्पन्न हो ! स्वयं को उन लोगों जैसा न समझो जिन्हें कुरआन या बाईबिल या अतीत के अन्य पावन ग्रंथ दिये गये थे, क्योंकि उसके प्रकटीकरण के समय में, तुम उनकी तुलना में ईश्वर से और भी दूर भटक जाओगे। यदि तुम स्वयं को विमुख कर लेते हो, तो तुम्हें कभी यह विचार भी नहीं आयेगा कि तुम उससे विमुख थे। तुम्हारे लिये यह उचित है कि तुम इस पर विचार करो कि वे लोग जिन्हें कुरआन दिया गया था, किस प्रकार सत्य से दूर कर दिये गये, इस प्रकार तुम भी आचरण तो उन जैसा करोगे पर सोचेगे कि तुम अच्छे कर्म कर रहे हो। यदि तुम समझ सकते कि तुम ईश्वर से किस हद तक दूर हो, तो तुम धरती के तल से नष्ट हो कर विस्मृति की अतल गहराइयों में डूब जाने की इच्छा

करते। वह दिन आयेगा जब तुम उत्सुकतापूर्वक वह जानना चाहोगे जिससे ईश्वर की सुप्रसन्नता प्राप्त हो सके, परन्तु, हाय, उस तक पहुँचने का तुम्हें कोई मार्ग न मिलेगा। उन ऊँटों की भाँति जो निरुद्देश्य भटकते रहते हैं, तुम्हें ऐसा चारागाह नहीं मिलेगा जिसमें तुम एकत्र हो सकते हो और एक ऐसे धर्म के समीप आ सकते हो जिसमें तुम निश्चय ही विश्वास कर सको। तब ईश्वर सत्य के उस सूर्य को प्रकट करेगा तथा उसके वरदान एवं कृपा के महासागरों को तरंगित करेगा, जबकि अपनी कामना के लक्ष्य के रूप में तुम पानी की बूंदे चुन चुके होगे और स्वयं को उसके सागर के अथाह जल से वंचित कर चुके होगे।

यदि इस विषय में तुम्हें कोई सन्देह है, तो उन लोगों के बारे में विचार करो जिन्हें बाईबिल दी गयी थी। ईसा मसीह के धर्मप्रचारकों तक पहुँचने का कोई मार्ग न होने की स्थिति में, उन्होंने, यह जानने की आशा में कि ईश्वर को क्या स्वीकार्य है, उस स्वामी की सुप्रसन्नता को गिरजाघरों में प्राप्त करना चाहा। फिर जब ईश्वर ने मुहम्मद को अपने संदेशवाहक एवं अपनी सुप्रसन्नता के कोषागार के रूप में प्रकट किया, तो उन्होंने अपने स्वामी की उपस्थिति से प्रवाहित होने वाले जीवन्त जल के निर्झर स्रोत से अपनी आत्माओं को अनुप्राणित करने के प्रति लापरवाही की और पानी की एक बूँद की खोज में, तथा इस विश्वास में धरती पर अभिशप्त भटकना जारी रखा कि वे सद्कर्म कर रहे हैं। उन्होंने वैसा ही आचरण किया जैसा आज वे कर रहे हैं जिन्हें कुरआन दी गयी थी।

हे तुम जो 'बयान' से सुशोभित हो ! तुम भी ऐसा आचरण कर सकते हो। अतः सावधान रहो, कहीं, इसके बावजूद, कि तुम उसका मुखमण्डल देखने के लिये दिन-रात प्रार्थना करते रहे हो, तुम उसकी उपस्थिति प्राप्त करने से, जो ईश्वर का अवतार है, स्वयं को वंचित न कर दो; और तुम सावधान रहो, कहीं एक पानी की बूँद की खोज में, जब तुम व्याकुल एवं बगैर किसी लाभ के धरती पर भटक रहे हो, तब तुम उसकी सुप्रसन्नता के महासागर तक पहुँचने से न रोक दिये जाओ।

कहो, 'बयान' में ईश्वर का प्रमाण पूर्ण किया गया है और इसके प्रकटीकरण के माध्यम से, समस्त मानवजाति के लिये ईश्वर की कृपा अपने उच्चतम निष्पादन को प्राप्त हुई है। तुम में से कोई भी यह न कह सके कि ईश्वर ने अपनी उदारता के उद्गार को तुम तक आने से रोका है, क्योंकि निश्चय है जिन्हें 'बयान' दिया गया है, उनके प्रति, पुनरूत्थान दिवस तक, ईश्वर की दया पूर्ण की जा चुकी है। कदाचित तुम ईश्वर के चिह्नों में विश्वास करते। XVI.13

वस्तुतः जिस पर 'बयान' प्रकट किया गया था उसकी शक्ति के माध्यम से, ईश्वर ने उस दिवस की तैयारी में 'बयान' के लोगों को अस्तित्व प्रदान किया है, जब वे अपने स्वामी की ओर वापस लौट जायेंगे।

वास्तव में, जो उसके प्रति निष्ठावान रहेंगे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, वे वही लोग हैं जिन्होंने उसका अर्थ समझ लिया है जो 'बयान' में प्रकट किया गया है; वे वास्तव में सच्चे हैं, जबकि वे जो उसके आगमन पर उससे विमुख हो जायेंगे, बयान का एक अक्षर भी समझने में पूर्णतया विफल रहेंगे, यद्यपि इसमें जो कुछ भी प्रकट किया गया है उसमें वे विश्वास एवं निश्चय प्रदर्शित करें अथवा इसके नियमों का पालन करें।

कहो, 'बयान' में दिये गये प्रत्येक प्रशंसनीय पद, उनके लिये एक संकेत मात्र है जो उसे पहचानेंगे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा और जो निश्चित रूप से ईश्वर और उसके पावन लेखों में विश्वास करते हैं, जबकि इसमें दिया गया प्रत्येक अप्रशंसनीय पद उनकी ओर संकेत करता है जो उसे अस्वीकार करेंगे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, यद्यपि वे 'बयान' में निर्धारित सीमाओं के भीतर रहकर सद्कर्म करते हैं। कहो, यदि तुम पुनरूत्थान के दिवस में सत्य को स्वीकार करते हो, तो निश्चय ही, तुम्हारी रात्रि[73] के लिये ईश्वर तुम्हें माफ कर देगा और तुम्हें क्षमादान देगा।

जहाँ तक उनका प्रश्न है जिन्होंने बयान के प्रकटीकरण के प्रारम्भ से उस दिवस तक इसके आदेशों का निष्ठापूर्वक अनुपालन किया है, जब वह प्रकट होगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा तो वास्तव में, ये उसकी सुप्रसन्नता के स्वर्ग के साथी हैं जो ईश्वर की उपस्थिति में महिमामण्डित किये जायेंगे और उसके दिव्य उद्यान के मण्डप में निवास करेंगे। फिर भी, उस क्षण से, जब ईश्वर उसे प्रकट कर चुका होगा जो स्वयं उसका अवतार है, एक क्षण के लघुतम अंश से भी कम समय के भीतर ही, बयान के अनुयायियों के सम्पूर्ण दल की परीक्षा ली जायेगी। XVII.1.

चूँकि तुमने पूर्व में ईश्वर के सत्य धर्म का निष्ठापूर्वक पालन किया है, अतः तुम्हारे लिये यह उचित है कि भविष्य में भी तुम उसके सत्य धर्म का पालन करो, क्योंकि प्रत्येक धर्म उस संकट में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर की ओर से भेजा गया है।

वह जिसने, इस्लाम धर्म में वह विहित करते हुए, जो उसे प्रिय था, ईश्वर के संदेशवाहक, मुहम्मद पर कुरआन प्रकट की थी, उसने, उसी प्रकार, जैसा कि प्रतिज्ञापित था, उस पर 'बयान' प्रकट की है जो तुम्हारा काईम,[74] तुम्हारा मार्गदर्शक, तुम्हारा मेहदी,[75] तुम्हारा स्वामी है जिसका तुम, ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट उपाधियों के अवतार के रूप में जयघोष करते हो। वस्तुतः ईश्वर ने मुहम्मद पर 23 वर्षों में जो प्रकट किया, उसकी तुलना में, मुझ पर दो दिन और दो रातों की अवधि के दौरान प्रकट किया गया। फिर भी, जैसा कि ईश्वर ने विहित किया है, दोनों के बीच कोई विभेद नहीं किया जाना चाहिए। वह, सत्य ही, सभी वस्तुओं पर उसकी शक्ति का आधिपत्य है।

मैं उसके जीवन की सौगंध खाता हूँ जिसे ईश्वर प्रकट करेगा ! मेरा प्रकटीकरण, ईश्वर के संदेशवाहक मुहम्मद के प्रकटीकरण से कहीं अधिक विस्मयकारी है, यदि कदाचित तुम रुक कर ईश्वर के दिवसों पर मनन करते। देखो, कितना आश्चर्यजनक है, कि एक व्यक्ति को, जो फारस के लोगों के बीच पला-बढ़ा है, ईश्वर द्वारा ऐसे अकाट्य वाणी उद्घोषित करने के लिये सशक्त बनाया गया है जो प्रत्येक ज्ञानी व्यक्ति को हतप्रभ कर दे और किसी की भी लिखने की सम्भावित क्षमता से कहीं अधिक तीव्र गति से श्लोक प्रकट करने में समर्थ बनाया गया। वस्तुतः, उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी। XVI.18

जहाँ तक उनका प्रश्न है जिन्होंने स्वयं को ईश्वर के प्रकटीकरण से वंचित कर लिया है, वास्तव में, वे कुरआन के एक भी अक्षर के महत्व को समझने में विफल रहे हैं, न ही उन्होंने इस्लाम धर्म का लेशमात्र बोध प्राप्त किया है, अन्यथा वे धर्म के फिरकों से लिपट कर, यह सोचते हुए कि वे ईश्वर के लिये सद्कर्म कर रहे हैं, उस ईश्वर से विमुख नहीं होते जिसने उन्हें अस्तित्व प्रदान किया है, जिसने उन्हें पोषित किया है, उन्हें मृत्यु को प्राप्त कराया है और उन्हें जीवन प्रदान किया है।

कितने असंख्य हैं वे श्लोक, जिन्हें उन परीक्षाओं के विषय में प्रकट किये गये हैं जो न्याय के दिवस में ली जायेंगी, फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने कभी भी इनका अवलोकन नहीं किया; और कितनी विशाल है उन स्मृतियों की संख्या जो हमारी वापसी के दिवस में

तुम पर पड़ने वाली विपत्तियों के विषय में प्रकट की गयीं हैं, फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने कभी इनकी ओर देखा ही नहीं।

तुम अपने समस्त दिन, अपने धर्म के सिद्धान्तों की अभिरचना और नियमों का आविष्कार करने में व्यतीत कर देते हो, जबकि इन सभी से, तुम्हें जो लाभ पहुँचा सकेगा, वह है तुम्हारे स्वामी की सुप्रसन्नता को समझना एवं एक होकर उसके सर्वोच्च उद्देश्य से भलीभाँति परिचित होना।

ईश्वर ने स्वयं को तुम पर प्रकट किया है, परन्तु उसे पहचानने में तुम विफल रहे; और न्याय के दिवस में जो तुम्हें ईश्वर से दूर करेगा, वह है तुम्हारे कर्मों का निरर्थक स्वरूप। ईश्वर की सुप्रसन्नता को आकर्षित करने के लिये तुम जीवन भर अपने धर्म का पालन करते हो, फिर भी अन्तिम दिवस में तुम स्वयं को ईश्वर से दूर कर लेते हो और उससे विमुख हो जाते हो, जो तुम्हारा प्रतिज्ञापित है। XVII.2

हे तुम जो 'बयान' से सुशोभित हो ! जिन्हें कुरआन दी गयी थी, उन्ही की तरह तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी। अपने आप पर तरस खाओ, क्योंकि तुम वह दिन देखोगे जब स्पष्ट एवं अकाट्य प्रमाणों से विभूषित करके, ईश्वर उसे प्रकट करेगा जो स्वयं उसका प्रकटीकरण है, जबकि तुम 'बयान' के गवाहों द्वारा उच्चारित किये गये शब्दों से कसकर लिपटे रहोगे। उस दिन ऊँटों की भाँति, जीवन जल की खोज में तुम विक्षिप्त भटकते रहोगे। जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उसकी उपस्थिति से, वह ईश्वर जीवन्त जल के महासागरों को प्रवाहित करायेगा, जबकि तुम इससे अपनी तृष्णा शान्त करने से इन्कार कर दोगे, बावजूद इसके, कि तुम स्वयं को ईश्वर से डरने वाले समझते हो। नहीं ! और एक बार फिर, नहीं ! तुम उन लोगों से भी कहीं अधिक दूर भटक जाओगे जिन्हें बाईबिल, या कुरआन, या अन्य कोई पावन ग्रंथ दिया गया था। स्वयं के प्रति सावधान रहो, क्योंकि ईश्वर का धर्म ऐसे किसी भी समय तुम्हारे समक्ष आ पहुँचेगा, जब तुम सभी, ईश्वर से, उसके प्रकटीकरण के आगमन के दिवस के लिये अनुनय-विनय कर रहे होगे और अश्रुपूरित नेत्रों से याचना कर रहे होगे; फिर भी, जब वह आयेगा, तो तुम हिचकिचाओगे और उनमें से एक बनने में विफल रहोगे, जो उसके धर्म में भलीभाँति अवस्थित हैं।

सावधान, कहीं तुम उसे दुःखी न करो, जो तुम्हारे स्वामी का सर्वोच्च प्रकटीकरण है; वस्तुतः, उसे तुम्हारी निष्ठा की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम सावधान रहना और किसी आत्मा को उदास न करना, क्योंकि निश्चित रूप से तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी। XVII.2

कहो, वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, निश्चित रूप से उन लोगों के अधिकार पुनः प्राप्त करायेगा जो ईश्वर में तथा उसके चिह्नों में सच्चा विश्वास करते हैं, क्योंकि केवल वे ही ऐसे लोग हैं जो उसकी उपस्थिति में पुरस्कार के पात्र हैं। कहो, 'वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा', की महिमा से दूर है कि उसके नाम का उल्लेख कोई किसी भी प्रकार करे, यदि तुम अपने हृदय में ईश्वर के धर्म पर विचार करो। कहो, वह अपने आदेश की शक्ति से अपने धर्म को प्रमाणित करेगा तथा अपने आदेश से सत्य के सम्पूर्ण विकृत रूप को समाप्त कर देगा। वस्तुतः, ईश्वर सभी वस्तुओं पर आधिपत्य रखता है।

यदि तुम सत्य को भ्रम से पृथक करना चाहते हो, तो उनके विषय में विचार करो, जो उसमें, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, विश्वास करते हैं, एवं उनके, जो उसके प्रकटीकरण के समय, उसमें अविश्वास करते हैं। जैसा कि ईश्वर के ग्रंथ में सत्यापित किया गया है, पहले, सत्य के सार के प्रतीक हैं, जबकि दूसरे, जैसा कि उसी ग्रंथ में सत्यापित किया गया है, भ्रम के सार के प्रतीक हैं। ईश्वर से डरो ताकि तुम सत्य के अतिरिक्त अन्य किसी से स्वयं का तादात्म्य स्थापित न करो, क्योंकि जो अनन्त सत्य है, उसका नाम धारण करने वालों के रूप में पहचाने जाने के कारण 'बयान' में तुम्हें उदात्त किया गया है।

कहो, यदि वह, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, बयान के किसी धर्मपरायण एवं सच्चे अनुयायी को झूठा घोषित कर देता है, तो उसके आदेश के समक्ष झुक जाना तुम्हारे लिये आवश्यक है, क्योंकि बयान में ईश्वर द्वारा इसकी पुष्टि की गयी है; वस्तुतः ईश्वर जब चाहे, प्रकाश को अग्नि में परिवर्तित कर सकते हैं; निश्चित ही, वह सभी वस्तुओं पर शक्ति सम्पन्न है और यदि एक ऐसे व्यक्ति को, जिसे तुम सत्य से अपरिचित समझते हो, इससे अभिज्ञ घोषित कर दो, तो अपनी व्यर्थ कल्पनाओं के कारण 'उसके' निर्णय पर सन्देह करने की भूल न करना, क्योंकि उसने, जो परम सत्य है, अपने आदेश से वस्तुओं का सृजन किया है। वस्तुतः, ईश्वर अपनी इच्छानुसार अग्नि को प्रकाश में तत्वान्तरित करता है और वास्तव में, वह सभी वस्तुओं पर शक्ति सम्पन्न है। विचार करो, कि उस प्रथम दिवस में, सत्य किस

प्रकार देदीप्यमान हुआ और भ्रम, भ्रम के रूप में प्रत्यक्ष हुआ; पुनरूत्थान के दिवस में भी, तुम इसी प्रकार इन्हें एक-दूसरे से पृथक करोगे। XVII.4

उन लोगों पर विचार करो जिन्हें गॉस्पल दी गई थी। उनके धार्मिक नेता, बाईबिल के सच्चे मार्गदर्शक समझे जाते थे, फिर भी, जब उन्होंने स्वयं को ईश्वर के संदेशवाहक, मुहम्मद से दूर कर लिया, तो वे भ्रम के मार्गदर्शक बन गये, इसके बावजूद कि स्वर्ग प्राप्त करने के लिये, उन्होंने जीवन भर अपने धर्म के सिद्धान्तों का निष्ठापूर्वक पालन किया था; फिर जब ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग दिखाया, तो उन्होंने उसमें प्रवेश नहीं किया। उन्होंने भी ऐसा ही किया जिन्हें कुरआन दी गयी है। उन्होंने भक्ति के अपने कार्य इस आशा में ईश्वर के लिये किये कि सम्भवतया, वह उन्हें स्वर्ग में सदाचारी लोगों के साथ शामिल होने में समर्थ बनाये। परन्तु, जब उनके समक्ष स्वर्ग के द्वार खोल दिये गये, तो उन्होंने प्रवेश करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने स्वयं को अग्नि में प्रवेश करने का दुःख दिया, यद्यपि इससे बचने के लिये वे ईश्वर का आश्रय चाहते थे।

कहो, वस्तुतः पुनरूत्थान के दिवस तक वह कसौटी प्रकट नहीं होगी जिससे सत्य को भ्रम से अलग किया जाता है। यदि तुम उनमें से हो जो सत्य से प्रेम करते हैं, तो तुम इसे जानो और पुनरूत्थान के दिवस के आगमन से पहले, वह जो 'बयान' में प्रकट किया गया है, उसके अनुसार तुम सत्य को, इसके अतिरिक्त अन्य सभी कुछ से अलग करोगे।

ऐसे लोगों की संख्या कितनी अधिक है, जो पुनरूत्थान के दिवस में, स्वयं को सही समझेंगे, जबकि उस परमेश्वर के विधान के माध्यम से, वे झूठों में गिने जायेंगे, क्योंकि वे स्वयं को उससे, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, मानो एक आवरण द्वारा दूर कर लेंगे और जैसाकि ग्रंथ में दैवी आदेश दिया गया है, उसके समक्ष आराधना में माथा टेकने से इन्कार कर देंगे, जो उनके सृजन का लक्ष्य है। XVII.4

कहो, तुम उस एकसत्य ईश्वर को नहीं पहचान सकोगे, न ही दिव्य मार्गदर्शन के शब्दों को स्पष्ट रूप से पहचान सकोगे, क्योंकि तुम एक अन्य मार्ग की चाह रखते हो और उस पर चलते हो, जो उसका नहीं है। जब भी तुम यह जानकारी प्राप्त करो कि एक नया धर्म प्रकट हुआ है, तो उसके प्रवर्तक की उपस्थिति प्राप्त करनी चाहिए, ताकि, उसके प्रकटीकरण की

घड़ी में, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, कदाचित तुम उस तक पहुँचने से रोके न जाओ। यदि तुम सत्य के उस मार्ग पर चलते जो उनके द्वारा विरासत में दिया गया है, जो अन्तर्तम वास्तविकता के ज्ञान से सम्पन्न हैं, तो पुनरूत्थान के दिवस में, वह ईश्वर, तुम्हारा स्वामी, निश्चित रूप से तुम्हारा उद्धार करेगा। वस्तुतः वह सभी वस्तुओं पर शक्ति सम्पन्न है।

किसी भी आत्मा के लिये न्याय करने से, 'बयान' में ईश्वर ने सभी को निषिद्ध किया है, ताकि कहीं वह उस ईश्वर, अपने स्वामी पर दण्डादेश पारित न कर दे, जबकि स्वयं को सदाचारियों में से एक समझता रहे, क्योंकि कोई नहीं जानता कि ईश्वर का धर्म किस प्रकार शुरु या समाप्त होगा।

हे तुम जो 'बयान' से सम्पन्न हो ! यदि तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति के विषय में अवगत कराया जाये जो एक धर्म का दावा कर रहा हो और ऐसे श्लोक प्रकट कर रहा हो जो बाह्य रुप से ऐसे प्रतीत होते हों, जिनका, उस संकट में सहायक, स्वयंजीवी ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य द्वारा प्रकट किया जाना असम्भव हो, तो उसके विरुद्ध दण्डादेश पारित न करो, कहीं अनजाने में तुम उसके विरुद्ध दण्डादेश पारित न कर दो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। कहो, वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तुम में से ही एक है; पुनरूत्थान के दिवस में वह स्वयं को तुम पर प्रकट करेगा। तुम ईश्वर से परिचित हो जाओगे, जब स्वयं उसका अवतार तुम पर प्रकट किया जायेगा, ताकि कदाचित तुम उसके मार्ग से भटक न जाओ।

वस्तुतः ईश्वर उसे उत्थित करेगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा तथा उसके पश्चात वह जिसे चाहे उसे, उसी प्रकार जैसे बयान के बिन्दु के पूर्व भी उसने अवतार उत्थित किये थे। सत्य ही, उसकी शक्ति सभी वस्तुओं पर है। XVII.4

वास्तव में:, हमने उस प्रथम दिवस में दुनिया के सभी लोगों के समक्ष स्वर्ग के द्वार खोलकर दिये और घोषित किया: 'हे समस्त सृजित वस्तुओं! स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त करने का यत्न करो, क्योंकि इसे प्राप्त करने के लिये, तुमने अपने सम्पूर्ण जीवन काल के दौरान, सद्गुणों को कसकर थामा है।' निश्चित रूप से, इसमें प्रवेश करने के लिये सभी मनुष्य तरसते हैं, परन्तु हाय! जो कृत्य उनके हाथों ने किये हैं, इसके कारण, वे ऐसा करने में असमर्थ हैं। फिर भी, इससे पहले कि वह स्वयं को प्रकट करे, यदि तुम, अपने अन्तर्तम हृदय में ईश्वर का सच्चा

ज्ञान प्राप्त कर लो, तो तुम उसके प्रत्यक्ष एवं भव्य रूप में उसे तब पहचान सकोगे, जब सभी मनुष्यों के समक्ष वह स्वयं को अनावृत करेगा। XVII.11

कहो, तुम्हारे द्वारा उसका स्मरण किये जाने के कारण, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तथा उसके नाम की प्रशंसा करने से, ईश्वर तुम्हारे हृदयों को आनन्द से भर देगा, और क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे हृदय इस सुखद अवस्था में रहें ? सत्य ही, उनके हृदय आकाश और धरती तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, के विस्तार से भी अधिक विशाल हैं, जो उसमें सच्चा विश्वास करते हैं जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। उनके हृदय में ईश्वर ने सरसों के दाने जितना भी अवरोध नहीं डाला। उसके नाम के उत्कर्षण के माध्यम से, जो ईश्वर का सर्वोच्च प्रमाण है एवं उसके शब्द के प्रचार-प्रसार के माध्यम से, जो उनके सृष्टिकर्ता की महिमा का दिवानक्षत्र है, वह, उनके हृदयों, चेतना, आत्मा एवं शरीर, एवं उनकी समृद्धि या विपत्ति के दिनों को आनन्दित कर देगा।

वस्तुतः, ये वे आत्मायें हैं जो उस ईश्वर के स्मरण से हर्षित होती हैं, जो ज्ञान एवं बुद्धि के प्रकाश की प्रभा से उनके हृदयों को विशाल बना देता है। वे, ईश्वर के अतिरिक्त, अन्य कुछ भी प्राप्त करना नहीं चाहते और उसके गुणगान में संलग्न रहते हैं। जो वह चाहता है, वे उसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं चाहते तथा उसके आदेश का पालन करने के लिये तैयार खड़े रहते हैं। उनके हृदय ऐसे दर्पण हैं जो वही प्रतिबिम्बित करते हैं जो उसकी इच्छा होती है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। अतः ईश्वर उन्हें आनन्दित करेगा जो उसमें और उसके चिह्नों में सच्चा विश्वास करते हैं और जो उस आने वाले जीवन के विषय के प्रति भलीभाँति आश्वस्त हैं। कहो, आने वाला जीवन, वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा के आगमन से सम्बद्ध दिवसों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।

ईश्वर के आदेशों को अपनी स्वयं की अवास्तविक कल्पनाओं से निम्नीकृत न करो; अपितु उन सब वस्तुओं का पालन करो जो ईश्वर ने चेतना के नेत्र से अपने आदेश के द्वारा वैसे ही सृजित की हैं जैसे तुम अपने शरीर के नेत्रों से किसी वस्तु को देखते हो। XVII.15

जो दिव्य प्रकटीकरण उसके आगमन से जुड़ा है जो तुम्हारा प्रतिज्ञापित मेहदी है, उस प्रकटीकरण से कहीं अधिक अद्‌भुत सिद्ध हुआ है, जिससे, ईश्वर के संदेशवाहक, मुहम्मद विभूषित थे। कदाचित तुम विचार करो। वस्तुतः, ईश्वर ने मुहम्मद को अरब के लोगों के बीच से तब उत्थित किया जब वे 40 वर्ष की आयु को प्राप्त हुए थे - जो एक ऐसा सत्य है

जिसकी पुष्टि और जिसका समर्थन तुम में से प्रत्येक व्यक्ति करता है - जबकि ईश्वर द्वारा तुम्हारा मुक्तिदाता 24 वर्ष की आयु में ऐसे लोगों के बीच से उत्थित किया गया था जो अरबी का एक भी शब्द बोल अथवा समझ नहीं सकते थे। इस प्रकार, अपने प्रकटित शब्द की शक्ति से, ईश्वर अपने धर्म की महिमा को प्रत्यक्ष करते हैं तथा सत्य को प्रमाणित करते हैं। वह, वास्तव में शक्तिशाली, सर्वसमर्थ, संकट में सहायक, परम प्रियतम है। XVII.4

कहो, वस्तुतः ईश्वर ने सभी वस्तुओं को अपने स्वीकृति के वृक्ष तले आने में समर्थ बनाया है, सिवाय उनके, जो ज्ञान से सम्पन्न हैं। उन्हें यह चुनाव दिया गया है कि या तो वे ईश्वर, अपने स्वामी में विश्वास करें एवं अपना सम्पूर्ण भरोसा उसमें रखें, या स्वयं को उस से पृथक कर लें और उसके चिह्नों में विश्वास करने से इन्कार कर दें। ये दो समूह, दो सागरों पर तैरते हैं: स्वीकृति का सागर और प्रतिवाद का सागर।

वे जो ईश्वर में और उसके चिह्नों में सच्चा विश्वास करते हैं और जो प्रत्येक विधान में उसका निष्ठापूर्वक पालन करते हैं जो ग्रंथ में प्रकट किया गया है - ऐसे लोग वास्तव में वे हैं जिन्हें ईश्वर ने अपनी सुप्रसन्नता के स्वर्ग के फलों से सृजित किया है, और जो सुखी लोगों में से हैं। परन्तु, वे जो प्रत्येक विधान में ईश्वर से और उसके चिह्नों से मुँह मोड़ लेते हैं, वे हैं जो प्रतिवाद के सागर पर तैरते हैं।

ईश्वर ने, अपने आदेश की शक्ति से, अभिवचन के सागर का आधिपत्य सुनिश्चित करने तथा अपने सामर्थ्य की शक्ति से प्रतिवाद के सागर का अस्तित्व समाप्त करने का कार्य स्वयं के लिये निर्धारित किया है। सत्य ही, वह सभी वस्तुओं पर शक्तिसम्पन्न है।

वस्तुतः, अपने स्वामी को उसके प्रकटीकरण के समय पहचानना तुम्हारे लिये अनिवार्य है, ताकि तुम कदाचित प्रतिवाद में संलग्न न हो जाओ और इससे पहले कि ईश्वर द्वारा कोई अवतार भेजा जाये, तुम स्वयं को अभिवचन के सागर में सुरक्षित रूप से संस्थापित पा सको। क्योंकि यदि ईश्वर की ओर से कोई अवतार तुम्हारे समक्ष आता है और उसके मार्ग पर चलने में तुम विफल रहते हो, तो इसके पश्चात ईश्वर तुम्हारे प्रकाश को अग्नि में परिवर्तित कर देगा। अतः सावधान, ईश्वर की कृपा और उसके चिह्नों के माध्यम से तुम सम्भवतः अपनी आत्मा का उद्धार कर सको। XVII.13

कहो, यदि तुम उसे पहचानने में विफल रहोगे जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तो सत्य ही, ईश्वर तुम्हारे हृदयों को दुष्टता के वशीभूत कर देगा; परन्तु यदि तुम उसे स्वीकार करोगे तो ईश्वर तुम्हारे हृदयों से दुष्टता से मुक्त कर देगा...

जब ईश्वर की इच्छा से तुम 'बयान' में दीक्षित हुए, क्या उस दिन, तुममें से कोई भी जानता था कि जीविताक्षर, या गवाह, या प्रमाण कौन हैं और अनुयायियों के नाम क्या हैं? इसी प्रकार, ईश्वर चाहता हैं कि पुनरूत्थान के दिवस में तुम उसे पहचानो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। सावधान, जिन्हें 'बयान' के बिन्दु ने अपने शब्द के उल्लेख के लिये अस्तित्व प्रदान किया था, उनके प्रति अपने सम्मान के कारण, कहीं तुम मानो एक आवरण द्वारा स्वयं को उससे दूर न कर बैठो जिसने तुम्हारी रचना की है। 'बयान' के बिन्दु ने तुम्हें अस्तित्व प्रदान किया उससे पहले क्या तुम्हारी लेशमात्र भी पहचान थी, तो फिर कोई परमादेश अथवा अधिकार के होने की सम्भावना कितनी कम है ? अतः अपने अतीत पर ध्यान न दो, ताकि सम्भवतः तुम्हारी वापसी के दिवस में तुम्हें बचाया जा सके। वास्तव में, यदि यह आदि बिन्दु के नाम के उत्कर्षण के लिये न होता, तो ईश्वर तुम्हारे लिये जीविताक्षर का विधान न करता, न ही उनका जो उसके सत्य के प्रमाण है, न ही उसके न्याय के गवाहों का; कदाचित तुम थोड़ा ध्यान देते। ये सब कुछ उसके प्रकटीकरण के समय उसके धर्म का यशोगान करने के लिये है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा; कदाचित तुम कुछ देर विचार करते।

अतः तुम्हारे लिये यह उचित है कि तुम उसी तरह ईश्वर की ओर लौट जाओ जिस तरह तुम्हें अस्तित्व प्रदान किया गया था और यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी वापसी के दौरान तुम्हारा सृजन फलित हो, तो "क्यों" एवं "नहीं" जैसे शब्द उच्चारित न करो। क्योंकि जब तक तुम उसकी ओर नहीं लौट जाते जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, तब तक तुममें से कोई भी, जिसने कि 'बयान' में जन्म लिया है, अपने आरम्भ का फल प्राप्त नहीं करेगा। वही है वह, जो ईश्वर की ओर तुम्हारे आरम्भ का तथा उसी की ओर तुम्हारी वापसी का कारण है, कदाचित तुम यह जान पाते। XVI.15

ऐसे लोगों की संख्या कितनी विशाल है, जो जीवन भर स्वयं को रेशम के वस्त्रों से अलंकृत करते हैं, जबकि अग्नि का पहनावा पहने हुए होते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं को दिव्य

मार्गदर्शन एवं सदाचार के परिधान से विवस्त्र कर लिया है; और ऐसे कितने असंख्य लोग हैं जो जीवन भर सूती या मोटे ऊन के सूत से बने कपड़े पहनते हैं, और फिर भी, दिव्य मार्गदर्शन एवं सदाचार के वस्त्रों से विभूषित होने के कारण, वे सत्य ही, स्वर्ग के परिधान से सजे हुए होते हैं और ईश्वर की सुप्रसन्नता में आनन्द प्राप्त करते हैं। यदि तुम्हारे लिये सम्भव हो तो यह अच्छा होगा कि तुम स्वयं को उत्कृष्ट रेशम के पहनावे के साथ दिव्य मार्गदर्शन एवं सदाचार के परिधान से सुसज्जित कर लो। वास्तव में, ईश्वर की दृष्टि में यह बेहतर होगा। यदि नहीं, तो कम से कम असदाचारिता का व्यवहार न करो, बल्कि धर्मपरायणता एवं सद्गुणों का पालन करो-

यदि इन लोगों के बीच उसकी उपस्थिति एकमात्र कारण न होती, तो हम विधान नहीं देते, न ही कोई निषेध निर्धारित करते। यह केवल उसके नाम के महिमागान एवं उसके धर्म के उत्कर्षण के लिये ही है, कि हमने अपने आदेश से कुछ विधान निरुपित किये हैं, अथवा ऐसे कृत्य निषिद्ध किये हैं जिनसे हमें घृणा है, ताकि उसके प्रकटीकरण की घड़ी में, तुम उसके माध्यम से ईश्वर की सुप्रसन्नता प्राप्त कर सको तथा उन वस्तुओं से परहेज़ करो जिनसे वह घृणा करता है।

कहो, वस्तुतः, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उसकी सुप्रसन्नता, ईश्वर की सुप्रसन्नता है, जबकि उसकी अप्रसन्नता, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, ईश्वर की अप्रसन्नता के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। तुम उसकी अप्रसन्नता से दूर रहना और उसकी सुप्रसन्नता की शरण की ओर पग बढ़ाना। कहो, उसकी सुप्रसन्नता के जीवित मार्गदर्शक वे हैं जो उसमें सच्चा विश्वास करते हैं और अपनी आस्था में भलीभाँति आश्वासित हैं, जबकि उसकी अप्रसन्नता के जीवित प्रमाण वे हैं जो, उसकी उपस्थिति से भेजे जाने वाले ईश्वर के श्लोक सुनते हैं, अथवा उसके द्वारा प्रकट किये गये दिव्य शब्द पढ़ते हैं, तो इस धर्म को तत्क्षण स्वीकार नहीं करते हुए विश्वास को प्राप्त नहीं होते। XVII.14

6

विभिन्न लेखों से उद्धरण

कहो, ईश्वर स्वामी है और सभी उसके उपासक । कहो, ईश्वर ही एक मात्र सत्य है तथा सभी उसे श्रद्धा अर्पित करते हैं। वह ईश्वर है, तुम्हारा स्वामी और तुम उसी को वापस लौट जाओगे। क्या ईश्वर के सम्बन्ध में कोई सन्देह है ? उसने तुम्हारी एवं सभी वस्तुओं की रचना की है। वह समस्त लोकों का स्वामी है।

कहो, वास्तव में, ईश्वर के आदेश से, इस धर्म का कोई भी अनुयायी, आकाश और धरती, तथा जो कुछ भी इनके मध्य में है, निवास करने वाले सभी पर प्रभावी हो सकता है; क्योंकि किसी सन्देह की परछाई के परे, यह वास्तव में एक सच्चा धर्म है। इसलिये तुम भय न करो, न ही तुम दुःखी हो।

कहो, जो इस ग्रंथ में प्रकट किया गया है, उसके अनुसार, ईश्वर ने यह सुनिश्चित करने का कार्य स्वयं के ऊपर लिया है कि सत्य के किसी भी एक अनुयायी का सौ अन्य आत्माओं पर आधिपत्य रहे, तथा एक सौ विश्वासियों का एक हज़ार अविश्वासियों पर प्रभुत्व रहे, एवं एक हज़ार निष्ठावानों की प्रधानता धरती के समस्त लोगों एवं सगोत्रों पर रहे; क्योंकि ईश्वर जो कुछ भी चाहता है अपने आदेश की प्रभावोत्पादकता से सृजित करता है। वस्तुतः वह सभी वस्तुओं पर शक्तिशाली है।

कहो, ईश्वर की शक्ति उनके हृदयों में है जो उसकी एकता में विश्वास करते हैं तथा यह साक्षी देते हैं कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, जबकि उनके हृदय, जो किसी अन्य को उसका सहभागी मानते असक्षम हैं, तथा इस धरती पर प्राणविहीन हैं, क्योंकि वे निश्चय ही मृत हैं।

वह दिन निकट आ रहा है जब ईश्वर, सत्य की सेना को विजयी बनायेगा तथा सम्पूर्ण धरती को इस प्रकार शुद्ध कर देगा कि उसके ज्ञान की परिधि में एक भी आत्मा नहीं बचेगी जब तक कि वह ईश्वर में सच्चा विश्वास न करे, उसके अतिरिक्त अन्य किसी ईश्वर की आराधना न करे, दिन में और रात्रि में उसकी उपासना में न झुके, और उनमें न गिनी जाये जो भलीभाँति आश्वासित हैं।

कहो, ईश्वर वास्तव में परम सत्य है, जो प्रत्यक्ष रूप से अपने सेवकों से परे है; वह संकटों में सहायक, स्वयंजीवी है।

ईश्वर यह प्रमाणित करता है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। आकाश और धरती और जो कुछ भी इनके मध्य है, उसके के राज्य हैं। वह सभी वस्तुओं की समझ से परे है तथा प्रत्येक सृजित व्यक्ति के मस्तिष्क के लिए अबोधगम्य है; न तो कोई उसके अस्तित्व की एकता को पूर्ण रूप से समझ सकेगा न ही उसके अस्तित्व के स्वरूप का रहस्योद्घाटन कर सकेगा। न समकक्ष या समानता को न सादृश्य या बराबरी को कभी भी उसके साथ जोड़ा जा सकता है। अतः उसका स्तुतिगान करो और उसकी महिमा गाओ तथा उसको पावनता और उसके अस्तित्व की एकता की साक्षी दो और उसकी शक्ति एवं प्रताप का गुणगान अत्युत्तम महिमागान के साथ करो। यह तुम्हें सर्वोच्च स्वर्ग में प्रवेश के योगय बनायेगी। अगर तुम ईश्वर के चिह्नों के प्रकटीकरण में दृढ़ विश्वास रख सको।

यह दिव्य रूप से अंकित ग्रंथ है। यही वह विस्तारित पाती है। कहो, यही वह मंदिर, वह मधुर सुगंधित पत्रक, वह दिव्य प्रकटीकरण का वृक्ष, वह हिलोर लेता महासागर, वह वाणी जो छिपी हुई थी, वह प्रत्येक प्रकाश से उच्च प्रकाश है... वास्तव में, प्रत्येक प्रकाश ईश्वर द्वारा उसके आदेश की शक्ति के माध्यम से उत्पन्न किया जाता है। वह सत्य ही आकाश एवं धरती के साम्राज्य एवं जो कुछ भी इनके मध्य है, का प्रकाश है। उसके प्रकाश की आभा से ईश्वर तुम्हारे हृदयों को दीप्ति प्रदान करता है तथा तुम्हारे कदमों को दृढ़ बनाता है, ताकि कदाचित तुम उसकी स्तुति करो।

कहो, निश्चित रूप से यह विश्रांति का उद्यान है, आराधना का उच्चतम बिन्दु है, वह वृक्ष है जिसके आगे कोई जा नहीं सकता, वह आशीर्वादित बेरी वृक्ष, वह सर्वशक्तिशाली चिह्न, वह सुन्दरतम मुखमण्डल एवं वह सर्वाधिक मनोरम मुख है।

उस आदि से जिसका कोई आरम्भ नहीं, सभी मनुष्य आराधना में उसके समक्ष माथा टेकते हैं जिसे ईश्वर प्रकट करेगा और उस अन्त तक जिसका कोई अन्त नहीं, ऐसा करना जारी रखेंगे। फिर यह कितना आश्चर्यप्रद है कि उसके प्रकटीकरण के समय तुम दिन रात उसे श्रद्धा अर्पित करते रहो जिसका आदेश बयान के बिन्दु ने तुम्हें दिया है और फिर भी उसकी उपासना करने में विफल रह जाओ जिसे ईश्वर प्रकट करेगा।

हे मेरे ईश्वर, तू इस वृक्ष को पूर्णतया उसे अर्पित कर दे, ताकि इसमें ईश्वर द्वारा उसके लिये सृजित किये गये समस्त फल प्रकट हो सकें जिसके माध्यम से ईश्वर वह सब कुछ प्रकट करेगा जो उसकी इच्छा हो। तेरी महिमा की सौगंध ! मैंने नहीं चाहा है कि यह वृक्ष कभी भी कोई ऐसी शाखा, पत्ती अथवा फल उत्पन्न करे जो उसके प्रकटीकरण के दिवस में उसके

समक्ष माथा टेकने में विफल रहे, अथवा उसके माध्यम से तेरा गुणगान करने से इन्कार कर दे, जैसा कि उसके सर्वमहिमाशाली प्रकटीकरण की महिमा को तथा उसकी सर्वोच्च निगूढ़ता की उच्चता को शोभा देता है। और हे मेरे ईश्वर यदि तू देखे कि उसके प्रकटीकरण के दिवस में, मेरी कोई भी शाखा, पत्ती, अथवा फल, उसके समक्ष विनत होने में विफल रहा है, तो हे मेरे ईश्वर, उसे इस वृक्ष से काट दे, क्योंकि वह मेरा नहीं है, न ही मुझ तक वापस लौटेगा।

वह - उसका उल्लेख महिमामण्डित हो - जो सूर्य के सदृश है। यदि उसके समक्ष असंख्य दर्पण रख दिये जायें, तो अपनी क्षमतानुसार, प्रत्येक उस सूर्य की भव्यता को प्रतिबिम्बित करेगा, और यदि उसके समक्ष कोई दर्पण न रखा जाये, तब भी वह उदय और अस्त होना जारी रखेगा, और स्वयं दर्पण ही उसके प्रकाश से आवृत हो जायेंगे। वस्तुतः लोगों को सावधान करने के अपने कर्त्तव्य से तथा ऐसे उपायों को सोच निकालने से मैं चूका नहीं हूँ, जिनसे वे उस ईश्वर, अपने स्वामी, की ओर उन्मुख हो सकें और उनके रचयिता, ईश्वर में विश्वास कर सकें। यदि उसके प्रकटीकरण के दिवस में, धरती के सभी लोग उसमें निष्ठा व्यक्त करेंगे, तो मेरा अन्तरतम् अस्तित्व प्रसन्न हो उठेगा, क्योंकि सभी अपने अस्तित्व के शिखर को प्राप्त कर चुके होंगे और अपने परम प्रियतम के मुखमण्डल के समक्ष लाये जा चुके होंगे, एवं अस्तित्व के संसार में सम्भावित प्राप्ति की सीमा की पूर्णता तक उसकी भव्यता को पहचान चुके होंगे जो उनके हृदयों की कामना है। अन्यथा, वास्तव में मेरी आत्मा उदास हो जायेगी। मैंने, सत्य ही, सभी वस्तुओं को इस उद्देश्य के लिये पोषित किया है। फिर कोई उससे कैसे आवृत रह सकता है ? इसलिये मैंने ईश्वर का आह्वान किया है, और उसका आह्वान करता रहूँगा। वस्तुतः, वह निकट है और उत्तर देने को उद्यत है।

वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उसकी महिमा, प्रत्येक अन्य महिमा से अपरिमेय रूप से परे है, तथा उसका प्रताप प्रत्येक अन्य प्रताप से कहीं अधिक उच्च है। उसका सौन्दर्य प्रत्येक अन्य सौन्दर्य के मूर्तरूप से उत्कृष्ट है, और उसका उत्कर्ष प्रत्येक अन्य उत्कर्ष के प्रकटीकरण से अत्यधिक श्रेष्ठ है। उसके प्रकाश की चमक के समक्ष प्रत्येक प्रकाश फीका पड़ जाता है और उसकी दया के चिह्नों के समक्ष, दया का प्रत्येक अन्य प्रतिपादक मंद पड़ जाता है। उसकी उत्कर्षपूर्णता के आगे अन्य प्रत्येक पूर्णता शून्य के समान है तथा उसकी परम शक्ति के समक्ष, अन्य किसी शक्ति का प्रत्येक प्रदर्शन शून्य के समान है। उसके नाम, अन्य सभी

नामों से उच्च हैं। उसकी सुप्रसन्नता, किसी अन्य सुप्रसन्नता की अभिव्यक्ति से श्रेष्ठ है। उसकी श्रेष्ठ उच्चता किसी अन्य श्रेष्ठता के प्रतीक की पहुँच से कहीं अधिक ऊँची है। उसके प्रकटीकरण की भव्यता किसी अन्य प्रकटीकरण से कहीं अधिक बढ़कर श्रेष्ठ है। उसकी दिव्य निगूढ़ता अन्य किसी निगूढ़ता से कहीं अधिक गहन है। उसकी उदात्तता, अन्य प्रत्येक उदात्तता से अपरिमेय रूप से ऊँची है। अनुग्रह का कोई भी अन्य प्रमाण, उसके कृपापूर्ण अनुग्रह की बराबरी नहीं कर सकता। उसकी शक्ति, प्रत्येक शक्ति से श्रेष्ठ है। प्रत्येक प्रभुसत्ता के समक्ष, उसकी प्रभुसत्ता अपराजेय है। उसका दिव्य साम्राज्य, प्रत्येक अन्य साम्राज्य से कहीं अधिक उदात्त रूप से ऊँचा है। उसका ज्ञान सभी सृजित वस्तुओं को समाये हुए है और उसकी उत्कृष्ट शक्ति सभी प्राणियों पर व्याप्त है।

सभी मनुष्य ईश्वर के लोक से आये हैं और सभी उसकी ओर वापस लौट जायेंगे। न्याय के लिये सभी उसके समक्ष उपस्थित होंगे। वह पुनरूत्थान के दिवस का, पुनर्जीवन एवं हिसाब के दिन का स्वामी है और उसका प्रकटित शब्द तुला हैं।

वास्तविक मृत्यु तब प्राप्त होती है जब उसके प्रकटीकरण के समय व्यक्ति इस प्रकार स्वयं के प्रति मृत हो जाता है कि वह उसके अतिरिक्त किसी और को नहीं खोजता।

सच्चे पुनरूत्थान का अर्थ है उसकी वाणी की शक्ति से उसकी इच्छानुसार अनुप्राणित होना।

स्वर्ग का अर्थ है उसकी सुप्रसन्नता प्राप्त करना और अनन्त नर्काग्नि है न्याय के माध्यम से उसका फैसला।

जिस दिन वह स्वयं को प्रकट करेगा, पुनरूत्थान का दिवस होगा, जो तब तक चलेगा जब तक उसने निर्धारित किया है।

सभी कुछ उससे संबंधित है और उसके द्वारा रचा गया है। उसके अतिरिक्त अन्य सभी उसकी रचना हैं।

सर्वोच्च ईश्वर के नाम से, जो अति उदात्त और अति उच्च है।

वस्तुतः मैं ईश्वर हूँ, मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, और मेरे अतिरिक्त अन्य सब मात्र मेरी रचना है। कहो, अतः हे मेरे प्राणियों तुम मेरी आराधना करो।

मैनें तुम्हें अस्तित्व प्रदान किया है, तुम्हारा पोषण किया है, तुम्हारी रक्षा की है, तुम्हें प्रेम किया है, तुम्हें ऊपर उठाया है, और स्वयं के प्रकटीकरण के लिये तुम्हें चुना है, ताकि मेरे

आदेशानुसार तुम मेरे श्लोकों का पाठ करो और जिन सभी की मैंने रचना की है, उनका मेरे उस धर्म के प्रति आह्वान करो जो इस यशस्वी एवं उदात्त मार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं।

मैंने सभी सृजित वस्तुओं को तुम्हारे लिये रचा है और अपनी इच्छा की प्रभावोत्पादकता के द्वारा समस्त मानवजाति पर मैंने तुम्हें परम् शासक बनाया है। इसके अतिरिक्त, मैंने आदेशित किया है कि जो कोई भी मेरे धर्म को अपनायेगा और मेरी एकता में विश्वास करेगा, और मैंने इस विश्वास को तुम्हारे स्मरण के साथ जोड़ दिया है, और तुम्हारे बाद उनके स्मरण के साथ, जिन्हें, मेरे आदेश से, तुमने 'जीवित अक्षर' तथा बयान में मेरे धर्म से जो कुछ भी प्रकट हुआ है, उसके अक्षर बनने में समर्थ बनाया है। यह, वास्तव में, वह है जो मेरे सेवकों के बीच सत्यनिष्ठ लोगों को दिव्य स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त करने योग्य बनायेगा।

वस्तुत, सूर्य मेरी ओर से भेजा गया एक चिह्न है, ताकि मेरे सेवकों के बीच सच्चे अनुयायियों को, इसके उदय में प्रत्येक विधान का प्रारम्भ दिखायी दे सके।

सत्य ही, मैंने तेरे ही द्वारा तुझे सृजित किया है, इसके पश्चात, मेरे स्वयं के आदेश पर, मैंने तुम्हारे सृजनात्मक शब्द के माध्यम से सभी वस्तुओं को रचा है। हम सर्वशक्तिशाली हैं। मैंने तुम्हें आदि और अन्त, दृश्य एवं निगूढ़ बनने के लिय नियुक्त किया है। वस्तुतः हम सर्वज्ञानी हैं।

तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी को न तो कभी संदेशवाहक पद से विभूषित किया गया है, और न किया जायेगा, न ही तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी पर कभी कोई पावन ग्रंथ प्रकट किया गया है और न किया जायेगा। वह जो सर्वव्यापी, परम प्रियतम है उसके द्वारा विहित आदेश ऐसा ही है।

सत्य ही, सभी सृजित वस्तुओं के लिये बयान हमारा निर्णायक प्रमाण है, और इसके श्लोकों के प्रकटीकरण के समक्ष, दुनिया के सभी लोग शक्तिहीन हैं। यह सभी पावन ग्रंथों के कुल योग को, चाहे वे अतीत के हों या भविष्य के, उसी प्रकार समाये हुए है जिस प्रकार इस दिवस में तुम हमारे समस्त प्रमाणों के भण्डार हो। हम जिसे चाहें उसे अपने पावनतम, उच्चतम स्वर्ग के उद्यानों में प्रवेश करने योग्य बनाते हैं। इस प्रकार, प्रत्येक विधान में हमारे आदेश से दिव्य प्रकटीकरण का शुभारम्भ होता है। हम सत्य ही, सर्वोच्च शासक हैं। वास्तव

में, हम ऐसे किसी भी धर्म का प्रारम्भ नहीं करेंगे जो आने वाले दिनों में नवीकृत न हो। यह वह प्रतिज्ञा है जो हमने दृढ़तापूर्वक ली है। वस्तुतः हम सभी वस्तुओं से सर्वोच्च हैं...

वह ईश्वर, परम स्वामी, सर्वमहिमाय है।

कहो: ईश्वर की स्तुति हो, जो, जिसे चाहे उसे अपनी आराधना करने में समर्थ बनाता है। वस्तुतः, उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सर्वोत्कष्ट उपाधियाँ उसी की हैं; वही है जो अपनी इच्छानुसार अपने शब्द को सम्पादित करता है, और वही है जो उन्हें मार्गदर्शित करता है जिन्हें ज्योति प्राप्त हुई है और जो सदाचार के मार्ग की चाह रखते हैं।

ईश्वर, अपने स्वामी से डरो और दिन के समय में तथा सांध्य बेला में उसका नामोल्लेख करो। निष्ठाहीनों के सुझावों का अनुपालन न करो, कहीं तुम व्यर्थ कल्पनाओं के व्याख्याताओं में न गिने जाओ। जो स्वयं वह परमेश्वर है, उस आदि बिन्दु की आज्ञाओं का निष्ठापूर्वक पालन करो और सदाचारियों में से एक बनो। तुम्हें कुछ भी विचलित न करने पाये, न ही उन वस्तुओं से स्वयं को उत्तेजित करने दो जिनका, इस धर्म में घटना नियत किया गया है। ईश्वर के लिये उत्सुकतापूर्वक प्रयत्न करो और सदाचार के मार्ग पर चलो। यदि तुम्हारी भेंट अविश्वासियों से हो जाये, तो उस ईश्वर, तुम्हारे स्वामी में यह कहते हुए अपना सम्पूर्ण भरोसा रखो, कि 'इस लोक एवं परलोक, दोनों के साम्राज्यों में ईश्वर मेरे लिये पर्याप्त है।'

वह दिन आ रहा है, जब ईश्वर, निष्ठावानों को एकत्र करेंगे। सत्य ही, उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

ईश्वर की शान्ति उनके साथ रहे जिन्हें दिव्य मार्गदर्शन की शक्ति से सही मार्गदर्शन दिया गया है...

वह ईश्वर है, सर्वोच्च शासक, परम सत्य, वह जिसकी सहायता की याचना सभी के द्वारा की जाती है।

महिमाशाली है वह जिससे आकाश और धरती का स्वामित्व सम्बन्धित है, उसके हाथों में सभी सृजित वस्तुओं का साम्राज्य है और उसकी ओर सभी वापस लौट जायेंगे। वही है जो प्रत्येक वस्तु के लिये नियत परिणाम निर्धारित करता है तथा अपने पावन ग्रंथ में उनके लाभ के लिये अपने उत्तम उपहार एवं आशीर्वाद प्रकट करता है जो उसके धर्म के लिये उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

कहो, इस भौतिक जीवन का अन्त हो जायेगा, और सभी मृत्यु को प्राप्त होंगे और मेरे स्वामी की ओर वापस लौट जायेंगे जो उनके कर्मों को श्रेष्ठतम उपहारों से पुरस्कृत करेगा, जो धैर्यपूर्वक सहन करते हैं। वस्तुतः ईश्वर, अपनी इच्छानुसार, अपने आदेश की शक्ति की प्रभावोत्पादकता द्वारा सभी सृजित वस्तुओं का परिमाण निर्धारित करता है; तथा वे जो तुम्हारे स्वामी की सुप्रसन्नता के अनुसार चलते हैं, वे वास्तव में आनन्दमय लोगों में से हैं।

तुम्हारे स्वामी ने अतीत में ऐसा कोई अवतार नहीं भेजा जो अपने स्वामी की ओर लोगों का आह्वान करने में विफल रहा हो और आज भी सत्य अतीत के समान ही है, कदाचित तुम ईश्वर द्वारा प्रकटित श्लोकों पर विचार करते।

जब ईश्वर ने अपने संदेशवाहक मुहम्मद को प्रकट किया, उस दिन, ईश्वर के ज्ञान में भविष्यवाणियों के युगचक्र का अन्त पूर्वनिर्धारित था। हाँ, वह प्रतिज्ञा वास्तव में सत्य हुई थी और जैसा ईश्वर ने विहित किया था, उसका आदेश सम्पादित हुआ। निश्चय ही आज हम ईश्वर के दिवसों में जीवन यापन कर रहे हैं। ये वे महिमामय दिवस हैं जिनके समान दिवसों पर अतीत में सूर्य कभी उदित नहीं हुआ। ये वे दिवस हैं जिनकी आकाँक्षा विगत के लोग बड़ी उत्सुकतापूर्वक कर रहे थे। फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम गहरी निद्रा में निमग्न हो ? ये वे दिवस हैं जब ईश्वर ने सत्य के दिवा-नक्षत्र को समुज्ज्वल रूप से दीप्तिमान किया है। फिर किस बात ने तुम्हें चुप्पी साधने पर विवश किया है ? ये वे नियत दिवस हैं जिनकी प्रतीक्षा तुम अतीत में उत्सुकतापूर्वक कर रहे थे - दिव्य न्याय के आगमन के दिवस। हे तुम विश्वासियों के समूह, ईश्वर को धन्यवाद अर्पित करो।

जो सत्य को अस्वीकार कर देते हैं, उनके कर्मों को, तुम एक परदे की भाँति, आवृत न करने दो। ऐसे लोगों का मात्र तुम्हारे देहों पर अधिकार होता है, और ईश्वर ने उन्हें तुम्हारी चेतनाओं तुम्हारी आत्माओं और तुम्हारे हृदयों पर कोई अधिकार नहीं दिया है। ईश्वर से डरो, ताकि कदाचित तुम्हारा भला हो। सभी वस्तुओं को तुम्हारे लिये सृजित किया गया है, और तुम्हारा सृजन किसी अन्य के लिये विहित नहीं किया गया। ईश्वर से डरो और सावधान रहो कहीं रूप और परिधान, उसे पहचानने से तुम्हें वंचित न कर दें। ईश्वर को धन्यवाद अर्पित करो ताकि कदाचित वह तुम्हारे साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार करे।

यह भौतिक जीवन निश्चित रूप से नष्ट हो जायेगा; इसके सुखों का फीका पड़कर समाप्त हो जाना सुनिश्चित है, और शीघ्र ही पश्चाताप की पीड़ा से व्यथित, तुम ईश्वर की ओर वापस

लौट जाओगे, क्योंकि शीघ्र ही तुम अपनी निद्रा से जागोगे और स्वयं को ईश्वर की उपस्थिति में पाओगे और तुम्हें, अपने कर्मों का हिसाब देने को कहा जायेगा।

कहो, न्याय के आकाश से नीचे भेजे गये श्लोकों को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई और फिर भी तुम अतीत में प्रकट किये गये ईश्वर के ग्रंथों को पढ़ते हो ? तुम अपने स्वामी के साथ उस भेंट को नकारते हुए, जो पूर्व में तुम्हारे साथ नियत की गयी थी, इस दिवस में उसकी चेतावनी पर ध्यान देने में विफल कैसे रह सकते हो ? वास्तव में, रूप के अनुचर बन कर तथा अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं के पीछे भाग कर तुमने स्वयं को अपने स्वामी की सुप्रसन्नता से वंचित कर लिया है, सिवाय उनके जिन्हें उनके स्वामी ने ज्ञान से विभूषित किया है और जो इस दिवस में ईश्वर के सच्चे धर्म के साथ उनके तादात्मय की कृपा के लिये उसके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। अतः उनके समक्ष, जो सद्‌गुण प्रदर्शित करते हैं, यह संदेश घोषित करो और उन्हें उस एक सत्य ईश्वर के आदेशों का ज्ञान दो, ताकि कदाचित वे समझ सकें।

जिससे तुम्हें दुःख हो ऐसी वाणी कहने से अपनी जिह्वा को रोक लो और ईश्वर से दया की याचना करो। वस्तुतः वह सदाचारियों से पूर्णतया अवगत है, क्योंकि वह अपने ऐसे सेवकों के साथ है जो उसमें सच्चा विश्वास करते हैं, और वह अनिष्टकारियों के कृत्यों से बेखबर नहीं है, क्योंकि आकाश और धरती की कोई भी वस्तु उसके ज्ञान की सीमा से परे नहीं। ये स्पष्ट एवं निर्णायक प्रमाण, तुम्हारे स्वामी की दया के चिह्न हैं तथा समस्त मानवजाति के लिये मार्गदर्शन का स्रोत हैं। ये उनके लिये प्रकाश हैं, जो इनमें विश्वास करते हैं एवं उनके लिये एक दुःखदायी यातना की अग्नि है जो इनसे विमुख हो जाते हैं और इन्हें अस्वीकार करते हैं।

हे तुम जो स्त्रियों में श्रेष्ठ हो !

वह ईश्वर है; उसके प्रकाश की भव्यता यशस्वी है।

इस पाती के श्लोक उनके लिये प्रकट किये गये हैं जिन्होंने अपने स्वामी के चिह्नों में विश्वास किया है और उनमें गिनती की जाती है जो उसके प्रति पूर्णतया समर्पित हैं। तुम यह साक्षी दो कि वस्तुतः उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, जो तुम्हारा और मेरा, दोनों का स्वामी है और यह कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। वह उदार, शक्तिशाली है।

तुम ईश्वर को धन्यवाद दो, क्योंकि इस दिवस में उसने कृपापूर्वक तुम्हारी सहायता की है, तुम्हारे लिये इस पाती के श्लोक स्पष्टतया प्रकट किये हैं और तुम्हारी गिनती उन स्त्रियों में की है जिन्होंने ईश्वर के चिह्नों में विश्वास किया है, उसे अपना संरक्षक चुना है और जो कृतज्ञ लोगों में से हैं। वस्तुतः ईश्वर शीघ्र ही अपनी ओर से एक उत्कृष्ट पुरस्कार से तुम्हें और उन्हें पुरस्कृत करेगा जिन्होंने उसके चिह्नों में विश्वास किया है। निश्चय ही, उस सर्वसम्पन्न, सर्वदयालु के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। उसकी उदारता के प्रकटीकरण सभी सृजित वस्तुओं में व्याप्त हैं; वह दयालु, करुणामय है।

ईश्वर साक्षी है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिशाली, परम प्रियतम।

अपनी दृष्टि उस पर केन्द्रित करो जिसे पुनरूत्थान के दिवस में ईश्वर प्रकट करेगा और इसके बाद जो कुछ भी उसके द्वारा नीचे भेजा जाता है, उसमें दृढ़तापूर्वक विश्वास करो।

कहो, प्रत्येक विजयी पर ईश्वर की निर्विवाद जीत होती है। आकाश या धरती पर या जो कुछ भी इनके मध्य स्थित है, में ऐसा कोई नहीं है जो उसकी विजय के श्रेष्ठ प्रभुत्व को मात दे सके। अपने आदेश की शक्ति के माध्यम से वह जिसे चाहे उसे अस्तित्व में ला सकता है। वस्तुतः ईश्वर सर्वशक्तिशाली पोषणकर्ता, सहायक एवं रक्षक है।

जब अनन्तता के क्षितिज पर बहा का दिवा-नक्षत्र देदीप्यमान होकर चमके, तो तुम्हारे लिये स्वयं को उसके सिंहासन के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है। सावधान रहना, कहीं तुम उसकी उपस्थिति में आसन ग्रहण न कर बैठो अथवा उसकी अनुमति के बगैर प्रश्न न कर बैठो। हे दर्पणों के समूह, तुम ईश्वर से डरो।

उसके अनुग्रहों के अद्‌भुत चिह्नों की उससे याचना करो, ताकि वह कृपापूर्वक तुम्हारे लिये वह प्रकट करे जो उसकी इच्छा हो और जो वह चाहता हो, क्योंकि उस दिवस में, दिव्य उदारता के सभी प्रकटीकरण उसके सिंहासन की महिमा के इर्द-गिर्द घूमेंगे एवं उसकी उपस्थिति से उत्पन्न होंगे, कदाचित तुम इसे समझ सकते।

उसके सिंहासन के समक्ष मौन रहना तुम्हारे लिये उचित है, क्योंकि, वास्तव में, उस दिवस में, आकाश और धरती के बीच सृजित की गयी समस्त वस्तुओं की तुलना में, मौन रहने से अधिक उचित अन्य कुछ नहीं समझा जायेगा। इसके अतिरिक्त, भलीभाँति सावधान रहो,

कि तुम अतीत के उन लोगों में न गिने जाओ जो ज्ञान से विभूषित थे, फिर भी, अपने ज्ञान के कारण उस सर्वश्रेष्ठ, स्वयंजीवी ईश्वर के समक्ष अहंकारी बन गये, क्योंकि वही है जो उस दिवस में सर्वज्ञाता, सर्वज्ञ, समस्त ज्ञान का स्रोत है तथा ऐसे लोगों से परे है जो ज्ञान से सम्पन्न हैं; और वही है जो शक्तिशाली, सर्वबाध्यकारी है, एवं उनके समक्ष शक्ति का स्वामी है जो शक्तिसम्पन्न हैं; और वही है जो बलशाली है, सर्वाधिक भव्य, एवं उनके समक्ष सर्वमहिमामय है जो महिमा प्रदर्शित करते हैं; और उस दिवस में वही है जो उदात्त, सर्वोच्च, उच्चता का स्रोत, एवं उनसे अत्यधिक उच्च है जो पद में ऊँचे हैं; और वही है जो सर्वशक्तिशाली है, महिमा एवं श्रेष्ठता का स्रोत, एवं बलशालियों के आडम्बर से अत्यधिक उच्च है; और वही है जो सर्वसमर्थ, सर्वोच्च शासक, न्याय का स्वामी है, उन सभी से उत्कृष्ट जो सत्ता से विभूषित हैं; और वही है जो दयालु, सर्वाधिक परोपकारी, उदारता का सार, जो उनके समक्ष सर्वोच्च है जो परोपकार दिखाते हैं; और वही आदेश देने वाला, सर्वाच्च सत्ता एवं शक्ति रखने वाला, धरती का अधिराज्य रखने वालों से अकल्पित रूप से परे है; और वही है जो सर्वोत्कृष्ट, अद्वितीय है एवं प्रत्येक दक्ष व्यक्ति के समक्ष श्रेष्ठ है।

तुममें से प्रत्येक को, उसकी उपस्थिति प्राप्त करने एवं उस उदात्त एवं यशस्वी अवस्था तक पहुँचने के लिये अस्तित्व में लाया गया है। वास्तव में, वह अपनी दया के आकाश से वह नीचे भेजेगा जो तुम्हें लाभान्वित करे, और, जो कुछ भी उसके द्वारा कृपापूर्वक प्रदान किया जाता है, वह तुम्हें समस्त मानवजाति से स्वतंत्र बनने में समर्थ बनायेगा। वस्तुतः उस दिवस में न तो विद्वानों का ज्ञान किसी काम आयेगा, न ही ज्ञान के व्याख्याताओं की उपलब्धियाँ, न ही अत्यंत सम्मानितों का आडम्बर, न ही शक्तिशालियों का बल, न ही भक्तों का जाप, न ही सदाचारियों के कर्म, न तो घुटने टेकने वाले उपासक का घुटनों के बल झुकना, न उनका धरती पर माथा टेकना, या किब्ले की ओर उनका अभिमुख होना, न ही सम्मानितों का सम्मान, न ही श्रेष्ठकुल में जन्म लेने वालों का सम्बन्ध, न ही कुलीनवंश के वंशजों की कुलीनता, न ही सुवक्ताओं के प्रवचन, न ही विशिष्ट लोगों की उपाधियाँ - इनमें से एक भी उनके किसी काम नहीं आयेगा - क्योंकि ये सभी, और अन्य जो कुछ भी तुमने जाना या समझा है, उसके आदेश के शब्द 'भव' के उच्चारण से सम्भव हुआ है और उसी से सृजित किया गया था। वास्तव में, यदि उसकी इच्छा हो, तो वह निश्चय ही अपने

एक शब्द के माध्यम से समस्त सृजित वस्तुओं को नवजीवन प्रदान कर सकता है। वह सत्य ही, इन सभी के परे और उच्च, सर्वशक्तिशाली, सर्वबलशाली, सामर्थ्यवान है।

सावधान हे दर्पणों के समूह, कहीं उस दिवस में उपाधियाँ तुम्हें मिथ्याभिमानी न बना दें। तुम यह निश्चित रूप से जान लो कि तुम और तुम्हारे साथ, वे जो तुम्हारे ऊपर या नीचे पदस्थापित हैं, सभी उस दिवस के लिये सृजित किये गये हैं। ईश्वर से डरो और ऐसे कृत्य न करो जो उसके हृदय को दुःख दें, न ही उनमें से बनो जो भटक गये हैं। सत्य की शक्ति से विभूषित होकर, कदाचित वह तब प्रकट होगा जब तुम अपनी शैय्या पर घोर निद्रा में सो रहे होगे अथवा उसके संदेशवाहक उसकी ओर से महिमाशाली एवं देदीप्यमान पातियाँ तब लायेंगे जबकि तुम अवज्ञापूर्वक उससे मुँह मोड़ चुके होगे, उसके विरुद्ध दण्डादेश सुना चुके होगे - ऐसा दण्डादेश जिसे तुम स्वयं पर कभी पारित न करते - और कहोगे, 'यह उस सर्ववशकारी, स्वयंजीवी ईश्वर की ओर से नहीं है।

महिमा हो तेरी, हे मेरे ईश्वर, तू भलीभाँति जानता है कि मैंने तेरा शब्द उद्घोषित किया है और उस उद्देश्य में मैं विफल नहीं रहा हूँ जो तूने मुझे सौंपा है। मैं तुझसे अनुनय करता हूँ कि उस दिवस में तू बयान के लोगों की रक्षा कर, ताकि वे तेरी निन्दा न करें न ही तेरे चिह्नों के साथ विवाद करें। अतः हे मेरे ईश्वर, अपनी उस सामर्थ्य की शक्ति के माध्यम से, जो सभी मानवजाति में व्याप्त है, उनकी रक्षा कर।

वह सर्वशक्तिशाली है।

महिमा हो उसकी जो उन सभी का स्वामी है जो धरती और आसमानों में विद्यमान है; वह सर्वबुद्धिमान, सर्वज्ञाता है। वही है जो अपने आदेश की शक्ति से जो चाहता है, अस्तित्व में लाता है; वह वास्तव में मृदुल, रचयिता है। कहो, वस्तुतः वह अपने उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम है; अपने देवदूतों की शक्ति के माध्यम से वह जिसे चाहे विजयी बनाता है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, बलशाली, बुद्धिमान। आकाश और धरती का साम्राज्य उसी का है और वह शक्ति एवं महिमा का स्वामी है। वे जिन्होंने ईश्वर में और उसके चिह्नों में विश्वास किया है, वास्तव में सत्य के अनुयायी हैं और वे आनन्द के उद्यानों में निवास करेंगे, जबकि वे जिन्होंने ईश्वर में अविश्वास किया है और जो उसने प्रकट किया है उसे अस्वीकार कर दिया है, वे अग्नि के निवासी होंगे जिसमें वे अनन्तता तक रहेंगे। कहो,

अधिकांश लोगों ने ईश्वर को खुलकर अस्वीकार किया है और विद्रोही दुष्टों का अनुसरण किया है। ऐसे लोग उनके सदृश्य हैं जो प्रत्येक विरोधी और अत्याचारी का समर्थन करते हुए, इनसे पहले जा चुके हैं। वस्तुतः ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है; आकाश एवं धरती के साम्राज्य उसी के हैं और वह मृदुल, सर्वज्ञाता है। ईश्वर साक्षी देता है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है और वह जो अपने स्वामी के आदेश से बोलता है, सर्वप्रथम उसकी उपासना करने वाला है। वह अतुलनीय सृष्टा है जिसने धरती और आकाश तथा जो कुछ भी इनके मध्य स्थित है, की रचना की है और सभी उसके आदेश का पालन करते हैं। वही है वह जिसकी कृपा उन सभी में व्याप्त है जो धरती और आसमानों पर अथवा अन्य कहीं हैं, और सभी उसके आदेश से प्रतिबंधित हैं।

तुम्हारे लिये यह उचित है कि तुम उसके प्रकटीकरण के दिवस की प्रतीक्षा करो जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। वास्तव में, बयान का वृक्ष रोपने का मेरा उद्देश्य, सिवाय मुझे पहचानने में तुम्हें समर्थ बनाने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। सत्य ही, ईश्वर के समक्ष झुकने में एवं उसमें विश्वास करने में, सर्वप्रथम स्वयं मैं हूँ। अतः अपने द्वारा उसे पहचान लेना व्यर्थ न होने दो, क्योंकि, अपने स्थान की उच्चता के बावजूद, बयान उसके प्रति निष्ठावान है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा और वही है, दिव्य वास्तविकता के सिंहासन के रूप में, जिसकी स्तुति करना शोभनीय है। यद्यपि वास्तविकता यह है कि वह मैं हूँ और मैं वह हूँ। फिर भी, जब 'बयान' का वृक्ष अपने उच्चतम विकास को प्राप्त होगा, तो हम, इसके उस स्वामी की आराधना के चिह्नस्वरूप इसे नीचे झुका देंगे, जो उसके व्यक्तित्व में प्रकट होगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। कदाचित तुम ईश्वर की महिमागान का सुअवसर प्राप्त कर सको, जैसा कि उसके श्रेष्ठ व्यक्तित्व को शोभा देता है।

वास्तव में, तुम्हें 'बयान' के बिन्दु की शक्ति के माध्यम से अस्तित्व में लाया गया है, जबकि यह बिन्दु स्वयं उसकी इच्छा को समर्पित है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा, उसकी उत्कृष्ट भव्यता के माध्यम से उदात्त है, उसकी शक्ति के प्रमाणों द्वारा सम्पोषित है, उसकी एकता के प्रताप द्वारा यशस्वी है, उसकी एकमेवता की सुन्दरता से सुसज्जित है, उसके अनन्त प्रभुत्व द्वारा सशक्त है तथा उसकी अनन्त प्रभुसत्ता के माध्यम से सत्ता से विभूषित है। फिर वे, जो इस बिन्दु की रचनामात्र हैं, 'क्यों और किसलिए' कहने में न्यायसंगत कैसे हो सकते हैं ?

हे बयान के लोगों और वे सभी जो इसमें हैं ! उन सीमाओं को पहचानो जो तुम पर लागू की गयी हैं, क्योंकि समस्त वस्तुओं के सृजन से पहले, स्वयं 'बयान' के बिन्दु जैसे व्यक्ति ने उसमें विश्वास किया है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। वस्तुतः, जो आकश और धरती के साम्राज्यों में रहते हैं, उनके समक्ष मैं इस पर गौरव करता हूँ। इसके पश्चात कि उसने स्वयं को प्रकट कर दिया है, स्वयं को एक परदे द्वारा ईश्वर से आवृत न होने दो। क्योंकि वह सब कुछ जिसे 'बयान' में उदात्त किया गया है, मेरे हाथ की अँगूठी मात्र है और वस्तुतः, मैं स्वयं, उसके हाथ की अँगूठी हूँ जिसे ईश्वर प्रकट करेगा - उसका उल्लेख महिमाशाली हो! वह जैसे चाहे, वह जिसके लिये चाहे और वह जिसके माध्यम से चाहे इसे घुमाता है। वह वस्तुतः संकट में सहायक, सर्वोच्च है।

7

प्रार्थनाएँ एवं चिन्तन

अभिभूत कर देने वाली तेजस्विता के स्वामी, सर्वबाध्यकारी, ईश्वर के नाम से।

पावन है वह स्वामी जिसके हाथ में प्रभुत्व का स्रोत है। वह जो चाहता है, अपने आदेशात्मक शब्द 'भ व' के माध्यम से सृजित करता है और वह हो जाता है। अधिकार की शक्ति, इससे पहले भी उसी की थी और इसके बाद भी उसी की रहेगी। अपनी आज्ञा की शक्ति से वह जिसे चाहे विजयी बनाता है। सत्य ही, वह बलशाली एवं सर्वशक्तिमान है। प्रकटीकरण एवं सृजन के साम्राज्यों तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, में समस्त भव्यता तथा महिमा उसी से सम्बन्धित है। वस्तुतः वह शक्तिशाली, सर्वमहिमामय है। सदासर्वदा से वह अदम्य शक्ति का स्रोत रहा है और अनन्त तक बना रहेगा। वस्तुतः वह, शक्ति और बल का स्वामी है। धरती और आकाश, और जो कुछ भी इनके बीच है, के समस्त साम्राज्य ईश्वर के हैं और उसकी शक्ति सभी वस्तुओं पर सर्वोपरि है। धरती और आकाश और जो कुछ भी इनके बीच है, के समस्त खज़ाने उसी के हैं, और उसका संरक्षण सभी वस्तुओं पर विस्तारित है। धरती और आकाश तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, का वह सृजनकर्ता है और सत्य ही, वह सभी वस्तुओं का साक्षी है। धरती और आकाश, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, में निवास करने वाले सभी के लिये वह गणना का स्वामी है, और सत्य ही, ईश्वर हिसाब करने में तत्पर है। धरती और आकाश, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, में सभी के लिये नियत किये गये परिमाणों को निर्धारित करने वाला वही है। वस्तुतः वह सर्वोच्च संरक्षक है। अपनी मुट्ठी में वह धरती और आकाश तथा इनके मध्य की सभी वस्तुओं की कुँजियाँ धारण किये हुए है। अपने आदेश की शक्ति, अपनी इच्छा से वह उपहार प्रदान करता है। वस्तुतः उसकी कृपा सभी को आवृत किये हुये है और वह सर्वज्ञाता है।

*

कहो: ईश्वर मेरे लिये पर्याप्त है; वही है जो अपनी मुट्ठी में सभी वस्तुओं का साम्राज्य धारण किये हुए है। आकाश और धरती, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, की अपनी सैन्य शक्ति के माध्यम से वह, अपने सेवकों में जिसे चाहे सुरक्षित रखता है। ईश्वर, सत्य ही, सभी वस्तुओं पर नज़र रखता है।

अपरिमेय रूप से उदात्त है तू, हे स्वामी ! उस सब से हमें सुरक्षित रख जो हमारे आगे और पीछे, हमारे सरों के ऊपर, हमारे दाहिने, हमारे बाएं, हमारे पैरों के नीचे और प्रत्येक अन्य दिशा में जहाँ हम अरक्षित हैं। वस्तुतः सभी वस्तुओं पर तेरा संरक्षण अचूक है।[76]

*

हे मेरे ईश्वर, बयान के वृक्ष पर, इसकी जड़ और इसकी शाखा पर, इसकी डालियों, इसकी पत्तियों, इसके फलों और उस सब पर जिसे यह उत्पन्न करता है या आश्रय देता है, अपनी अनुकम्पायें भेज। फिर, उसकी उपस्थिति में अर्पित करने के लिये जिसे तू न्याय के दिवस में प्रकट करेगा, इस वृक्ष को एक भव्य पत्रक बनने में समर्थ बना, ताकि वह कृपापूर्वक बयान के अनुयायियों के सम्पूर्ण समूह को पुनर्जीवित होने की अनुमति प्रदान करे और ताकि, अपनी उदारता के माध्यम से, वह एक नवीन रचना का शुभारम्भ करे।

वास्तव में, तेरी सुकोमल दया के समक्ष सभी निःसहाय हैं, तथा तेरी प्रेममयी दयालुता के चिह्नों के समक्ष, दीन सेवक हैं। हे मेरे ईश्वर, मैं तेरी उदारता के माध्यम से तुझसे याचना करता हूँ तथा तेरी दया एवं उपहारों के उद्गारों के द्वारा तथा तेरे दिव्य अनुग्रहों एवं कृपा के प्रमाणों द्वारा, हे मेरे परम प्रियतम, तुझसे याचना करता हूँ कि तू उसकी रक्षा कर जिसे ईश्वर प्रकट करेगा ताकि उसे लेशमात्र उदासी न छू सके।

*

तू अपरिमेय रूप से महिमावंत एवं उदात्त है। मैं किस प्रकार तेरा उल्लेख कर सकता हूँ, हे तू जो समस्त सृष्टि का प्रियतम है; और मैं किस प्रकार तेरे दावे को अभिस्वीकृत कर सकता हूँ, हे तू जिसके समक्ष प्रत्येक सृजित वस्तु विस्मित रह जाती है। जिस उदात्त स्थान तक मानवी समझ पहुँच सकती है तथा जिस उच्चतम ऊँचाई तक मनुष्यों के मस्तिष्क एवं आत्मायें उड़ान भर सकती हैं, वे तेरे आदेश की शक्ति से सृजित किये गये चिह्न मात्र हैं तथा तेरे प्रकटीकरण की शक्ति के माध्यम से प्रकट किये गये संकेत मात्र हैं। तेरी महिमा से परे है कि तेरे अतिरिक्त कोई अन्य तेरा उल्लेख करे या तेरी प्रशंसा करने का यत्न करे। प्रत्येक वास्तविकता का सार भी तेरी निकटता के दरबार की सीमाओं से स्वयं वंचित होने की गवाही देता है और प्रत्येक वस्तु का सारतत्व, तेरी पावन उपस्थिति प्राप्त करने में अपनी विफलता का साक्षी है। तू अपरिमेय रूप से महिमावंत एवं उदात्त है ! वह जो तुझे शोभा देता है, केवल तेरे स्वयं के द्वारा किया गया उल्लेख है और वह जो तेरे योग्य है, केवल तेरे स्वयं के सारतत्व द्वारा उच्चारित किया गया गौरवगान है...

हे स्वामी, तेरी कृपा के प्रकटीकरण के माध्यम से, ऐसी रात्रि में तूने मुझे अस्तित्व प्रदान किया है,[77] और देख, अब मैं एक पर्वत पर एकाकी और परित्यक्त हूँ। धरती और आकाश के

साम्राज्य में जो कुछ भी तेरी इच्छा के अनुकूल है, उसके लिये तुझे प्रशंसा एवं धन्यवाद अर्पित है तथा प्रकटीकरण एवं सृजन के साम्राज्यों के अन्य विस्तार के परे फैली हुई समस्त प्रभुसत्ता तेरी है। हे स्वामी, तूने अपने कृपालु अनुग्रह के माध्यम से मेरी रचना की और अपनी उदारता के माध्यम से, गर्भ के अंधकार में मेरी रक्षा की और अपनी प्रेममयी दयालुता के द्वारा, मुझे जीवनदायी रक्त से पोषित किया है। अपने सुकोमल पूर्वप्रबंध के माध्यम से, मुझे एक अत्यधिक सौम्यरूप में गढ़ने के पश्चात एवं अपने उत्कृष्ट हस्तकौशल के द्वारा मेरी रचना को पूर्णता प्रदान करके तथा अपनी असीम दया के द्वारा और अपनी उत्कृष्ट एकता के प्रकटीकरण के माध्यम से, मेरे शरीर में अपनी चेतना फूँक कर, संगुप्ति के संसार से, नग्न, सभी वस्तुओं से अनभिज्ञ तथा कुछ भी प्राप्त करने में असमर्थ अवस्था में तूने मुझे दृश्य जगत में आने में समर्थ बनाया है। फिर तूने स्फूर्तिदायक दुग्ध से मुझे पोषित किया और प्रत्यक्ष संवेदना के साथ मेरे माता-पिता की गोद में तब तक पाला-पोसा जब तक कि तूने कृपापूर्वक मुझे अपने प्रकटीकरण की वास्तविकताओं से अवगत नहीं करा दिया, तथा जैसा कि तेरी पुस्तक में विहित किया गया है, तेरे धर्म के सीधे मार्ग से परिचित कराया और जब मैं पूर्ण परिपक्वता को प्राप्त हुआ, तो अपने अगम्य स्मरण के प्रति निष्ठावान बनने में तूने मुझे समर्थ बनाया एवं उस निर्दिष्ट स्थान की ओर आगे बढ़ने में मेरी सहायता की, जहाँ अपनी सूक्ष्म योजना के संचालन के माध्यम से तूने मुझे शिक्षित किया और अपने सर्वकृपालु उपहारों के द्वारा उस भूमि में तूने मेरा पोषण किया। जब वह घटित हुआ जो तेरे ग्रंथ में पूर्वनिर्धारित था, तो, अपनी दया के माध्यम से तूने अपने पावन परिवेश तक पहुँचने में मेरी सहायता की तथा अपनी सुकोमल अनुकम्पा के माध्यम से संसर्ग के दरबार में निवास करने में मुझे समर्थ बनाया। वहाँ मैंने वह देखा जो मैंने तेरी दया के स्पष्ट संकेतों, तेरी एकता के बाध्यकारी प्रमाणों, तेरी तेजस्विता की देदीप्यमान भव्यताओं, तेरी सर्वोच्च एकमेवता के स्रोतों, तेरी प्रभुसत्ता की उत्कृष्ट ऊँचाइयों, तेरी अतुलनीयता के चिह्नों, तेरी उदात्त महिमा के प्रकटीकरणों, तेरी पावनता के आश्रयों तथा तेरे अतिरिक्त अन्य सभी के लिये जो कुछ रहस्यमय है।

*

हे मेरे ईश्वर, वस्तुतः मैं तेरा सेवक हूँ, और तेरा दीनदरिद्र, तेरा प्रार्थी, तेरा अधम प्राणी हूँ। मैं तेरे आश्रय की खोज में तेरे द्वार पर पहुँचा हूँ। मैंने तेरे प्रेम के अतिरिक्त अन्य कहीं भी संतोष नहीं पाया, तेरे स्मरण के अतिरिक्त अन्य कहीं भी उल्लास नहीं पाया, तेरे आज्ञापालन के अतिरिक्त अन्य कहीं भी प्रसन्नता नहीं पायी तथा तुझ से पुनर्मिलन के

अतिरिक्त अन्य कहीं भी प्रशान्ति नहीं पायी, इसके बावजूद कि मैं अवगत हूँ कि सभी सृजित वस्तुएँ तेरे महान सत्व से वंचित हैं तथा सम्पूर्ण सृष्टि को तेरे अन्तर्तम अस्तित्व तक पहुँचने की अनुमति नहीं दी गयी, जब भी मैं तेरे निकट आने का यत्न करता हूँ, मैं स्वयं के भीतर तेरी कृपा के संकेतों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं पाता तथा अपने अस्तित्व में तेरी प्रेममयी दयालुता के प्रकटीकरणों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं देखता। तुझसे पुनर्मिलन की चाह वह कैसे कर सकता है जो तेरी रचना मात्र है, जबकि कोई भी सृजित वस्तु तुझसे सम्बद्ध नहीं हो सकती, ना ही कोई तुझे समझ सकता है ? एक दीन सेवक के लिये तुझे पहचानना और तेरी प्रशंसा का स्तुतिगान करना किस प्रकार सम्भव है, बावजूद इसके कि तूने उसके लिये अपने प्रभुत्व के प्रकटीकरण एवं अपनी प्रभुसत्ता के अद्‌भुत प्रमाण नियत किये हैं ? अतः प्रत्येक सृजित वस्तु साक्षी देती है कि उसकी अन्तर्तम वास्तविकता पर लागू की गयी सीमाओं के कारण वह तेरी उपस्थिति के दरबार से वंचित है। परन्तु, यह अविवादित है कि सदासर्वदा से तेरा हस्तकौशल की वास्तविकताओं में तेरे आकर्षण का प्रभाव अन्तर्निष्ट रहा है, यद्यपि जो तेरे विधान के पवित्र दरबार के लिये शोभनीय है, वह समस्त सृष्टि की प्राप्ति के परे उदात्त है। यह, हे मेरे ईश्वर, तेरी प्रशंसा करने की मेरी सम्पूर्ण शक्तिहीनता को दर्शाता है तथा तुझे धन्यवाद देने की मेरी चरम अक्षमता को प्रकट करता है; और तेरी दिव्य एकता की पहचान को प्राप्त करना अथवा तेरी प्रशंसा, तेरी पावनता, तथा तेरी महिमा के स्पष्ट चिह्नों तक पहुँचने में सफल होना कितना अधिक असम्भव है। नहीं, तेरी सामर्थ्य की सौगंध, मैं तेरे स्वयं के अतिरिक्त अन्य किसी की चाह नहीं रखता तथा तेरे अतिरिक्त अन्य किसी की खोज नहीं करता।

*

हे ईश्वर, महिमावंत हो तेरा नाम। सत्य ही, प्रकटीकरण एवं सृजन के साम्राज्य तेरे ही हैं तथा हमने वस्तुतः अपने स्वामी में अपना सम्पूर्ण भरोसा रखा है। समस्त स्तुति तेरी हो, हे ईश्वर; तू आकाश एवं धरती, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, का सृजनकर्ता है, और सत्य ही, तू सर्वोच्च शासक, सृजनकर्ता, सर्वबुद्धिमान है। महिमावंत है तू, हे स्वामी ! तू सत्य ही, मानवजाति को उस दिवस के लिये एकत्र करेगा जिसके आगमन के विषय में कोई सन्देह नहीं है - वह दिवस जब सभी तेरे समक्ष उपस्थित होंगे और तुझमें ही जीवन पायेंगे। यह एक सत्य ईश्वर का दिवस है - वह दिवस जिसे तू अपने आदेश की शक्ति से अपनी इच्छानुसार प्रकट करेगा।

तू प्रभुसत्तासम्पन्न, अद्‌भुत स्रष्टा, शक्तिशाली, परम प्रियतम है।

*

हे ईश्वर, प्रशंसित हो तेरा नाम। तू सत्य ही हमारा स्वामी है; तू उन सब से अवगत है जो आकाश में तथा धरती पर हैं। अपनी दया के एक चिह्न हम को भेज। वस्तुतः तू दया करने वालों में अद्वितीय है। स्तुत्य है तू, हे स्वामी, अपनी ओर से हमारे लिए वह विहित कर जो तेरे सेवकों में निष्ठावानों के हृदयों को सांत्वना दे। महिमावंत है तू, हे ईश्वर। तू आकाश और धरती, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, का सृष्टा है। तू प्रभुसत्तासम्पन्न स्वामी, सर्वाधिक पावन, सर्वशक्तिशाली, सर्वबुद्धिमान है। महिमामण्डित हो तेरा नाम, हे ईश्वर, जिन्होंने ईश्वर में और उसके चिह्नों में विश्वास किया है, उन पर अपनी उपस्थिति की ओर से एक शक्तिशाली सहायता भेज जो उन्हें मानवजाति पर व्यापक रूप से अभिभावी होने में समर्थ बन सकें।

*

हे ईश्वर महिमा हो तेरी। मैं कैसे तेरा उल्लेख कर सकता हूँ जब कि तू समस्त मानवजाति की प्रशंसा से परे है। महिमामण्डित हो तेरा नाम, हे ईश्वर, तू सम्राट, अनन्त सत्य है; तू जानता है कि आकाश और धरती पर क्या है और वे सभी वापस लौट जायेंगे। तूने एक स्पष्ट मापदण्ड के अनुरूप दिव्यतः आदेशित प्रकटीकरण को भेजा है। प्रशंसित है तू, हे स्वामी! आकाश और धरती, तथा जो कुछ भी इनके मध्य अस्तित्व में है, देवदूतों के माध्यम से, तू जिसे चाहे अपने आदेश से विजयी बनाता है। तू प्रभुसत्तासम्पन्न, अनन्त सत्य, अपराजेय शक्ति का स्वामी है।

महिमावंत है तू, हे स्वामी, तू अपने सेवकों में उनके पापों को सर्वदा क्षमा कर देता है, जो तेरी क्षमा की याचना करते हैं। मेरे पापों को तथा उनके पापों को धो डाल जो भोर के समय में तुझसे क्षमा माँगते हैं, जो दिन के समय और रात्रि बेला में तुझसे प्रार्थना करते हैं, जिन्हें ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी की लालसा नहीं है, जो वह सब कुछ अर्पित कर देते हैं जो ईश्वर ने उन्हें कृपापूर्वक प्रदान किया है, जो प्रातः काल में तथा सांध्य बेला में तेरा गुणगान करते हैं और जो अपने कर्त्तव्यों के प्रति बेपरवाह नहीं हैं।

*

स्तुति हो तेरी, हे स्वामी। हमारे पापों को क्षमा कर, हम पर दया कर और तेरे पास वापस लौटने में हमारी सहायता कर। हमें, अपने अतिरिक्त किसी अन्य पर भरोसा करने का दुःख न भोगने दे और अपनी उदारता के माध्यम से, कृपापूर्वक हमें वह प्रदान कर जो तुझे प्रिय है, जो तेरे योग्य है और तेरी इच्छा है। उनके स्थान को उदात्त कर जिन्होंने सच्चा विश्वास किया है, तथा अपनी कृपापूर्ण क्षमाशीलता द्वारा उन्हें क्षमा कर। वस्तुतः तू संकट में सहायक, स्वयं-जीवी है।

*

हे ईश्वर हमारे स्वामी ! अपनी कृपा के माध्यम से उन सब से हमारी रक्षा कर जो तेरे लिये घृणित हैं और हमें कृपापूर्वक वह प्रदान कर जो तेरे लिये शोभनीय है। हमें अपनी अनुकम्पा का और अधिक भाग दे और हमें आशीर्वाद प्रदान कर। हमने जो कुछ किया है उसके लिये हमें क्षमा कर और हमारे पापों को धो डाल तथा अपनी कृपापूर्ण क्षमाशीलता के द्वारा हमें क्षमा कर। वस्तुतः तू सर्वोदात्त, स्वयं-जीवी है।

तेरा प्रेममय विधान आसमानों एवं धरती पर सभी सृजित वस्तुओं को घेरे हुए है और तेरी क्षमाशीलता सम्पूर्ण सृष्टि को पार कर गयी है। प्रभुसत्ता तेरी है; तेरे ही हाथ में सृजन एवं प्रकटीकरण के साम्राज्य हैं; अपने दाहिने हाथ में तू समस्त सृजित वस्तुओं को धारण किये हुए है तथा तेरी ही मुट्ठी में क्षमाशीलता के नियत परिमाण हैं। अपने सेवकों में से जिसे तू चाहे उसे क्षमा कर देता है। वस्तुतः तू सदा क्षमाशील, सर्वप्रेममय है। तेरे ज्ञान से कुछ भी बाहर नहीं रह सकता, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुझ से गुप्त है।

हे ईश्वर हमारे स्वामी ! अपनी शक्ति के सामर्थ्य से हमारी रक्षा कर, अपने उमड़ते हुए अद्‌भुत महासागर में हमें प्रवेश पाने में सक्षम कर और हमें वह प्रदान कर जो तेरे लिये अति शोभनीय हो।

तू परम शासक, बलशाली कर्ता, उदात्त, सर्वप्रेममय है !

*

महिमा हो तेरी, हे प्रभु, मेरे ईश्वर ! आकाश या धरती पर, अतीत का, अथवा भविष्य का, ऐसा कुछ भी नहीं है जो तेरे ज्ञान से बाहर रह सकता है, ना ही ऐसा कुछ है जो तेरी मुट्ठी से छूट सकता है या तेरे उद्देश्य को विफल कर सकता है।

तू स्वर्ग तथा इसके निवासियों को देखता है; तू भूलोक और इसके निवासियों को देखता है। सभी तेरे सेवकमात्र हैं और तेरे अधीन हैं।

हे स्वामी ! अपने धैर्यवान सेवकों को एक शोभनीय विजय प्रदान करते हुए अपने दिवसों में उन्हें विजयी बना, क्योंकि उन्होंने तेरे पथ में शहादत की कामना की है। उनके लिये वह भेज जो उनके मन को राहत दे, उनके अन्तरतम अस्तित्व को उल्लास से भर दे, उनके हृदयों को आश्वासन दे और उनके देहों को प्रशान्ति प्रदान करे तथा उनकी आत्माओं को उस सर्वोदात्त ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने में एवं उस सर्वोच्च स्वर्ग तथा महिमा के आश्रय को प्राप्त करने में समर्थ बनाए जो तूने उनके लिये नियत किया है जो सच्चा ज्ञान रखने वाले एवं सद्गुणी जन हैं। वस्तुतः तू सब कुछ जानता है, जबकि हम तेरे सेवक, तेरे दास, तेरे गुलाम और तेरे अकिंचन मात्र हैं। हे ईश्वर हमारे स्वामी, हम तेरे अतिरिक्त अन्य किसी स्वामी का आह्वान नहीं करते, ना ही हम तेरे अतिरिक्त किसी अन्य से आशीर्वाद या कृपा की याचना करते हैं, हे तू जो इहलोक एवं परलोक के लिये दया का ईश्वर है। हम, दरिद्रता, अनास्तित्व, असहायता एवं अनंत नश्वरता के मूर्तरूप मात्र हैं, जबकि तेरा सम्पूर्ण अस्तित्व वैभव, स्वतंत्रता, यश, तेजस्विता एवं अनंत कृपा को दर्शाता है।

हे स्वामी, हमारे पुरस्कार को उसमें परिवर्तित कर दे जो इहलोक और परलोक के शुभ एवं उच्चता से धरती पर पहुँचने वाली बहुविध उदारताओं में तेरे लिये अति शोभनीय हो।

वस्तुतः तू हमारा स्वामी और समस्त वस्तुओं का स्वामी है। तुझसे सम्बद्ध वस्तुओं की कामना में, हम स्वयं को तेरे ही कर-कमलों में समर्पित करते हैं।

*

महिमावंत हो तेरा नाम, हे स्वामी ! मैं किसकी शरण लूँ जबकि सत्य ही, तू ही मेरा ईश्वर और मेरा प्रियतम है; मैं आश्रय के लिये किसकी ओर उन्मुख होऊँ जबकि मेरा स्वामी और मेरा मालिक तू ही है; और मैं किसकी ओर पलायन करूँ जबकि सत्य ही, मेरा स्वामी और मेरा शरण्य तू ही है; और मैं किससे याचना करूँ जबकि मेरा खज़ाना एवं मेरी आकांक्षा का लक्ष्य तू ही है; और मैं किसके माध्यम से तेरे समक्ष निवेदन करूँ, जबकि मेरी उच्चतम अभिलाषा एवं सर्वोच्च इच्छा तू ही है ? तेरी स्वर्गिक कृपा की लालसा के अतिरिक्त अन्य प्रत्येक आशा व्यर्थ हो चुकी है तथा तेरे आशीर्वादों के निर्झर स्रोत की ओर ले जाने वाले द्वार के अतिरिक्त अन्य प्रत्येक द्वार वर्जित है।

हे मेरे ईश्वर, मैं तेरी उस सर्वाधिक देदीप्यमान भव्यता के द्वारा तुझसे याचना करता हूँ, जिसकी कांति के समक्ष प्रत्येक आत्मा तेरी आराधना में विनत है और स्वयं का मस्तक धरती पर टिकाते हैं - एक ऐसी भव्यता जिसकी कान्ति के समक्ष अग्नि, प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है, मृतकों को जीवन प्रदान किया जाता है और प्रत्येक कठिनाई सुख में परिवर्तित हो जाती है। हे तू जो अदम्य शक्ति का स्वामी है, मैं इस महान, इस अद्‌भुत भव्यता के द्वारा और तेरी उदात्त प्रभुसत्ता की महिमा के द्वारा तुझसे अनुनय करता हूँ कि अपनी उदारता के माध्यम से हमें उसमें परिवर्तित कर दे जो तेरे स्वयं के पास है और हमें तेरे प्रकाश के स्रोत बना दे और कृपापूर्वक हमें वह प्रदान कर जो तेरे उत्कृष्ट प्रभुत्व के प्रताप को शोभा देता हो। क्योंकि हे स्वामी, मैंने अपने हाथ तेरी ही ओर उठाये हैं, और हे स्वामी, मैंने तुझमें ही आश्रय देने वाला समर्थन पाया है, और हे स्वामी, मैंने स्वयं को तुझ पर ही छोड़ा है और हे स्वामी मैंने अपना सम्पूर्ण भरोसा तुझमें ही रखा है, और हे स्वामी मैं तेरे द्वारा ही शक्तिशाली बनता हूँ।

वस्तुतः तुझे छोड़कर, अन्य किसी में भी शक्ति या बल नहीं है।

तू जानता है, हे मेरे ईश्वर, कि जब तूने अपने प्रेम के जल से मुझे अस्तित्व में लाया, उस दिन से जब मैं 15 वर्ष की आयु को प्राप्त हुआ तब तक, मैं उस भूमि (शीराज़) में रहा जिसने मेरा जन्म देखा। फिर तूने मुझे बन्दरगाह (बुशहर) जाने में समर्थ बनाया जहाँ पाँच वर्ष तक मैं तेरे साम्राज्य के श्रेष्ठ उपहारों के व्यापार में संलग्न रहा और उसमें व्यस्त रहा, जो तूने अपनी प्रेममयी दयालुता के अद्‌भुत सार के माध्यम मुझे प्रदान किया है। वहाँ से मैंने पावन भूमि (करबला) को प्रस्थान किया, जहाँ मैं एक वर्ष रहा। फिर मैं अपने जन्म स्थान को लौट आया। वहाँ मैंने तेरे महान उपहारों एवं तेरी अपार कृपा के प्रमाणों के प्रकटीकरण को अनुभव किया। तेरे समस्त उत्कृष्ट वरदानों के लिये मैं तुझे प्रशंसा अर्पित करता हूँ तथा तेरी समस्त वदान्यताओं के लिये मैं तुझे धन्यवाद अप्रित करता हूँ। फिर पच्चीस वर्ष की आयु में मैंने तेरे पवित्र गृह (मक्का) की ओर प्रस्थान किया और जब तक मैं उस स्थान को लौटा जहाँ मेरा जन्म हुआ था, एक वर्ष बीत चुका था। वहाँ, तेरे प्रेम के पथ में, मैंने धैयपूर्वक तब तक प्रतीक्षा की और तेरी विविध उदारताओं एवं तेरी प्रेममयी दयालुता के प्रमाण देखे जब तक कि तूने मेरे लिये, तेरी ओर आने का एवं तेरी उपस्थिति तक पहुँचने का विधान नहीं किया। अतः तेरी अनुमति से मैंने वहाँ से प्रस्थान किया, और साद (इस्फहान) की भूमि पर छः माह तथा पहले पर्वत (माहकू) में सात माह व्यतीत किये,

जहाँ तूने मुझ पर वह बरसाया जो तेरे स्वर्गिक आशीर्वादों की महिमा के लिये शोभनीय है और तेरे कृपापूर्ण उपहारों एवं अनुग्रहों की उत्कृष्टता के योग्य है। अब, मेरे तेरहवें वर्ष में, हे मेरे ईश्वर, तू मुझे इस दुःखद पर्वत (चिहरिक) में देख रहा है, जहाँ मैंने एक सम्पूर्ण वर्ष तक निवास किया है।

स्तुति हो तेरी, हे मेरे स्वामी, तू प्रत्येक काल के लिये तथा इसके पश्चात सदासर्वदा के लिये प्रशंसित है; और हे मेरे ईश्वर, चाहे अतीत की हो या भविष्य की, सभी अवस्थाओं में तेरा धन्यवाद है; तूने मुझे जो उपहार प्रदान किये हैं वे अपने पूर्ण परिमाण में पहुँच चुके हैं और तूने कृपापूर्वक जो आशीर्वाद मुझे प्रदान किये हैं, वे अपनी परिपूर्ति को प्राप्त हो गये हैं। अब, तेरी कृपा एवं प्रेममयी दया, तेरी उदारता एवं अनुग्रह, तेरी वदान्यता एवं उदात्तता, तेरी प्रभुसत्ता एवं शक्ति, तेरी भव्यता एवं तेरी महिमा तथा जो तेरे श्रेष्ठ प्रभुत्व एवं प्रताप के पावन दरबार के योग्य है एवं तेरी अनन्तता एवं उत्कर्षण की यशस्वी सीमाओं के योग्य है, उसके विविध प्रमाणों के अतिरिक्त मैं अन्य कुछ नहीं देखता।

*

मैं जानता हूँ, हे प्रभु, कि मेरे पापों ने तेरी उपस्थिति में मेरे मुखड़े को लज्जा से ढ़क दिया है और तेरे समक्ष मेरी पीठ को भारयुक्त कर दिया है, मेरे और तेरे सुन्दर मुखमण्डल के बीच हस्तक्षेप किया है, सभी दिशाओं से मुझे घेर लिया है और तेरी स्वर्गिक शक्ति के प्रकटीकरणों तक पहुँचने में चारों ओर से मुझे बाधित किया है।

हे स्वामी ! यदि तू मुझे क्षमा नहीं करेगा, तो कौन है जो क्षमादान देगा, और यदि तू मुझ पर दया नहीं करेगा, तो कौन है जो अनुकम्पा दिखा सकेगा ? महिमा हो तेरी, जब मैं अस्तित्वहीन था, तूने मेरा सृजन किया और जब मैं ज्ञानविहीन था, तूने मेरा सम्पोषण किया। प्रशंसित है तू, उदारता का प्रत्येक प्रमाण तुझ ही से उत्पन्न होता है तथा कृपा का प्रत्येक चिह्न तेरे ही आदेश की निधियों से प्रकट होता है।

*

मैं तुझसे क्षमा की याचना करता हूँ, हे मेरे परमेश्वर, तेरे उल्लेख के अतिरिक्त प्रत्येक उल्लेख के लिये, और तेरी प्रशंसा के अतिरिक्त प्रत्येक प्रशंसा के लिये, और तेरी निकटता के आनन्द के अतिरिक्त प्रत्येक आनन्द के लिये, और तुझसे संलाप के सुख के अतिरिक्त प्रत्येक

सुख के लिये, और तेरे प्रेम एवं तेरी सुप्रसन्नता के आनन्द के अतिरिक्त प्रत्येक आनन्द के लिये, और उन सभी वस्तुओं के लिये जो मुझसे सम्बद्ध हैं, जिनका तुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है, हे तू जो स्वामियों का स्वामी है, वह जो साधन प्रदान करता है और द्वारों को खोलता है।

*

मैं तेरी स्तुति कैसे कर सकता हूँ, हे स्वामी, तेरी शक्तिशाली भव्यता और तेरी अद्‌भुत मधुर आनंद के लिये जो तूने इस दुर्ग में, मुझे उस परिमाण में प्रदान किये हैं, कि आकाश में या धरती पर ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके साथ इनकी तुलना की जा सके ? इस पर्वत के हृदय में तूने मेरी देखभाल की है, जहाँ चारों ओर मैं पहाड़ों से घिरा हुआ हूँ। एक मेरे ऊपर झूल रहा है, अन्य मेरे दाहिने और बाएं ओर खड़े हैं, एवं एक और मेरे सामने उठ रहा है। यशस्वी है तू, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। मैंने कितनी बार इन पर्वतों से चट्टानों को स्वयं पर गिरते देखा है, परन्तु तूने मुझे इनसे सुरक्षित रखा और अपनी दिव्य एकता के दुर्ग के भीतर मुझे परिरक्षित किया।

गौरवान्वित और उदात्त है तू, और जो कुछ भी तुझे प्रिय है और तेरी इच्छा है उसके लिये स्तुति हो तेरी, और तूने जो विहित एवं पूर्वनिर्धारित किया है उसके लिये धन्यवाद हो तेरा। अनन्तकाल से तेरी सुकोमल दया भेजी गयी है तथा तेरी सृष्टि की प्रक्रिया अनन्तता से निरन्तर रही है और रहेगी। तेरा हस्तकौशल तेरे अतिरिक्त किसी अन्य के कार्य से भिन्न है और तेरे अतिरिक्त किसी अन्य के उपहारों की तुलना में, तेरे उपहार सुयोग्य एवं अद्वितीय हैं।

स्तुति हो तेरी, हे मेरे प्रियतम और महिमावंत हो तेरा नाम। जब मैंने इस दुर्ग में पैर रखा, उस क्षण से, उस क्षण तक जब मैंने यहाँ से प्रस्थान किया, मैं, तुझे तेरे उदार अनुग्रह एवं कृपा के विविध चिह्नों को मुझ पर भेजते हुए, अपने महिमा एवं प्रताप के सिंहासन पर तुझे प्रतिष्ठित देखता हूँ। तू देखता है कि इस पर्वत के हृदय के अतिरिक्त मेरा कोई निवास स्थान नहीं तथा मेरे व्यक्तित्व में तू अपमान और अकेलेपन के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखता।

प्रशंसित हो तेरा नाम; तेरे रहस्यमय आदेश के प्रत्येक दृष्टांत के लिये मैं तुझे धन्यवाद अर्पित करता हूँ तथा तेरे कष्टों के प्रत्येक चिह्न के लिये अपनी प्रशंसा अर्पित करता हूँ। मुझे

इस कारागार मैं डलवाने की यातना देकर, इसे तूने मेरे लिये स्वर्गिक उद्यान में परिवर्तित कर दिया है तथा इसे अनन्त साहचर्य के दरबार का एक माध्यम बना दिया है।

कितने असंख्य हैं वे श्लोक जो तूने मुझ पर भेजे हैं और वे प्रार्थनाएँ जो तुझे अर्पित करते हुए तूने मुझे सुना है। कितने विविध हैं वे प्रकटीकरण जिन्हें तू मेरे द्वारा अस्तित्व में लाया है और वे अनुभव जो तूने मेरे अन्दर देखे हैं।

महिमामंडित हो तेरा नाम ! विविध विपत्तियाँ तुझे धन्यवाद अर्पित करने से मुझे रोकने में शक्तिहीन रही हैं तथा मेरे दोष तेरे गुणों की प्रशंसा करने से मुझे पीछे हटाने में विफल रहे हैं। अविश्वासियों ने मेरे निवास को एक अपमानित एवं अवमानित स्थान में परिवर्तित करने की ठानी है। परन्तु मेरे द्वारा तेरे स्मरण के माध्यम से तूने मुझे यशस्वी बनाया है, मेरे द्वारा तेरे गुणगान के माध्यम से मुझे उदात्त किया है, अपनी एकता के प्रकटीकरणों के माध्यम से कृपापूर्वक मेरी सहायता की है और अपनी अतिप्राचीन अनन्तता की दीप्तिमान भव्यता के द्वारा तूने मुझे एक महान सम्मान प्रदान किया है। अग्नि को तूने आदेशित किया, 'मेरी उपस्थिति की ओर से एक चिह्नस्वरूप, मेरे सेवक के लिये तुम सुकोमल करुणा का सिंहासन बनो'। हाँ, मैं तेरी महिमा की सौगंध खाता हूँ; यह कारागार मेरे लिये अन्य कुछ नहीं, अपितु स्वर्ग का सर्वाधिक आनन्दमय उद्यान सिद्ध हुआ है तथा उच्च लोक में श्रेष्ठतम स्थान का रूप रहा है।

स्तुत्य और महिमावन्त है तू, कितनी बार विपत्तियाँ मुझ पर उतरीं और अपने कृपापूर्ण अनुग्रह के माध्यम से तूने इन्हें मन्द किया और रोक दिया; और कितनी बार मेरे विरोध में लोगों के द्वारा उत्तेजना भड़कायी गयी, जबकि अपनी सुकोमल दया के माध्यम से तूने इन्हें शान्त कर दिया। कितने असंख्य थे वे अवसर जब मुझे जलाने के लिये निम्नरूदों ने ज्वालाएँ भड़कायीं, परन्तु तूने मेरे लिये इन्हें मरहम बना दिया; और कितने विविध थे वे उदाहरण जब अविश्वासियों ने मेरा अपमान आदेशित किया, और तूने मेरे लिये इन्हें सम्मान के चिह्नों में परिवर्तित कर दिया-

वस्तुतः तू प्रत्येक सच्चे जिज्ञासु की उच्चतम अभिलाषा है तथा तेरे लिये ललकने वालों की कामना का लक्ष्य है। तू वह है जो उनके आह्वान का प्रत्युत्तर देने के लिये तत्पर है जो तेरी दिव्य एकता को पहचानते हैं, और वह जिसके समक्ष बुज़दिल विस्मित रह जाते हैं। तू आवश्यकताग्रस्तों का सहायक, बंधकों का उद्धारक, अत्याचारियों को अवनत करने वाला,

अधर्मियों का ध्वंसक, सभी मनुष्यों का ईश्वर, सभी सृजित वस्तुओं का स्वामी हैं। सृजन एवं प्रकटीकरण के साम्राज्य तेरे ही हैं, हे तू जो समस्त लोकों का स्वामी है।

हे सर्वपरिपूरक ! उस प्रत्येक विपदा में, जो मुझ पर आ सकती है, और उस प्रत्येक वेदना में जो गहन है, तूरे मेरे लिए पर्याप्त है, तू मेरे अकेलेपन में मेरा एकमात्र साथी, मेरे एकाकीपन में मेरे हृदय का आनन्द तथा मेरे कारागार एवं मेरे निवास में मेरा परम प्रियतम है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है !

जिस किसी का तू परिपूरक है उसे दुःख नहीं छू सकता; जिस किसी की तू रक्षा करता है वह कभी नष्ट नहीं होगा; जिस किसी की तू सहायता करता है वह कभी अपमानित नहीं होगा; तथा वह जिसकी ओर तू अपनी दृष्टि फेरता है कभी तुझसे दूर नहीं होगा।

अतः जो कुछ भी तुझसे सम्बद्ध है, वह हमारे लिये लिख दे और हम जो भी हैं उसके लिये हमें क्षमा कर। वस्तुतः तू शक्ति एवं महिमा का स्वामी है, समस्त लोकों का स्वामी है। 'समस्त महानता के स्वामी, तेरे स्वामी की महिमा से परे है वह जो वे उस पर आरोपित करते हैं, तथा उसके पैग़म्बरों पर शांति विराजे, और उस समस्त लोकों के स्वामी, ईश्वर का गुणगान हो'।[78]

*

महिमा हो तेरी, हे ईश्वर ! तू वह ईश्वर है जो सभी वस्तुओं से पूर्व ही अस्तित्व में था, जो सभी वस्तुओं के पश्चात भी अस्तित्व में रहेगा तथा सभी वस्तुओं से परे कायम रहेगा। तू वह ईश्वर है जो सब कुछ जानता है तथा सभी वस्तुओं से सर्वोच्च है। तू वह ईश्वर है जो सभी वस्तुओं से दया का व्यवहार करता है, जो सभी वस्तुओं के बीच न्याय करता है और जिसकी दिव्य-दृष्टि सभी वस्तुओं को आवृत किये हुए है। तू ईश्वर मेरा स्वामी है, तू मेरी स्थिति से अवगत है, तू मेरे आंतरिक एवं बाह्य अस्तित्व का साक्षी है।

मुझे एवं उन अनुयायियों को, जिन्होंने तेरे आह्वान का प्रत्युत्तर दिया है, अपनी क्षमा प्रदान कर। जो कोई भी मुझे दुःख पहुँचाने की इच्छा रखे अथवा मेरा बुरा चाहे उसके अनिष्ट के विरुद्ध तू मेरा पर्याप्त सहायक बन। वस्तुतः तू समस्त सृजित वस्तुओं का स्वामी है। तू सभी के लिये पर्याप्त है, जबकि तेरे बगैर कोई भी स्वः-निर्भर नहीं।

*

तेरे प्रतापशाली मुखड़े के प्रकाश की भव्यता के द्वारा, तेरे अतिप्राचीन उत्कर्ष की तेजस्विता के द्वारा तथा तेरी श्रेष्ठ प्रभुसत्ता की शक्ति के द्वारा मैं तुझसे याचना करता हूँ कि हमारे लिये इस क्षण प्रत्येक अच्छाई एवं उचित वस्तु का परिमाण निर्धारित कर तथा तेरी कृपा के उद्गारों का प्रत्येक भाग नियत कर। क्योंकि ऐसे उपहार प्रदान करने से तुझे कोई हानि नहीं पहुँचती, ना ही अनुग्रहों के प्रदान किये जाने से तेरा वैभव घटता है।

यशस्वी है तू, हे स्वामी ! वस्तुतः मैं दरिद्र हूँ जबकि तू सत्य ही धनवान है; वस्तुतः मैं दीन हूँ जबकि तू सत्य ही महान है; वस्तुतः मैं शक्तिहीन हूँ, जब कि तू सत्य ही शक्तिशाली है; वस्तुतः मैं अवमानित हूँ जबकि तू सत्य ही सर्वोदात्त है; वस्तुतः मैं दुःखी हूँ जब कि तू सत्य ही शक्ति का स्वामी है।

*

हे स्वामी, मेरे लिये प्रत्येक वह वस्तु विहित कर जो तूने सृजित की है अथवा सृजित करेगा और जिन वस्तुओं को तूने अस्तित्व प्रदान किया है या करेगा, उनमें उन सभी बुराइयों से मेरी रक्षा कर जिनसे तू घृणा करता है। सत्य ही, तेरा ज्ञान सभी वस्तुओं को आवृत किये हुए है। प्रशंसित हो तू, वस्तुतः तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तथा जो कुछ भी आकाश और धरती पर है, तथा वह जो इनके मध्य में है, तेरे उद्देश्य को विफल नहीं कर सकता। सत्यतः तू सभी वस्तुओं पर शक्तिशाली है।

हे मेरे ईश्वर, तेरी हस्ती की उच्चता से परे है, कि कोई भी तेरी प्रेममयी दया या अनुग्रह प्राप्त करना चाहे। तेरी श्रेष्ठ महिमा से परे है, कि तेरे उपहारों एवं सुकोमल दया के प्रमाणों के लिये कोई भी तुझसे अनुनय करे। कोई भी आत्मा तेरे कृपापूर्ण विधान एवं प्रेमपूर्ण देखभाल के प्रकटीकरण की याचना करे, इससे तू अति उच्च है, तथा कोई भी तेरे आशीर्वादों के एवं तेरी स्वर्गिक उदारता एवं कृपा के उद्गारों की भीख माँगे इससे तेरी महिमा अतिपावन है। विविध वदान्यताओं से सम्पन्न, आकाश एवं धरती के तेरे सम्पूर्ण साम्राज्य में तू उन सभी से अपरिमेय रूप से यशस्वी है जिनकी कोई पहचान हो सकती है।

हे मेरे ईश्वर, मैं तुझसे केवल यह याचना करता हूँ, कि इससे पहले कि मेरी आत्मा मेरे शरीर को त्याग दे, मुझे अपनी सुप्रसन्नता प्राप्त करने में समर्थ बना, चाहे यह एक सरसों के दाने के अत्यन्त सूक्ष्म अंश से भी छोटे क्षण के लिये ही क्यों न प्रदान की गयी हो। क्योंकि यदि यह उस दौरान प्रस्थान कर जाये जब तू मुझसे प्रसन्न हो, तो मैं प्रत्येक चिन्ता और

फिक्र से मुक्त हो जाऊँगा; परन्तु यदि यह मुझे उस दौरान त्याग दे, जब तू मुझसे अप्रसन्न हो, तो भले ही मैंने प्रत्येक सद्कर्म किया हो, फिर भी उनमें से एक भी मुझे उदात्त करने में सहायक सिद्ध न होगा।

अतः हे मेरे ईश्वर, मैं सच्चे मन से तुझसे याचना करता हूँ कि जब तू मुझे अपने पास ऊपर बुलाये और अपनी पावन उपस्थिति के समक्ष मुझे उपस्थित होने दे, तब कृपापूर्वक मुझे तेरी सुप्रसन्नता प्रदान कर, क्योंकि अपने साम्राज्य के लोगों के लिये तू सदासर्वदा से अपार उदारता का ईश्वर, तथा तेरी सर्वशक्तिमत्ता के उदात्त स्वर्ग में निवास करने वाले सभी के लिये सर्वोत्कृष्ट उपहारों का स्वामी रहा है।

*

कितनी असंख्य थीं अनुप्राणित की जाने वाली वे आत्मायें जिन्हें तेरे शब्द का यशोगान करने के कारण एवं तेरी दिव्य एकता का महिमागान करने के कारण घोर अपमान का सामना करना पड़ा। कितना प्रचुर था वह रक्त जो तेरे दिव्य उद्देश्य की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिये और तेरा यशोगान करने के लिये तेरे धर्म की खातिर बहाया गया ! कितना अपार था वह धन-वैभव जो तेरी पावनता की उदात्तता की पुष्टि करने के लिये एवं तेरे यशस्वी नाम का गुणगान करने के लिये गलत ढंग से ज़ब्त कर लिया गया। अनेकानेक हैं वे पाँव जो तेरे पावन शब्द का यशोगान करने के लिये और तेरी महिमा का गुणगान करने के लिये धूल पर चले। असंख्य हैं वे आवाजें जो विलाप में ऊपर उठीं हैं, वे हृदय जो आतंकित हुए, वे कष्टकर मुसीबतें जिन्हें तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं समझ सकता, तथा वे विपत्तियाँ एवं कष्ट जो तेरे अतिरिक्त अन्य सभी के लिये रहस्यमय हैं; और हे मेरे ईश्वर, यह सब कुछ तेरी पावनता की ऊँचाई को प्रतिस्थापित करने के लिये और तेरे महिमा के उत्कृष्ट स्वभाव को प्रदर्शित करने के लिये था।

ये आदेश तेरे द्वारा इसलिये विहित किये गये ताकि सभी सृजित वस्तुएँ यह साक्षी दे सकें कि उन्हें सिवाय तेरे, अन्य किसी के लिये अस्तित्व में नहीं लाया गया है। तूने उन्हें वे वस्तुएँ प्रदान करने से इन्कार किया है जो उनके हृदयों को प्रशान्ति प्रदान करती हैं, ताकि वे निश्चित रूप से यह जान सकें कि जो कुछ भी तेरे पावन अस्तित्व से जुड़ा है, वह अन्य सभी वस्तुओं से कहीं अधिक उच्च एवं उदात्त है जो उन्हें संतुष्ट कर सकें; क्योंकि तेरी अदम्य शक्ति सभी वस्तुओं में व्याप्त है, और कुछ भी इसे विफल नहीं कर सकता।

सत्यतः तूने इन महत्वपूर्ण घटनाओं के सम्पादन में सहायता प्रदान की है ताकि वे लोग जो बोधसम्पन्न हैं, सहज ही समझ लें, कि तेरी दिव्य एकता की उदात्तता प्रदर्शित करने के लिये तथा तेरी पावनता की उदात्तता की पुष्टि करने के लिये ही इन्हें विहित किया गया था।

*

महिमा हो तेरी, हे स्वामी ! भले ही तू किसी व्यक्ति को समस्त भौतिक सम्पत्ति से वंचित कर दे, और तेरे आदेश के संचालन के द्वारा उसके जीवन के आरम्भ से, तुझ तक उसके आरोहण के समय तक, तू अपने आदेश के प्रचालन से उसे निर्धन बना दे, फिर भी यदि तू उसे अपने प्रेम के वृक्ष से अस्तित्व प्रदान करे, तो सत्यतः ऐसी अनुकम्पायें, उसके लिये उन समस्त वस्तुओं से कहीं अधिक बेहतर होती जो आकाश और धरती तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, में तेरे द्वारा सृजित की गयी हैं; क्योंकि तेरे अनुग्रहों के प्रकटीकरण से वह उस स्वर्गिक निवास का उत्तराधिकारी बनेगा, और तेरे द्वारा इनमें प्रदान किये गये उपहारों का भाग ग्रहण करेगा; क्योंकि वे वस्तुएँ जो तेरे पास हैं, अपार हैं। यह वास्तव में तेरा वह आशीर्वाद है जो तेरी इच्छा की सुप्रसन्नता के अनुसार तू उन्हें प्रदान करता है जो तेरे प्रेम के पथ पर चलते हैं।

कितनी असंख्य थीं वे आत्मायें जिन्हें तेरी खातिर अतीत में शहीद कर दिया गया, और जिनके नाम पर अब सभी लोग गर्व करते हैं; और कितनी विशाल है ऐसे लोगों की संख्या, जिन्हें भौतिक धनसम्पत्ति प्राप्त करने में तूने सहायता की, और जो उनका ढेर लगाते रहे जबकि तेरे सत्य से वंचित रह गये, और जो आज गुमनामी में खो गये हैं। उनके लिए एक दुःखद दण्ड और घोर सज़ा है ।

हे स्वामी ! अपनी दिव्य एकता के वृक्ष के शीघ्र विकास के लिये प्रबन्ध कर; फिर इसे अपनी सुप्रसन्नता के निरन्तर प्रवाहित होने वाले जल से सींच, तथा अपने दिव्य आश्वासन के प्रकटीकरणों के समक्ष, ऐसे फल उपजाने में इसकी सहायता कर जो तू अपनी महिमा के गुणगान एवं प्रतिष्ठा के लिये, अपनी प्रशंसा और धन्यवाद देने, तथा अपने नाम के यशोगान के लिये, अपने सत्व की एकता के गुणगान के लिये, तथा तेरी आराधना के लिये चाहता है, क्योंकि यह सब कुछ तेरे अतिरिक्त अन्य किसी की पहुँच में नहीं है।

उनकी धन्यता महान है, जिनके रक्त को तूने अपनी सम्पुष्टि के वृक्ष को सींचने के लिये एवं इस प्रकार अपने पावन एवं अपरिवर्तनीय शब्द के उन्नयन के लिये चुना है।

हे मेरे स्वामी, मेरे लिये एवं उनके लिये जो तुझमें विश्वास करते हैं, वह विहित कर जो मातृग्रंथ के अनुसार, तेरी दृष्टि में हमारे लिये उत्तम समझा जाता है। क्योंकि तू अपनी पहुँच में समस्त वस्तुओं के निर्धारित परिणाम धारण किये हुए है।

तेरे उत्कृष्ट उपहार उन पर निरन्तर बरसाये जाते हैं जो तेरे प्रेम को संजोये हुए हैं तथा तेरी दिव्य अनुकम्पायें प्रचुर मात्रा में उन्हें प्रदान की जाती हैं जो तेरी दिव्य एकता को पहचान लेते हैं। तूने हमारे लिये जो कुछ भी नियत किया है उसे हम तेरी ही देखभाल को सौंपते हैं और तुझसे याचना करते हैं कि हमें वह समस्त अच्छाई प्रदान कर जिसे तेरा ज्ञान आवृत किये हुए है।

हे मेरे स्वामी, उस प्रत्येक बुराई से मेरी रक्षा कर जिसे तेरी सर्वज्ञता जानती है, क्योंकि तेरे अतिरिक्त न कोई शक्ति, ना बल है, तेरी उपस्थिति के अतिरिक्त अन्य कहीं से कोई विजय प्राप्त नहीं होती एवं आदेश देने का अधिकार मात्र तेरा है। जो कुछ भी ईश्वर ने चाहा है, हुआ है और जो उसने नहीं चाहा है, वह नहीं होगा।

उस सर्वोदात्त, सर्वशक्तिशाली ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी में, न कोई शक्ति है, ना बल।

*

हे स्वामी ! धरती के समस्त जनों को तेरे धर्म के स्वर्ग में प्रवेश पाने में सहायता कर, ताकि अस्तित्व में आया कोई भी प्राणी, तेरी सुप्रसन्नता की परिधि से बाहर न रह जाये।

अनन्तकाल से, तू वह करने में समर्थ रहा है जो तुझे प्रिय है और उस से परे है, जो तेरी इच्छा है।

*

हे मेरे ईश्वर, मुझे अपने प्रेम और अपनी सुप्रसन्नता का सम्पूर्ण परिमाण प्रदान कर, और तेरे देदीप्यमान प्रकाश के आकर्षणों से हमारे हृदयों को आनन्द विभोर कर दे, हे तू, जो सर्वोच्च प्रमाण एवं सर्वमहिमामय है। हे उदारता के स्वामी, अपनी कृपा के चिह्नस्वरूप, पूरे दिन तथा रात्रि बेला में, अपनी जीवन प्रदान करने वाले समीर मुझ पर भेज।

हे मेरे ईश्वर, तेरे मुखड़े का दर्शन का पुण्य प्राप्त करने लायक मैंने कोई पुण्य कर्म नहीं किया है और मैं यह निश्चित रूप से जानता हूँ कि यदि मैं इस दुनिया के अस्तित्व में रहने तक जीवित रहूँ, तो भी ऐसा कोई भी कर्म निष्पादित करने में विफल रहूँगा जो इस अनुग्रह को प्राप्त करने के योग्य हो, क्योंकि जब तक कि तेरी उदारता मुझ तक न पहुँचे और तेरी सुकोमल दया मुझमें व्याप्त न हो, एवं तेरी प्रेममयी दयालुता मुझको आवृत न कर ले, तब तक तेरी पावन देहरी तक पहुँचने में यह सेवक सदा अपर्याप्त होगा।

सर्वस्तुति हो तेरी, हे तू जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। तुझ तक आरोहण करने में, तेरी निकटता में निवास करने का सम्मान प्राप्त करने में तथा केवल तुझसे ही संसर्ग रखने में कृपापूर्वक मेरी सहायता कर। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

सत्यतः, यदि तू किसी सेवक को आशीष प्रदान करना चाहे, तो तू उसके हृदय के साम्राज्य से तेरे स्वयं के उल्लेख के अतिरिक्त प्रत्येक अन्य उल्लेख अथवा मनोवृति को मिटा देगा; और यदि तेरे मुखड़े के समक्ष किसी सेवक के हाथों किये गये अन्याय के कारण, तू उसके लिये अनिष्ट विहित करे, तो तू इस लोक एवं परलोक के लाभों से उसकी परीक्षा लेगा ताकि वह उनमें लवलीन हो जाये और तेरा स्मरण भूल जाये।

*

महिमा हो तेरी, हे स्वामी, तू जो अपने आदेश की शक्ति से सभी सृजित वस्तुओं को अस्तित्व में लाया है।

हे स्वामी ! जिन्होंने तेरे अतिरिक्त अन्य सभी कुछ को त्याग दिया है, उनकी सहायता कर और उन्हें एक महान विजय प्रदान कर। हे स्वामी, अपने सेवकों की सहायता करने के लिये, उन्हें सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिये, उन्हें महिमा से सुसज्जित करने के लिये, उन्हें सम्मान एवं उच्चता प्रदान करने के लिये, उन्हें समृद्ध बनाने के लिये तथा एक अद्‌भुत विजय के द्वारा उन्हें विजयी बनाने के लिये, ऐसे देवदूतों के समूहों को भेज जो आकाश में और धरती पर तथा जो कुछ भी इनके मध्य है।

तू उनका स्वामी है, आकाश और धरती का स्वामी है, तथा स्वामी है समस्त लोकों का। हे प्रभु, इन सेवकों की शक्ति के माध्यम से इस धर्म को बल प्रदान कर, और संसार के सभी

लोगों पर सफल होने में इनकी सहायता कर; क्योंकि, वे सत्य ही, तेरे वे सेवक हैं जिन्होंने स्वयं को तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्त कर लिया है, और वस्तुतः तू सच्चे अनुयायियों का रक्षक है।

हे स्वामी, स्वीकार कर कि तेरे इस अनुलंघनीय धर्म के प्रति अपनी निष्ठा के माध्यम से उनके हृदय, उन सभी वस्तुओं से अधिक शक्तिशाली बन जायें, जो आकाश में और धरती पर, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, और हे स्वामी, अपनी अद्‌भुत शक्ति के चिह्नों से उनके हाथों को बलशाली बना ताकि वे समस्त मानवजाति के समक्ष तेरी शक्ति प्रकट कर सकें।

*

हे परमेश्वर ! मैं तेरी शरण में आना चाहता हूँ, मैं तेरे सभी चिह्नों की ओर अपना हृदय केन्द्रित करता हूँ,

हे नाथ ! चाहे मैं यात्रा पर रहूँ या घर पर रहूँ या अपने व्यवसाय या अपने काम पर; मैं अपना पूरा भरोसा तुझमें ही रखता हूँ।

अतः, हे अपरिमेय करुणा के स्वामी ! मुझे भरपूर सहायता प्रदान कर, जिससे मैं सभी वस्तुओं से स्वतंत्र हो जाऊँ, हे तू जो असीम कृपा का स्वामी है !

हे नाथ ! अपनी प्रसन्नता के अनुरूप मुझको मेरा अंश प्रदान कर और ऐसा कर कि जो भी तू मेरे लिये नियत करे मैं उसमें ही संतुष्ट रहूँ। आदेश देने का पूरा अधिकार तेरा ही है।

*

हे नाथ। तू प्रत्येक वेदना का हर्ता है और प्रत्येक व्याधि को दूर करने वाला है। तू वह है जो प्रत्येक शोक को निष्कासित करता है, प्रत्येक दास को मुक्त करता है, एवं प्रत्येक आत्मा का उद्धारकर्ता है। हे स्वामी! अपनी दया के द्वारा मुझे मुक्ति प्रदान कर और मुझे अपने ऐसे सेवकों में गिन जिन्होंने मोक्ष पा लिया है।

*

हे मेरे स्वामी, सम्पूर्ण अनंतता से तू एक सत्य ईश्वर रहा है और सदा रहेगा, जबकि तेरे अतिरिक्त अन्य सभी आवश्यकताग्रस्त और निर्धन हैं। हे मेरे ईश्वर तेरी डोर को कसकर

थामते हुए, मैंने स्वयं को समस्त मानवजाति से अनासक्त कर लिया है, तथा तेरी सुकोमल दया के निवास स्थान की ओर अभिमुख होते हुए, मैंने सभी सृजित वस्तुओं से मुँह मोड़ लिया है। हे मेरे ईश्वर, अपनी कृपा एवं उदारता, अपनी महिमा एवं तेजस्विता, और अपने प्रभुत्व एवं श्रेष्ठता, के द्वारा कृपापूर्वक मुझे प्रेरित कर, क्योंकि तेरे अतिरिक्त मैं किसी अन्य शक्तिशाली और सर्वज्ञानी को नहीं पा सका हूँ। हे मेरे ईश्वर, अपनी श्रेष्ठ एवं सर्वपरिपूरक महिमा की शक्ति से, तथा आकाश और धरती की सेना द्वारा मुझे रक्षित रख, क्योंकि मैं तेरे अतिरिक्त किसी अन्य में अपना भरोसा नहीं रख सकता और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई शरण नहीं है।

हे मेरे स्वामी, तू ईश्वर है, तू मेरी आवश्यकताओं को जानता है, तू मेरी अवस्था को देखता है और उससे अवगत है जो तेरे आदेश के कारण मुझ पर बीती है और इस जगत की वे यातनाएँ जो तेरे आदेश से तथा तेरी उदारता एवं अनुग्रह के चिह्न-स्वरूप मैंने सहन की हैं।

*

महिमाओं की महिमा एवं सर्वदीप्तिमान प्रकाश तुझ पर विराजमान हो, हे मेरे ईश्वर। तेरी तेजस्विता इतनी श्रेष्ठ है कि कोई भी मानव कल्पना इस तक नहीं पहुँच सकती तथा तेरी उत्कृष्ट शक्ति इतनी महान है कि मनुष्यों के हृदय एवं मस्तिष्क के पखेरू इसकी ऊँचाइयों को कभी प्राप्त नहीं कर सकते। जैसा कि तेरे स्थान को शोभा देता है, उस प्रकार तेरी प्रशंसा करने में सभी प्राणी अपनी असमर्थता स्वीकार करते हैं।

अपरिमेय रूप से उदात्त है तू। कोई भी तेरी सत्ता की महिमा नहीं गा सकता, अथवा तेरी उदारता के प्रमाणों को उस प्रकार समझ सकता जिस प्रकार यह तेरे अन्तरतम सत्व में मौजूद है, क्योंकि एकमात्र तू ही स्वयं को उस प्रकार जानता है जैसा कि तू स्वयं है।

हे स्वामी हमारे ईश्वर, सृजन एवं अन्वेषण के साम्राज्य को अस्तित्व में लाने की उदारता के लिये मैं तुझे स्तुति अर्पित करता हूँ - एक ऐसी स्तुति जो तेरी उस प्रेरणा के द्वारा देदीप्यमान रूप से चमक रही है जिसका उचित मूल्यांकन तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, जैसा कि तेरी विस्मयकारी उपस्थिति और तेरी अभिभूत कर देने वाली तेजस्विता की महिमा को शोभा देता है, मैं इस महान आशीर्वाद, इस अद्‌भुत

चिह्न के लिये, जो सृजन एवं प्रकटीकरण के तेरे साम्राज्यों में प्रकट हुआ है, तेरा यशोगान करता हूँ और तुझे धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

यशस्वी हो तेरा नाम ! क्या तेरे अतिरिक्त किसी अन्य का कोई स्वतंत्र अस्तित्व है, कि वह तेरे स्वभाव की ओर संकेत करने में समर्थ हो और क्या तेरे अतिरिक्त किसी अन्य की कोई पहचान है, कि जिससे मैं तुझे पहचान सकूँ ? वह सब कुछ जो ज्ञात है, अपनी ख्याति के लिये तेरे सर्वाधिक प्रकट नाम की भव्यता का ऋणी है, तथा प्रत्येक वस्तु तेरी अपराजेय इच्छा से उत्पन्न होने वाले कम्पायमान प्रभाव से गहराई तक उत्तेजित होती है। तू सभी वस्तुओं से भी अधिक, सभी वस्तुओं के निकट है।

प्रशंसित एवं महिमावन्त है तू ! उनसे, जो बोध सम्पन्न हैं, तेरी उच्चता इतनी अत्यधिक उदात्त है कि उनके हाथ तुझ तक नहीं पहुँच सकते और तेरी अतल गहराई इतनी गहन है कि मनुष्यों के मस्तिष्क एवं प्रत्यक्ष ज्ञान की नदियाँ इससे बाहर प्रवाहित नहीं हो सकतीं।

*

ईश्वर के नाम से, जो सर्वकरूणामय, दयालु है।

सर्वस्तुत्य हो वह ईश्वर जो सृजित वस्तुओं के अस्तित्व में आने से पहले, सदा से विद्यमान था जब उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था। वही है वह, जो तब से चिरस्थायी रहा है, जब उसकी सृष्टि का कोई भी तत्व अस्तित्व में नहीं था। वास्तव में, उनकी आत्मायें, जो बोध-सम्पन्न हैं, उसके गुणों का अल्पतम प्रकटीकरण समझ पाने में भी विफल रहती हैं तथा उनके मस्तिष्क, जिन्होंने उसकी एकता को स्वीकारा है, उसकी सर्वशक्तिमत्ता के सर्वाधिक महत्वहीन चिह्न को भी समझने में असमर्थ रहते हैं।

पावन है तू, हे स्वामी, मेरे ईश्वर। तेरे महिमाशाली हस्तकौशल का गुणगान करने के लिये ही जब मनुष्यों की जिह्वा मंद पड़ती है, तो तेरी श्रेष्ठ शक्ति की तेजस्विता की प्रशंसा करने में वे कितना अधिक लड़खड़ायेंगी; और जबकि तेरी सृष्टि की एक भी वस्तु के रहस्य को समझ पाने में मानवी ज्ञान अत्यधिक असमंजस में पड़ जाता है, तो तेरे स्वयं के अस्तित्व के ज्ञान को कोई कभी कैसे समझ सकता है ?

तेरे द्वारा मुझ पर इसे प्रकट करने के माध्यम से मैं तुझे जानता हूँ, कि तू स्वयं के अतिरिक्त किसी अन्य के लिये अज्ञात है। जिस सृष्टि को तूने पूरी अस्तित्वहीनता से गढ़ा है उससे मैंने यह जाना है कि तेरे सत्व के ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग सभी के लिये बाधित है। तू वह ईश्वर है जिसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं। तेरे स्वरूप को, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई भी समझ नहीं सकता। तेरा कोई विकल्प या साझेदार नहीं है। सदासर्वदा से तू स्वयं के अतिरिक्त किसी अन्य के बगैर, एकाकी रहा है तथा सदासर्वदा तक तू निरन्तर ऐसा ही रहेगा, जबकि कोई भी सृजित वस्तु कभी भी तेरे उदात्त स्थान के निकट नहीं पहुँच सकती।

हे मेरे ईश्वर, तू अपने स्वयं के अस्तित्व को जैसे जानता है वैसे तुझे जानने की अपनी शक्तिहीनता को सभी मनुष्य स्वीकार करते हैं; वह सृजन प्रेरणा जिसे तूने निर्मुक्त किया है, समस्त सृष्टि में प्रत्यक्ष है तथा वे सभी सृजित वस्तुएँ जिन्हें तूने रचा है, तेरे अद्‌भुत चिह्नों की अभिव्यक्तियाँ मात्र हैं। यशस्वी हो तेरा नाम; तू अपने किसी भी प्राणी के यत्नों के परे इतना उदात्त है कि वे तुझे उस तरह से नहीं समझ सकते जो तेरे योग्य और अनुकूल हो।

स्तुति हो तेरी ! अपनी सृष्टि को जिस तरह तूने अस्तित्वहीनता से उत्पन्न किया है, वह समस्त सृजित वस्तुओं को तुझे समझने से रोकता है, तथा जिस प्रकार, तूने जीवों पर सीमाबद्धता लागू कर उन्हें रचा है, वह तेरे गुणों के प्रकटीकरणों के समक्ष उनकी परम अस्तित्वहीनता को घोषित करता है।

उदात्त है तू, हे मेरे स्वामी ! तेरी महिमा का यशोगान करने में समस्त मानवजाति असमर्थ है तथा तेरा गुणगान करने में मनुष्यों के मस्तिष्क असमर्थ हैं। हे मेरे ईश्वर, मैं तेरी उपस्थिति में साक्षी देता हूँ कि तू अपने अद्‌भुत चिह्नों द्वारा जाना जाता है और तेरे चिह्नों के प्रकटीकरणों के माध्यम से तुझे पहचाना जा सकता है। यह सत्य, कि तूने हमें अस्तित्व प्रदान किया है, मुझे तेरे समक्ष यह स्वीकार करने को प्रेरित करता है कि हमारी स्तुति से तू अपरिमेय रूप से उदात्त है, तथा उन गुणों की प्रभावोत्पादकता के माध्यम से, जिनसे तूने हमारे अस्तित्वों को विभूषित किया है, मैं तेरे समक्ष साक्षी देता हूँ कि तू हमारी समझ के परे श्रेष्ठ है।

यह अनुदान दे कि मैं तेरी निकटता प्राप्त करने में श्रेष्ठतम ऊँचाइयों में विचरण कर सकूँ, तथा अपनी पावनता की सुरभि के माध्यम से मुझे अपनी निकटता प्राप्त करने में समर्थ बना। इस प्रकार हर्षोन्माद के प्रकाश से समस्त अवरोध मिट जायें तथा मेरे द्वारा

पुनर्मिलन के आसन ग्रहण करने से, तुझसे समस्त दूरी मिट जाये, और वे सूक्ष्म आवरण जिन्होंने मुझे तेरे महिमा के प्रासाद में प्रवेश करने से बाधित किया है, इतने विरल हो जायें कि यह साक्षी देते हुए कि तू ईश्वर है, कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, वह एक, अतुलनीय, चिरस्थायी, कि तू जनक नहीं है, ना ही तू जन्मा है, मैं तेरी उपस्थित में प्रवेश प्राप्त कर सकूँ, तेरे निकट अपना निवास बना सकूँ, तथा स्तुति की वह अभिव्यक्ति उच्चारित कर सकूँ जिससे तूने स्वयं को मेरे समक्ष उद्घाटित किया है, कि तेरी कोई सन्तान नहीं, न साझेदार, ना ही अपमान से बचाने वाला तेरे अतिरिक्त कोई अन्य नहीं है, और तू समस्त लोकों का स्वामी है। मैं यह भी साक्षी देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त अन्य सभी तेरे प्राणी मात्र हैं, और तेरी मुट्ठी में जकड़े हुए हैं। तेरी इच्छा के बगैर किसी को भी सम्पत्ति से अनुग्रहित नहीं किया जाता, या कोई अभाव में जीवनयापन करता है। तू अनन्त दिवसों का सम्राट एवं सर्वोच्च शासक है। तेरी शक्ति सभी पर सामर्थ्यशाली है और तेरी इच्छा से ही सभी वस्तुएँ अस्तित्व में हैं। समस्त मानवजाति अपनी दीन पराधीनता को समझती है एवं अपनी कमियों को स्वीकार करती है और ऐसा कुछ नहीं है जो तेरा यशोगान नहीं करता।

हे मेरे ईश्वर, तेरे दयालु मुखड़े के प्रताप के माध्यम से और तेरे अतिप्राचीन नाम की तेजस्विता के माध्यम से मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तेरे दिवसों के प्रमाणों की जीवनदायी सुरभि से मुझे वंचित न कर - ऐसे दिवस से जिसका शुभारम्भ स्वयं तूने किया है और जिन्हें तू अस्तित्व में लाया है।

*

तू ईश्वर है,

तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

प्रशंसित एवं महिमावन्त है तू, हे स्वामी, मेरे ईश्वर! तू अस्तित्व के संसार में सर्वोच्च है और तेरी शक्ति सभी वस्तुओं में है। तू अपनी मुट्ठी में सृष्टि के साम्राज्य को धारण किये हुए है और अपनी इच्छा के अनुरूप अस्तित्व प्रदान करता है।

सर्वस्तुत्य है तू, हे स्वामी, मेरे ईश्वर ! उन आत्माओं को जो उत्सुकतापूर्वक तेरे द्वार पर प्रतीक्षा कर रही हैं, और उन पावन हस्तियों के माध्यम से, जो तेरी उपस्थिति के दरबार को प्राप्त हुए हैं, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि हम पर अपनी संवेदनशील करुणा की दृष्टि डाल तथा हमें अपनी प्रेममयी सार-संभाल की दृष्टि से देख। अपने सुकोमल स्नेह की अग्नि से

प्रज्वलित होने में हमारी आत्मओं की सहायता कर तथा हमें अपनी उदारता के जीवन्त जल का पान करने दे। अपने उत्कृष्ट प्रेम के पथ पर हमें सुदृढ़ बना और अपनी पावनता की सीमाओं के भीतर रहने में हमें समर्थ बना। वस्तुतः तू दाता, सर्वाधिक उदार, सर्वज्ञाता, सर्वसूचित है।

महिमावन्त है तू, हे मेरे ईश्वर ! मैं तेरा आह्वान करता हूँ, तेरे सर्वमहान नाम पर जिसके माध्यम से उस सर्वोदात्त ईश्वर के निगूढ़ रहस्य प्रकट किये गये, एवं सभी राष्ट्रों के लोग आस्था एवं निश्चय के केन्द्र की ओर अभिमुख हुए, जिसके माध्यम से मानवजाति को अनुप्राणित करने के लिये तेरे ज्योतिर्मय शब्द प्रवाहित हुए, एवं उदारता के उस मूर्तरूप द्वारा समस्त ज्ञान का सार प्रकट किया गया।

काश! मेरा जीवन, मेरा अन्तर्तम सत्व, मेरी आत्मा और मेरी देह से उदात्त हुई धूल को बलिदान हेतु अर्पित हो जाएं।

हे स्वामी, मेरे ईश्वर, मैं सच्चे मन से तुझसे याचना करता हूँ, तेरे उस सर्वमहिमामय नाम पर जिसके द्वारा तेरी प्रभुसत्ता स्थापित हुई है और तेरी महानता के चिह्न प्रकट हुए हैं, और जिसके द्वारा तेरे समस्त प्राणियों की विक्षीर्ण अस्थियों को पुनर्जीवित करने के लिये तथा जिन्होंने तेरे धर्म को स्वीकारा है, उनके अंग-प्रत्यंगों को अनुप्राणित करने के लिये जीवन एवं पावन आनन्दातिरेक के महासागर उमड़े हैं - मैं सच्चे मन से तुझसे याचना करता हूँ कि तू हमारे लिये इहलोक और परलोक का शुभ-मंगल विहित कर, तेरी कृपा एवं प्रेममयी दयालुता के दरबार में प्रवेश प्राप्त करने में हमें समर्थ बना तथा हमारे हृदयों में आनन्द एवं उल्लास की अग्नि इस प्रकार प्रज्वलित कर कि इसके द्वारा सभी मनुष्य आकर्षित हो जायें।

वस्तुतः तू सर्वशक्तिशाली, रक्षक, सर्वबलशाली, स्वयंजीवी है।

*

महिमा हो तेरी, हे स्वामी, मेरे नाथ ! मैं तुझसे याचना करता हूँ कि क्षमा कर दे मुझे और उन्हें जो तेरे धर्म के समर्थक हैं। वस्तुतः तू सम्प्रभु स्वामी, क्षमादाता, सर्वाधिक उदार है। हे मेरे ईश्वर! अपने वैसे सेवकों को, जो ज्ञानविहीन हैं, अपने धर्म में प्रवेश पाने के योग्य बना, क्योंकि एक बार यदि वे तेरे बारे में जान जायेंगे तो वे न्याय दिवस की सत्यता के साक्षी बनेंगे ओर तेरी कृपा के प्रकटीकरण का विरोध नहीं करेंगे। उनके लिये अपनी दया के

चिह्न भेज और वे जहाँ कहीं भी निवास करें उन्हें उसका उदार अंश प्रदान कर जिसका विधान तूने उनके लिये किया है जो तेरे सेवकों के बीच विशुद्ध हृदय हैं। तू सत्य ही सर्वोपरि सम्राट, सर्वउदार, परम् परोपकारी है।

हे मेरे ईश्वर! अपनी कृपा और अपनी उपस्थिति की स्नेहिल दयालुता के प्रतीक के रूप में उन घरों पर अपनी कृपा और अपने आशीषों की बूंदे गिरने दे जिनके निवासियों ने तेरे धर्म को स्वीकार किया है। वस्तुतः; क्षमादान देने में तू सर्वोपरि है। अगर तेरी कृपा उन तक नहीं पहुँच पायेगी तो तेरे इस दिवस में वह तेरे भक्तों में कैसे गिने जाएंगे।

मुझे आशीष दे, हे मेरे ईश्वर ! और उन्हें भी जो इस पूर्व निर्धारित युग में तेरे चिह्नों पर विश्वास करेंगे। जो अपने हृदयों में मेरा प्रेम धारण करते हैं, एक ऐसा प्रेम जिसे तूने उनके हृदयों में रोपा है। सत्य ही तू न्याय का स्वामी, सर्वोच्च है।

*

हे मेरे ईश्वर, तेरी प्रशंसा करने एवं तुझे पहचानने के समस्त जीवों एवं सृजित वस्तुओं के प्रयासों से तू अपरिमेय रूप से उदात्त है। तेरे पावन अस्तित्व के लिये जिस प्रकार शोभनीय है, उस प्रकार से, कोई भी प्राणी तुझे कभी नहीं समझ सकता और तेरे अज्ञात सत्व के लिये जिस प्रकार योग्य है, उस प्रकार से कोई भी सेवक तेरी उपासना कभी नहीं कर सकता है। गुणगान हो तेरा; तेरा उदात्त व्यक्तित्व इतना उच्च है कि तेरे प्राणियों के संकेत मात्र भी तेरी पावन उपस्थिति तक कभी नहीं पहुँच सकते।

हे मेरे ईश्वर, मैंने जब भी तेरे पावन सानिध्य की ऊँचाइयों में विचरण किया है एवं तेरे प्रति प्रार्थनामयता की अन्तरतम चेतना प्राप्त की है, मैं समझ पाया कि तू अगम्य है और कोई भी उल्लेख, तेरे श्रेष्ठ दरबार तक कभी नहीं पहुँच सकता। अतः मैं तेरे प्रियजनों की ओर मुड़ता हूँ - वे जिन्हें तूने कृपापूर्वक स्वयं अपना स्थान प्रदान किया है ताकि वे तेरा प्रेम एवं तेरा सच्चा ज्ञान प्रकट करें। अतः हे मेरे ईश्वर, उन्हें उस प्रत्येक विशिष्टता एवं श्रेष्ठ उपहार से आशीर्वादित कर, जिसे तेरी शक्ति की साम्राज्य में तेरा ज्ञान मान्यता प्रदान करे।

हे मेरे ईश्वर, मेरे स्वामी और मेरे मालिक ! मैं तेरी शक्ति और महिमा की सौगंध खाता हूँ कि सभी मनुष्यों की अन्तिम कामना एकमात्र तू ही है, और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं, और यह कि आराधना का लक्ष्य एकमात्र तू ही है और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। हे मेरे

ईश्वर ! तेरी अगम्य महिमा के पथों ने, ये शब्द उच्चारित करने के लिये मुझे प्रेरित किया है और तेरी अनंत ऊँचाइयों के मार्गों ने ये संकेत देने के लिये मुझे मार्गदर्शित किया है। उदात्त है तू, हे मेरे ईश्वर ! तेरे प्रकटीकरण के प्रमाण इतने प्रत्यक्ष हैं कि मुझे तेरे अतिरिक्त किसी अन्य की सहायता लेने की आवश्यकता नहीं है, तथा तेरे प्रति जो प्रेम मैं संजोये हुए हूँ वह मेरे लिये समस्त वस्तुओं के ज्ञान से भी अधिक मधुर है तथा तेरे अतिरिक्त किसी अन्य का ज्ञान प्राप्त करने की चाह से मुझे मुक्त करता है।

सर्वस्तुत्य है तू, हे मेरे स्वामी ! वस्तुतः मैं तुझमें विश्वास करता हूँ, जैसा कि तू स्वयं में है; और जो तेरा है, जैसा कि तू स्वयं में है, मैं स्वयं के लिये एवं समस्त मानवजाति की ओर से क्षमा की याचना करता हूँ।

हे मेरे ईश्वर ! मैंने तेरे मुखड़े की ओर स्वयं को अग्रसर किया है तेरे समक्ष समर्पित कर दिया है और तेरी पावन उपस्थिति में मेरे वश में अन्य कुछ भी नहीं है। अपनी शक्ति से यदि तू मुझे दण्ड देता है, तो तू अपने आदेश में निश्चित रूप से न्यायपूर्ण होगा; और यदि तू मुझे प्रत्येक उत्कृष्ट उपहार देता है, तो तू वास्तव में सर्वदयालु एवं उदार होगा; वस्तुतः तू संसार के सभी लोगों से स्वतंत्र है।

हे मेरे मालिक, मैंने तुझसे पुनर्मिलन चाहा है, फिर भी, तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्ति के ज्ञान के सिवाय, इसे प्राप्त करने में मैं विफल रहा हूँ। मैंने तेरे प्रेम की लालसा की है, परन्तु तेरे अतिरिक्त अन्य सब कुछ त्यागने के सिवाय इसे खोज पाने में मैं विफल रहा हूँ। मैं तेरी उपासना करने के लिये आतुर रहा हूँ, फिर भी, तेरे प्रेम को संजोये रखने वालों से प्रेम करने के सिवाय इसे प्राप्त करने में मैं विफल रहा हूँ। हे मेरे ईश्वर, मैं तेरे अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं पहचानता। तू अतुलनीय है और तेरा कोई साझेदार नहीं। एकमात्र तू ही हमारी कमियों को जानता है और अन्य किसी के पास यह ज्ञान नहीं। जो कुछ भी तुझे अप्रिय लगता है, उसके लिये मैं तुझसे क्षमा की याचना करता हूँ।

तेरी प्रेरणा की जिह्वा से, सभी समय यह कहते हुए मैं तेरा आह्वान करता हूँ किः 'तू सत्य ही सर्वसम्पन्न, अतुलनीय है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। जो अहंकारपूर्वक तेरे साझेदार निर्धारित करते हैं, उनके वर्णनों से तू अपरिमेय रूप से दूर एवं उदात्त है।'

*

हे मेरे ईश्वर, समस्त तेजस्विता और महिमा, तथा समस्त स्वामित्व, प्रकाश, श्रेष्ठता और भव्यता तेरी हो। तू जिसे चाहे उसे प्रभुसत्ता प्रदान करता है और तू जिसे चाहे उसे इससे वंचित रखता है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वसम्पन्न, सर्वोदात्त। तू वह है जिसने अस्तित्वहीनता से इस ब्रह्माण्ड और इसमें निवास करने वाले सभी की रचना की है। तेरे अतिरिक्त अन्य कुछ भी तेरे योग्य नहीं है, जबकि तेरी पावन उपस्थिति में, तेरे अपने अस्तित्व की महानता की तुलना में, तेरे अतिरिक्त अन्य सभी नगण्य समान है।

तेरे उस महत्वपूर्ण ग्रंथ से हट कर तेरे गुणों का बखान करने में मैं असमर्थ हूँ, जिसमें तूने कहा है, 'कोई भी दृष्टि उसे समा नहीं सकती परन्तु वह समस्त दृष्टियों को समाये हुए है। वह कुशाग्र है, सब कुछ देखने है।'[79]

महिमा हो तेरी, हे मेरे ईश्वर, सत्यतः कोई भी मस्तिष्क या दृष्टि, चाहे वह कितनी ही तीक्ष्ण अथवा भेदमूलक क्यों न हो, तेरे चिह्नों में से सर्वाधिक नगण्य चिह्न के स्वरूप को भी कभी समझ नहीं सकती। वस्तुतः तू ईश्वर है, तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। मैं साक्षी देता हूँ, कि केवल तू ही अपने गुणों की एकमात्र अभिव्यक्ति है, कि तेरे अतिरिक्त अन्य किसी की प्रशंसा तेरे पावन दरबार तक कभी नहीं पहुँच सकती, ना ही तेरे गुणों का ज्ञान तेरे स्वयं के अतिरिक्त किसी अन्य को हो सकता है।

महिमा हो तेरी, तू स्वयं के अतिरिक्त किसी अन्य के वर्णन से ऊपर, उदात्त है, क्योंकि तेरे गुणों का उपयुक्त उल्लेख करना अथवा तेरे सत्व की अन्तरतम वास्तविकता को समझना मानव संकल्पना से परे है कि तेरी महिमा से दूर रह कर तेरे प्राणी तेरा वर्णन कर सकें, तथा तेरे अतिरिक्त अन्य कोई तुझे कभी जान सके। हे मेरे ईश्वर, तूने स्वयं को मुझ पर प्रकट किया है इसलिये मैंने तुझे जाना है, क्योंकि यदि तू स्वयं को मुझ पर प्रकट नहीं करता तो मैं तुझे कभी नहीं जान पाता। तेरे द्वारा मुझे अपने समक्ष बुलाये जाने की प्रभावोत्पादकता के कारण मैं तेरी उपासना कर पाता हूँ, क्योंकि यदि यह तेरे आह्वान के कारण न होता, तो मैं तेरी उपासना नहीं कर सकता था। प्रशंसित है तू, हे मेरे ईश्वर, मेरे अपराध वृहद हैं और मेरे पापों ने दारुण अनुपात धारण कर लिया है। तेरी पावन उपस्थिति में मेरी दुर्दशा कितनी लज्जाजनक सिद्ध होगी। मैं उस सीमा तक तुझे जानने में विफल रहा हूँ जितना तूने स्वयं को मुझ पर प्रकट किया है; तेरे आह्वान के योग्य भक्ति के

द्वारा तेरी उपासना करने में मैं विफल रहा हूँ; जिस प्रकार तूने मुझे प्रेरित किया था, उस तरह तेरे प्रेम के पथ पर चल कर तेरी आज्ञाओं का पालन करने में मैं विफल रहा हूँ।

तेरी शक्ति मेरी साक्षी है, हे मेरे ईश्वर, कि जो तेरे योग्य है वह उससे कहीं अधिक महान और अधिक उच्च है जिसे निष्पादित करने का प्रयत्न कोई प्राणी कर सके। वास्तव में, ऐसा कुछ भी नहीं है जो कभी भी तुझे उस प्रकार समझ सके जैसा कि तेरे लिये योग्य है, ना ही कोई दासोचित प्राणी, तेरी उस प्रकार उपासना कर सकता है जैसा कि तेरी आराधना को शोभा देता हो। हे मेरे ईश्वर, तेरा प्रमाण इतना पूर्ण एवं विस्तृत है कि इसका अन्तरतम सार, किसी भी आत्मा के वर्णन से श्रेष्ठ है तथा तेरे उपहारों के उद्गार इतने प्रचुर हैं कि कोई भी क्षमता इसकी असीम पहुँच का मूल्यांकन नहीं कर सकती।

हे मेरे ईश्वर ! हे मेरे मालिक ! तेरी विविध उदारताओं के माध्यम से, तथा उन स्तम्भों के माध्यम से जो तेरी महिमा के सिंहासन को क़ायम रखते हैं, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि इन दीन लोगों पर दया कर जो इस क्षणिक जीवन की अप्रिय वस्तुओं को सहन करने में शक्तिहीन हैं, फिर वे उस आने वाले जीवन में तेरे दण्ड को कितना कम सहन कर पायेंगे एक ऐसा दण्ड जो तेरे न्याय के द्वारा विहित किया गया है, तेरे कोप से उत्पन्न होता है और अनन्तता तक अस्तित्व में रहेगा।

हे मेरे ईश्वर, मेरे स्वामी और मेरे मालिक, मैं तेरे द्वारा तुझसे याचना करता हूँ कि मेरी ओर से मध्यस्थता कर। मैंने तेरे न्याय से तेरी दया की ओर अपना रूख किया है। अपने आश्रय के लिये, मैं तुझे और उन्हें खोज रहा हूँ जो पलक के झपकने मात्र के लिए भी तेरे पथ से मुँह नहीं मोड़ते - वे जिनके लिये तूने अपनी कृपा और उदारता के चिह्नस्वरूप इस सृष्टि को सृजित किया है।

*

हे मेरे ईश्वर ! मेरी आत्मा की व्यथा को शान्त करने वाला तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है, एवं हे मेरे ईश्वर, तू मेरी उच्चतम अभिलाषा है। सिवाय तेरे एवं उनके जिन्हें तू प्रेम करता है, मेरा हृदय अन्य किसी से प्रतिबद्ध नहीं है। मैं सत्य ही घोषित करता हूँ कि मेरा जीवन और मृत्यु, दोनों ही तेरे लिये हैं। वस्तुतः तू अतुलनीय है, और तेरा कोई साझेदार नहीं।

हे मेरे स्वामी ! मैं तुझसे क्षमा की याचना करता हूँ कि मैंने स्वयं को तुझ से रोके रखा है। तेरी महिमा एवं तेजस्विता की सौगंध, तुझे उचित रूप से पहचानने और तेरी उपासना करने में मैं विफल रहा हूँ, जबकि, जैसा कि तेरे स्थान को शोभा देता है, तू स्वयं को मुझ पर प्रकट करता है और मुझे याद करता है। हे मेरे स्वामी, यदि मेरे दुष्कर्मों और अपराधों के कारण तू मुझे गिरफ़्त में ले मैं तेरे अतिरिक्त किसी सहायक को नहीं जानता। पलायन करने के लिये तेरे अतिरिक्त मेरा कोई आश्रय नहीं। तेरी अनुमति के बिना तेरे प्राणियों में से कोई भी तेरे समक्ष मध्यस्थता करने का साहस नहीं कर सकता। तेरे दरबार के समक्ष मैं तेरे प्रेम को दृढ़ता से थामता हूँ, तथा, जैसा कि तेरी महिमा के योग्य है, तेरे आदेशानुसार, मैं सच्चे मन से तुझसे प्रार्थना करता हूँ। मैं तुझसे याचना करता हूँ, कि जैसा कि तूने मुझे वचन दिया था, मेरे आह्वान को सुन। वस्तुतः तू ईश्वर है; तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अकेला ही और बिना किसी सहायता के, तू समस्त सृजित वस्तुओं से स्वतंत्र है। न तो तेरे प्रेमियों की भक्ति तुझे लाभ पहुँचा सकती है, ना ही आस्थाहीनों के दुष्कर्म तुझे कोई हानि पहुँचा सकते हैं। वस्तुतः तू मेरा ईश्वर है, वह जो अपना वचन पूरा करने में कभी विफल नहीं हो सकता।

हे मेरे ईश्वर ! तेरे अनुग्रह के प्रमाणों के माध्यम से मैं तुझसे याचना करता हूँ, कि मुझे अपनी पावन उपस्थिति की उदात्त ऊँचाइयों के निकट आने दे, तथा स्वयं को तेरे अतिरिक्त किसी अन्य के सूक्ष्म संकेतों की ओर झुकाने से मेरी रक्षा कर। हे मेरे ईश्वर, मेरे पगों को उसकी ओर मार्गदर्शित कर जो तुझे स्वीकार्य एवं प्रिय है। अपनी अनुकम्पा के माध्यम से अपने कोप और दण्ड के आवेश से मेरी रक्षा कर तथा ऐसी राहों में प्रवेश करने से मुझे रोक ले जो तुझे प्रिय नहीं हैं।

*

हे मेरे ईश्वर ! मैं तुझे उस प्रकार जानने में विफल रहा हूँ, जैसा तेरी महिमा के योग्य है, मैं तुझसे उस प्रकार भय करने में विफल रहा हूँ, जैसा कि मेरे लिये उचित है। मैं तेरा उल्लेख कैसे कर सकता हूँ जब कि मैं इस स्थिति में हूँ, मैं अपना मुखड़ा तेरी ओर कैसे कर सकता हूँ जब कि तेरी उपासना करने के अपने कर्त्तव्य से मैं वंचित रहा हूँ ?

तूने अपनी उस शक्ति की महानता को दर्शाने के लिये, जो कि सुस्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष है, मुझे अस्तित्व प्रदान नहीं किया है; क्योंकि तू वह ईश्वर है जो अनन्तता में तब से अस्तित्व में

रहा है जब कुछ भी नहीं था। अपितु, तूने हमें अपनी श्रेष्ठ शक्ति से इसलिये सृजित किया है, कि तेरे स्मरण के देदीप्यमान प्रकटीकरण के समक्ष, कृपापूर्वक हमारा उल्लेख-मात्र किया जा सके।

हे मेरे ईश्वर, मुझे तेरे विषय में कोई ज्ञान नहीं है, सिवाय उसके जो तूने मुझे सिखाया है, जिसके माध्यम से मैं तेरी स्व को पहचान सकूँ - एक ऐसा ज्ञान जो केवल मेरी विफलता और पापमयता दर्शाता है। अतः हे मेरे ईश्वर, यहाँ हूँ मैं, तेरे प्रति पूर्णतया समर्पित, वह करने के लिये तत्पर जो तेरी इच्छा हो। यह स्वीकार करते हुए, कि तू ईश्वर है, कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, और यह कि तू अतुलनीय है, तेरा कोई साझेदार नहीं, और तेरे जैसा कुछ भी नहीं है, मैं स्वयं को विनम्रतापूर्वक तेरी दया के प्रकटीकरणों के समक्ष अर्पित करता हूँ। तू स्वयं इसका साक्षी, जैसा कि तेरी महिमा को शोभा देता है।

*

वह ईश्वर है, सर्वश्रेष्ठ शासक, शाश्वत्,

वह जिसकी सहायता की याचना सभी मनुष्य करते हैं।

प्रशंसित एवं महिमावन्त है तू, हे स्वामी ! अस्तित्व जगत और मानव आत्मायें, दोनों ही साक्षी देते हैं कि तू अपने हस्तकौशल के प्रकटीकरणों के परे श्रेष्ठ है, तथा तेरे नामों एवं गुणों के धारक घोषित करते हैं कि तू अपरिमेय रूप से, उस प्रशंसा से उदात्त है जो सृजन एवं अन्वेषण के साम्राज्य तुझे अर्पित कर सकें। समस्त वास्तविकताएँ प्रत्यक्ष रूप से तेरे सत्व की एकता को दर्शाते हैं, तथा सभी प्रमाण एवं चिह्न इस सत्य को प्रतिबिम्बित करते हैं कि तू ईश्वर है तथा आकाश एवं धरती के सम्पूर्ण साम्राज्यों में तेरा कोई समकक्ष या साझेदार नहीं।

अत्यधिक उच्च एवं पावन है तू, हे स्वामी ! तेरा दिव्य अस्तित्व यह साक्षी देता है कि अस्तित्व के संसार में निवास करने वाले सभी के लिये तू अबोधगम्य है, और तेरा अन्तरतम सत्व यह घोषित करता है कि तू उनके वर्णन से कहीं अधिक उच्च है जो तेरी महिमा का उल्लेख करते हैं।

वे चिह्न जो ये पावन सत्व प्रकट करते हैं और वे शब्द जो ये उदात्त वास्तविकताएँ अभिव्यक्त करतीं हैं तथा इन दिव्य अस्तित्वों द्वारा प्रकट किये गये संकेत, सभी यह घोषित करते हैं कि तू अस्तित्व के संसार के मूर्तरूपों की पहुँच से परे, अपरिमेय रूप से उदात्त है

तथा सभी दृढ़तापूर्वक यह पुष्टि करते हैं कि तू ऐसे लोगों के वर्णन से परे अत्यधिक उच्च है, जो भ्रान्ति के परदों में लिपटे हुए हैं।

स्तुति हो तेरी,, हे स्वामी ! तेरा दिव्य अस्तित्व तेरे अन्तरतम सत्व की एकता का निश्चित प्रमाण है तथा तेरा सर्वोच्च ईश्वरत्व, तेरे अस्तित्व की एकता की साक्षी देता है एवं सभी सृजित वस्तुओं की वास्तविकता यह प्रमाणित करती है कि तेरे द्वारा रचे गये सृजन के साम्राज्य की किसी भी वस्तु के साथ संसर्ग का कोई भी सम्बन्ध तुझे बाँध नहीं सकता।

वह प्रत्येक बोधसम्पन्न व्यक्ति, जिसने अनासक्ति की श्रेष्ठ ऊँचाइयों को प्राप्त किया है तथा प्रत्येक सुवक्ता जिसने सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया है, साक्षी देता है कि तू अतुलनीय ईश्वर है तथा सृष्टि के साम्राज्य में तूने स्वयं के लिये कोई समतुल्य निर्धारित नहीं किया है, ना ही अन्वेषण के संसार में तेरी बराबरी करने वाला कोई है। उन बुद्धिमान व्यक्तियों ने, जिन्हें तेरी महिमा के प्रकटीकरण की एक कल्पना-मात्र थी, अपनी स्वयं की समझ के अनुसार तेरी एक काल्पनिक समानता बना ली तथा वे विद्वान, जिन्होंने तेरी प्रेममय दयालुता एवं महिमा के विविध प्रकटीकरणों की एक झलक-मात्र प्राप्त की थी, अपनी कल्पना के अनुरूप तेरे लिये समलुल्यों की खोज कर ली है।

प्रतापशाली, अपरिमेय रूप से प्रतापशाली है तू, हे स्वामी ! प्रत्येक अन्तर्दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति, तुझे समझने के अपने प्रयत्नों में दूर भटक गया है तथा उत्कृष्ट ज्ञान से सम्पन्न प्रत्येक व्यक्ति, तेरी खोज में अत्यधिक हतबुद्धि हो जाता है। तेरे अज्ञेय सत्व के लिये प्रत्येक प्रमाण कम पड़ता है और तेरी महानता की चकाचौंध कर देने वाली भव्यता की झलक-मात्र का सामना करने पर, प्रत्येक प्रकाश घूमिल हो जाता है एवं क्षितिज के नीचे डूब जाता है।

हे मेरे स्वामी, मुझे अपनी कृपापूर्ण उदारता एवं परोपकारी उपहार प्रदान कर और मुझे वह प्रदान कर जो तेरी महिमा की उदात्तता को शोभा देता हो। हे मेरे स्वामी, अद्वितीय विजय प्राप्त करने में मेरी सहायता कर। मेरे समक्ष अचूक सफलता का द्वार खोल दे और यह अनुदान दे कि वह सब कुछ जिसकी तूने प्रतिज्ञा की थी, निकट भविष्य में घटित हो जाये। तू सत्य ही, सभी वस्तुओं पर सामर्थ्य रखता है।

हे मेरे ईश्वर, अपने प्रेम के जीवन जल से मेरे हृदय को नवस्फूर्ति प्रदान कर और हे मेरे स्वामी, अपनी सुकोमल दया के प्याले से मुझे एक घूँट पीने को दे। मुझे अपनी महिमा के आवास में निवास करने दे, हे मेरे स्वामी और उस अंधकार से बाहर आने में मेरी सहायता

कर, जिसमें तेरा दिव्य धुँधलापन ढ़का है। मुझे उस प्रत्येक अच्छाई का भाग ग्रहण करने दे, जो तूने कृपापूर्वक उसे प्रदान की है जो केन्द्र है और उसे जो उसके धर्म के व्याख्याता हैं, और मेरे लिये वह विहित कर जो तुझे शोभा देता है एवं तेरे स्थान के योग्य है। उन कृत्यों के लिये मुझे कृपापूर्वक क्षमा कर, जो मैंने तेरी पावन उपस्थिति में किये हैं, तथा मेरी ओर न्याय की दृष्टि से देख, और अपनी कृपा के द्वारा मुझे मुक्ति प्रदान कर, अपनी दया से मेरे साथ व्यवहार कर और जैसा कि तेरी महिमा के योग्य है, मुझसे अपने उदार अनुग्रहों के अनुरूप व्यवहार कर।

तू सदा क्षमाशील, सर्वमहिमामय, अनुग्रहों एवं उपहारों का प्रदाता, अपार कृपा का स्वामी है। वस्तुतः तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। तू सर्वसम्पन्न, सर्वोच्च है।

पावन है तू, हे स्वामी। तू, जिसे सभी अपना आभार अर्पित करते हैं। तेरे विषय में, मैं जो कुछ भी स्वीकार करूँ, वह तेरे समक्ष मात्र अनुशासनहीन अपराध होगा, तथा मैं जैसा भी तेरा उल्लेख करना चाहूँ, वह पाप का सार होगा, तथा तेरा महिमागान करने के लिये मैं जो भी प्रशंसा करूँ, वह निरी ईशनिन्दा के समान होगा। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई भी न तो कभी तेरे रहस्य को समझ सका है, न समझ सकेगा, ना ही तेरे सत्व को खोज पाने मे कभी कोई सफल हुआ है न कोई सफल हो सकेगा।

यशस्वी है तू ! तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। तू सत्य ही, सर्वोच्च शासक, संकटों में सहायक, अतुलनीय, सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिशाली है। वस्तुतः तू अपने पराक्रम में महान है, ज्ञानातीत महिमा और तेजस्विता का स्वामी है।

हे ईश्वर, जो कोई भी इस प्रार्थना को कंठस्थ करता है और दिन के समय तथा रात्रि बेला में इसका पाठ करता है, उसकी रक्षा कर। वस्तुतः तू ईश्वर, सृष्टि का स्वामी, सर्वपरिपूरक है। अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में तू निष्ठावान है और जो चाहे, करता है। तू वह है जो अपने हाथों में धरती और आकाश के साम्राज्यों को धारण किये हुए है। वस्तुतः तू सर्वशक्तिशाली, अगम्य, संकट में सहायक, सर्वबाध्यकारी है।

*

हे मेरे ईश्वर, मेरे स्वामी और मेरे मालिक ! मैंने अपने बंधु-बाँधवों से स्वयं को अनासक्त कर लिया है और तेरे माध्यम से धरती पर निवास करने वालों से स्वतंत्र होने की इच्छा की

है एवं सदा वह प्राप्त करने के लिये तत्पर रहा हूँ जो तेरी दृष्टि में प्रशंसनीय है। मुझे वह शुभ प्रदान कर जो मुझे तेरे अतिरिक्त अन्य सभी से स्वतंत्र कर दे तथा मुझे अपने अपार अनग्रहों का प्रचुर हिस्सा प्रदान कर। वस्तुतः तू अपार कृपा का स्वामी है।

*

हे मेरे परमेश्वर ! मैं तुझे तेरी शक्ति की सौगंध देता हूँ कि परीक्षाओं की घड़ी में मुझको कोई क्षति न होने दे और असावधानी के पलों में अपनी प्रेरणा से मेरे पगों को तू सही राह दिखा। तू ही परमेश्वर है, जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ; तेरी इच्छा की राह में कोई बाधा नहीं बन सकता है।

*

हे मेरे ईश्वर, मैं तेरी क्षमा की याचना करता हूँ, तथा जिस रीति से तू चाहता है कि तेरे सेवक स्वयं को तेरी ओर उन्मुख करें, उसके लिये क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं तुझसे निवेदन करता हूँ, कि जैसा कि तेरे स्वामित्व के योग्य है, हमारे पापों को धो डाल, तथा मुझे, मेरे माता-पिता को, एवं उन्हें क्षमा कर दे जिन्होंने तेरे प्रेम के आवास में उस तरह प्रवेश किया है जो तेरी ज्ञानातीत प्रभुसत्ता के लिये उचित है एवं तेरी महिमा की दिव्य शक्ति को शोभा देता है।

हे मेरे ईश्वर ! तूने मेरी आत्मा को अपनी प्रार्थना अर्पित करने की प्रेरणा दी है, और यदि तेरे कारण न होता, तो मैं तेरा आह्वान न करता; मैं तेरा गुणगान करता हूँ क्योंकि तूने स्वयं को मुझ पर प्रकट किया है, और मैं तुझसे अनुरोध करता हूँ कि मुझे क्षमा कर, क्योंकि मैं तुझे जानने के अपने कर्त्तव्य में चूका हूँ और तेरे प्रेम के पथ पर चलने में विफल रहा हूँ।

गुणगान हो तेरा, हे स्वामी हमारे ईश्वर ! तू सत्य ही अदृश्य वस्तुओं का ज्ञाता है। हमारे लिये वह शुभ विहित कर जिसे तेरा सर्वव्यापी ज्ञान माप सकता है। तू सर्वश्रेष्ठ स्वामी, सर्वशक्तिशाली, परम प्रियतम है। समस्त प्रशंसा तेरी हो, हे स्वामी ! उस नियत दिवस में हम तेरी कृपा की कामना करेंगे और अपना सम्पूर्ण भरोसा तुझमें ही रखेंगे, जो हमारा स्वामी है।

हे ईश्वर ! हमें वह प्रदान कर जो अच्छा और उचित हो ताकि हम तेरे अतिरिक्त अन्य सभी कुछ को छोड़ सकें। वस्तुतः तू समस्त लोकों का स्वामी है। हे ईश्वर ! उन्हें पुरस्कृत कर जो तेरे दिवसों में धैयपूर्वक सहन करते हैं तथा सत्य के पथ पर अविचलित रह कर चलने में उनके हृदयों को समर्थ बना। हे स्वामी, उन्हें ऐसे उत्कृष्ट उपहार प्रदान कर जो तेरे

आनन्दमय स्वर्ग में प्रवेश करने में उनकी सहायता कर। उदात्त है तू, हे स्वामी ईश्वर। अपने दिव्य आशीर्वाद उन घरों पर उतरने दे जिनके निवासियों ने तुझमें विश्वास किया है। वस्तुतः दिव्य आशीर्वाद देने में तू अद्वितीय है। हे ईश्वर, ऐसे सहायक भेज जो तेरे निष्ठावान सेवकों को विजयी बना दें। अपनी इच्छानुसार अपने आदेश की शक्ति से तू सृजित वस्तुओं को रूप प्रदान करता है। तू सत्य ही प्रभुसत्तासम्पन्न, सृष्टिकर्ता, सर्वबुद्धिमान है।

कहोः ईश्वर सत्यतः सभी वस्तुओं का रचयिता है। वह जिसे चाहे प्रचुरता में पुष्टि प्रदान करता है। वह सृष्टिकर्ता, सभी जीवों का स्रोत, रचनाकार, सर्वशक्तिशाली, रचयिता, सर्वबुद्धिमान है। सम्पूर्ण आकाश और धरती, तथा जो कुछ भी इनके मध्य है, में वह सर्वोत्कृष्ट उपाधियों का धारक है। सभी उसके आदेशों का पालन करते हैं, तथा धरती एवं आकाश के सभी निवासी उसकी प्रशंसा करते हैं, और सभी उसी की ओर लौट जायेंगें।

*

हे मेरे ईश्वर, तेरे प्रकटीकरण के माध्यम से, तुझे जानने में तूने मेरी सहायता की है, तथा तेरी देदीप्यमान भव्यता की चमक के माध्यम से तूने मुझे अपने स्मरण से प्रेरित किया है। तू वह है जो मेरे निकटतम है तथा तेरे और मेरे मध्य अन्य कोई नहीं है, और तू वह है जिसकी शक्ति को कुछ भी विफल नहीं कर सकता। अतः तेरे सत्व से अति दूर रहे, कि मनुष्यों की आत्माओं के महानतम पक्षी अथवा मानव कल्पनाएँ, इसकी ऊँचाइयों को कभी छू भी सकें, एवं तेरा पावन अस्तित्व इतना उदात्त है कि ज्ञानी जनों के उदात्ततम मनोभाव भी तुझ तक नहीं पहुँच सकते। अनन्तकाल से तेरे स्वयं के अस्तित्व को किसी ने नहीं समझा है और तेरे अतिरिक्त अन्य किसी के बगैर अनन्तता तक तू वही रहेगा जो तू शाश्वत काल से रहा है।

यशस्वी हो तेरा नाम, तू वह परम प्रियतम है जिसने अपना ज्ञान प्राप्त कराने में मेरी सहायता की है और तू वह सर्वसूचित है जिसने कृपापूर्वक मुझे अपने प्रेम से अनुग्रहित किया है। तू वह युगप्राचीन है जिसे उसकी महिमा एवं तेजस्विता के प्रमाणों के माध्यम से कोई भी कभी वर्णित नहीं कर सकता और तू वह शक्तिशाली है जिसे उसकी महानता एवं सुन्दरता के प्रकटीकरणों के माध्यम से कोई भी कभी नहीं समझ सकता, क्योंकि तेजस्विता एवं श्रेष्ठता की अभिव्यक्तियाँ तथा प्रभुत्व एवं सुन्दरता के गुण तेरी दिव्य इच्छा के वे चिह्न मात्र एवं तेरी प्रभुसत्ता के वे देदीप्यमान प्रतिबिम्ब मात्र हैं जो अपने सत्व एवं

स्वरूप से ही यह घोषित करते हैं कि यह मार्ग बाधित है और यह साक्षी देते हैं कि यह पथ मनुष्यों की पहुँच से परे, अगम्य है।

*

उस स्वामी के नाम से, जो सृष्टिकर्ता, प्रभुसत्तासम्पन्न,

सर्वपरिपूरक, सर्वोदात्त है। वह जिसकी सहायता की

याचना सभी मनुष्यों द्वारा की जाती है।

कहो: हे मेरे ईश्वर तू जो आकाश और धरती का रचयिता है, हे दिव्य साम्राज्य के स्वामिन् ! तू अच्छी तरह से मेरे हृदय के रहस्यों को जानता है, जब कि तेरा अस्तित्व तेरे अतिरिक्त अन्य सभी के ज्ञान से परे हैं। जो भी है मेरा, वह सब तू देखता है, जबकि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा नहीं कर सकता है। अपने अनुग्रह के द्वारा मेरे लिये वह प्रदान कर जो मुझे तेरे सिवा अन्य सब से अनासक्त होने के योग्य बना दे, वर दे कि मैं इहलोक और परलोक में अपने जीवन के सुफल प्राप्त करूँ। मेरे सम्मुख अपने अनुग्रह के द्वार खोल दे और कृपापूर्वक मुझे अपनी स्नहेहिल दया और वरदानों से विभूषित कर।

हे तू, जो असीम अनुकम्पाओं का स्वामी है। जो तुझसे प्रेम करते हैं, उन्हें अपनी दिव्य सहायता से आवृत्त कर और हमें अपने उपहारों और अक्षय सम्पदाओं का दान दे, तू हमारे लिये सभी वस्तुओं का परिपूरक बन। हमारे पापों को क्षमा कर दे और हम पर दया कर। तू ही हमारा स्वामी और सभी सृजित वस्तुओं का स्वामी है। हम तेरे अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना नहीं करते और तेरे अतिरिक्त अन्य किसी के अनुग्रहों की कामना नहीं करते। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, सर्वसम्पन्न, सर्वोच्च !

हे मेरे स्वामी, अपने दिव्य संदेशवाहकों पर, उन पावन और सदाचारी जनों पर अपने आशीषों की फुहारें पड़ने दे। सत्य ही तू परमेश्वर है, अद्वितीय, सर्ववशकारी।

*

महिमावंत है तू, हे स्वामी मेरे ईश्वर ! सत्य ही, तू सम्राटों का सम्राट है। तू जिसे चाहे उसे प्रभुसत्ता प्रदान करता है तथा जिसे चाहे उसे इससे वंचित कर देता है। तू जिसे चाहे उसे उदात्त करता है और जिसे चाहे उसे दीन बना देता है। तू जिसे चाहे उसे विजयी बनाता है और जिसे चाहे उसे अवमानित करता है। तू जिसे चाहे उसे धनसम्पदा प्रदान करता है और

जिसे चाहे उसे निर्धन बना देता है। जिस पर तू चाहे उस पर विजय प्राप्त करने में सफल बनाता है। तू अपनी मुट्ठी में समस्त सृजित वस्तुओं के साम्राज्य को धारण किये हुए है और अपने प्रभुसत्तासम्पन्न आदेश से तू जिसे चाहे उसे अस्तित्व प्रदान करता है। वस्तुतः तू सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ, शक्ति का स्वामी है।

*

स्तुत्य और महिमावंत है तू, हे परमात्मन् ! तेरा पावन सानिध्य प्राप्त करने का दिवस शीघ्र आये, ऐसा वर दे। अपने प्रेम और प्रसन्नता की शक्ति से हमारे हृदय उल्लसित कर दे और हम स्वेच्छा से तेरी इच्छा और आदेश के प्रति समर्पित हो सकें, ऐसी दृढ़ता प्रदान कर। वस्तुतः तेरे ज्ञान की परिधि में वे सब हैं, जिनकी रचना तूने की है और जिनकी रचना तू करेगा। तेरी दिव्य शक्ति उन सब के अनुभव से परे हैं, जिनको तूने अस्तित्व दिया है और जिन्हें तू अस्तित्व प्रदान करेगा। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है, जिसकी आराधना की कामना है मेरी। तेरे अतिरिक्त अन्य नहीं है, जो स्तुत्य है। तेरी सुप्रसन्नता के अतिरिक्त नहीं है कुछ भी जो प्रिय है मुझे।

वस्तुतः; तू ही है सर्वोपरि शासक, परम् सत्य, संकटमोचन, स्वयंजीवी।

*

हे मेरे परमेश्वर, तू भलीभांति जानता है कि सभी दिशाओं से मुझ पर विपदायें टूट पड़ी हैं और तेरे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जो उन्हें दूर कर सकता है या कम कर सकता है। तेरे प्रति अपने प्रेम के कारण मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तू किसी भी आत्मा को तब तक विपदाग्रस्त नहीं करता जब तक अपने पावन स्वर्ग में उसके स्थान को ऊँचा उठाने का निर्णय तू नहीं ले लेता और जब तक यह भौतिक जीवन जीने के लिये उसके हृदय को मजबूत करने का इरादा तेरा नहीं होता। अपनी शक्ति के सहारे तू ये सुरक्षा-कवच उसे इसलिये प्रदान करता है कि दुनिया के मिथ्या अभिमान के प्रति उसकी आसक्ति न हो जाये। यह सच है और तू भलीभाँति परिचित है कि धरती और आकाश के समस्त सुख से भी अधिक तेरे नाम के स्मरण में मैं प्रसन्नता प्राप्त करूँगा।

हे मेरे ईश्वर, अपने प्रेम और अपनी आज्ञाओं के पालन में मेरे हृदय को सशक्त कर और ऐसा वर दे कि तेरे विरोधियों की छाया से मैं पूरी तरह मुक्त रह सकूँ। सत्य ही, मैं तेरी महिमा के नाम पर सौगन्ध लेता हूँ कि तेरे अतिरिक्त मैं किसी अन्य की समीपता की कामना नहीं

करता और न ही तेरी दया के अतिरिक्त किसी अन्य की दया का पात्र ही बनना चाहता हूँ, न ही मुझे तेरे न्याय के अतिरिक्त किसी अन्य से न्याय पाने की अभिलाषा है।

तू परम् उदार है, हे आकाश और धरा के प्रभु, सभी मनुष्यों के गुणगान से परे। तेरे आज्ञाकारी सेवकों को शांतिलाभ प्राप्त हो और ईश्वर की महिमा बढ़े, तू ही सभी लोकों का स्वामी है!

*

स्तुति हो तेरी, हे स्वामी, मेरे परम् प्रियतम ! अपने धर्म में मुझे दृढ़ बना और वर दे कि मैं उनमें गिना जाऊँ जिन्होंने तेरी संविदा का उल्लघंन नहीं किया है और न ही अपनी कपोल कल्पना के देवों का अनुसरण किया है। मुझे समर्थ बना कि तेरे सान्निध्य में मैं सच्चाई का दामन थाम सकूँ, अपनी दया का दान दे और मुझे अपने उन सेवकों में शामिल होने दे जो भय नहीं करते, न ही चिन्तातुर होते हैं। मुझे मेरे हाल पर न छोड़, हे ईश्वर, न ही मुझे उसे पहचानने से वंचित कर जो तेरा ही प्रकट रूप है और न ही मुझे उनमें गिन जो तुझसे विमुख हो गये हैं। हे मेरे प्रभु ! मुझे उनमें गिन जिन्होंने तेरे सौन्दर्य को पहचाना है, जिन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर करने का सौभाग्य प्राप्त किया है और जो अपने समर्पण का एक पल भी सम्पूर्ण सृष्टि के साम्राज्य के बदले देना पसंद नहीं करेंगे। दया कर, हे प्रभु, विशेषरूप से तब जब तेरी धरती के लोग राह भटक गये हैं, घातक दोषों से भर गये हैं। हे मेरे ईश्वर, मुझे वह दे जो तेरी दृष्टि में शुभ और शोभनीय है। तू, सत्य ही, सर्वशक्तिशाली, उदार, करुणामय और सदा क्षमाशील है।

वर दे, हे मेरे प्रभु! कि मैं उनमें न गिना जाऊँ जो कान रहते सुन नहीं पाते, आँख रहते देख नहीं पाते, जिह्वा होते हुए भी मूक बने बैठे हैं और जिनके हृदय कुछ भी समझने में विफल रहे हैं। हे प्रभु, मुझे अज्ञानता की अग्नि और स्वार्थी इच्छाओं से मुक्त कर, अपनी सर्वोच्च दया के परिवेश में प्रवेश पाने की अनुमति दे और मुझे वह दे जो तूने अपने प्रिय पात्रों के लिये निर्धारित किया है। तू जो चाहे करने में समर्थ है। सत्य ही तू, संकटमोचन, स्वयंजीवी है।

*

हे मेरे ईश्वर, हे मेरे स्वामी, हे मेरे मालिक ! तेरे प्रेम के अतिरिक्त किसी अन्य सुख की, या तेरी निकटता के अतिरिक्त किसी अन्य विश्राम की, या तेरी सुप्रसन्नता के अतिरिक्त किसी अन्य आनन्द की, अथवा तुझसे संसर्ग के अतिरिक्त किसी अन्य अस्तित्व की कामना करने के लिये मैं तुझ से क्षमा की याचना करता हूँ।

*

हे मेरे स्वामी, इस पर्वत के हृदय में तू मेरा निवास स्थान देखता है और तू मेरी सहिष्णुता का साक्षी है। वस्तुत मैंने तेरे प्रेम और उनके प्रेम के अतिरिक्त जो तुझसे प्रेम करते हैं, अन्य कुछ नही चाहा। तेरी महिमा के निवास स्थान के समक्ष स्वयं की अस्तित्वहीनता से अवगत रहकर, मैं तेरे स्वामित्व के देदीप्यमान सौन्दर्य का उल्लेख कैसे कर सकता हूँ ? फिर भी एकांत और एकाकीपन का दुःख, मुझे प्रेरित करता है कि इस प्रार्थना के द्वारा मैं तेरा आह्वान करूँ, कदाचित तेरे विश्वसनीय सेवक मेरे विलाप से अवगत हो जायें, मेरी ओर से तुझसे याचना करें और अपनी कृपा और अनुग्रह के चिह्न स्वरूप तू कृपापूर्वक उनकी प्रार्थना का प्रत्युत्तर दे। मैं साक्षी देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, क्योंकि तू ऐसी प्रभुसत्ता, वैभव और शक्ति से विभूषित है जिसकी कल्पना करना या समझ पाना तेरे सेवकों में से किसी के लिये भी सम्भव नहीं है। वास्तव में, तेरे सत्व में जो निहित है, उसके द्वारा तू स्वयं के अतिरिक्त अन्य सभी के लिये सदा पहुँच से परे रहेगा।

*

ईश्वर के अतिरिक्त कठिनाईयों को दूर करने वाला क्या कोई अन्य है ? कह दो ईश्वर की स्तुति हो ! वही ईश्वर है ! सभी उसके सेवक हैं तथा सभी उसके आदेश से प्रतिबंधित हैं।

* * *

टिप्पणियां

शोगी एफेंदी द्वारा अनुवादित अनुच्छेद

1. यह 'समर' का प्रथम अक्षर है जिसका अर्थ है 'फल'। अपने लेखों में शोग़ी एफेन्दी बाब को ईश्वर के अनुक्रमिक प्रकटीकरणों के वृक्ष का 'समर' कह कर सम्बोधित करते हैं। (पृष्ठ 5 पर शोग़ी एफेन्दी द्वारा पूरब के बहाइयों को सम्बोधित दिनाँक नवरोज़ 110 का पत्र देखें)

2. अपनी एक पाती में अब्दुल बहा बतलाते हैं कि इस कथन के कारण कुछ लोग भ्रमित हो गये और सोचने लगे कि जिस पाठशाला का संदर्भ दिया गया था वह एक भौतिक पाठशाला थी जिसमें अशिक्षित बच्चों को प्रशिक्षित किया जाता है, जबकि इसका तात्पर्य आध्यात्मिक पाठशाला से था जो इस अनिश्चित संसार की सीमाओं से परे है। "किताब-ए-अक़दस" में बहाउल्लाह भी बाब की इस पाती का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में करते हैं:

   हे तू महालेखनी ! स्वर्ग के रचयिता अपने स्वामी के आदेश से इस पाती को लिख। फिर उस दिन का स्मरण कर, जिस दिन दिव्य एकता के उद्गम ने उस पाठशाला में प्रवेश करना चाहा जो ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सभी से विलग है, ताकि सदाचारी, सूई की नोक से आँख की सीमा तक, कदाचित उससे परिचित हो सकें जो सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञ, तेरे स्वामी के आंतरिक रहस्यों के परदों के पीछे छिपा है।

   कहो: हमने सत्य ही, आंतरिक रहस्यों एवं व्याख्या की पाठशाला में एक ऐसे समय में प्रवेश किया जब धरती के सभी निवासियों के मस्तिष्क असावधानी में तल्लीन थे। हमने वह देखा जो उस सर्वदयालु स्वामी ने प्रकट किया एवं संकट में सहायक, स्वयंजीवी उस ईश्वर के श्लोकों से वह उपहार स्वीकार किया जो उसने मुझे अर्पित किया तथा उस पर ध्यान दिया जिसका सत्यापन उसने उस पाती में किया था। वस्तुतः, हम इसके साक्षी हैं। अपने स्वयं के आदेश से हमने उसके आह्वान का उत्तर दिया और सत्य ही हम विधानकर्ता हैं। हे बयान के लोगो ! हमने ईश्वर की पाठशाला में तब ही प्रवेश कर लिया था जब तुम अपनी शय्याओं पर निद्रामग्न थे और इस पाती को तब पढ़ लिया था जब तुम गहरी नींद में सोये हुए थे। उस एक सत्य ईश्वर के न्याय की सौगंध, इसके प्रकटीकरण के पूर्व ही हमने इसे पढ़ लिया था और तुम

पूर्णतया अनभिज्ञ थे। वास्तव में हमारे ज्ञान ने इस ग्रंथ को तब अपने में समा लिया था जब तुम अजन्मे थे।

ये वचन तुम्हारी क्षमता के अनुरूप प्रकट किये गये हैं न कि ईश्वर की, और इसका साक्षी वह स्वयं है जो ईश्वर के ज्ञान से सुरक्षित है, काश! तुम यह जान पाते। इसका साक्ष्य वह देता है जो ईश्वर का मुखांग है, काश! तुम यह समझ पाते। ईश्वर के न्याय की सौगंध ! यदि हम इस परदे को उठा दें तो तुम मूर्छित हो जाते। सावधान, कहीं तुम उसका या उसके धर्म का विरोध न कर बैठो। सत्य ही वह इस प्रकार प्रकट हुआ है कि उसने सभी वस्तुओं को अपने परिवेश में ले लिया है, चाहे वे भूतकाल की हों या भविष्य की। यदि हम इस समय उस दिव्य साम्राज्य के निवासियों की भाषा में बोलते तो हम कहते कि धरती और आकाश को अस्तित्व में लाने से पहले ईश्वर ने इस पाठशाला का निर्माण किया और 'भ' एवं 'व' अक्षरों के जुड़ने और बुने जाने से पहले हम इसमें प्रवेश ले चुके थे।

3. 1260 हिजरी (1844 ए.डी.),

4. कुरआन 8: 44

5. हिन शब्द के अक्षरों का सांख्यकीय मूल्य 68 है। हिजरी सन् 1268 (ईसवी सदी 1851-1852) बहाई प्रकटीकरण के जन्म के पूर्व का वर्ष है।

6. पावन निवास: मक्का में काबा

7. कुरआन 4: 119

8. कुरआन: 13

9. कुरआन 3: 185

10. कुरआन 19: 40

11. कुरआन 17: 88

12. कुरआन 2: 285

13. कुरआन 3: 50

14. कुरआन 14: 4
15. कुरआन 68: 42
16. कुरआन 7: 63, 69
17. कुरआन 36: 68
18. कुरआन 65: 7, 94:5
19. कुरआन 8: 43
20. कुरआन 2: 204
21. कुरआन 4: 51
22. कुरआन 12: 20
23. कय्यूमूल अस्मा के इन अनुच्छेदों में कुर्रातुल ऐन (आँखों की शीतलता) नाम स्वयं बाब को इंगित करता है।
24. कुरआन 78: 38
25. कुरआन 11: 81
26. कुरआन 24: 21
27. कुरआन 83: 25-26
28. कुरआन 52: 6, 29: 41
29. कुरआन 2: 206,
30. कुरआन 2: 163, 164
31. कुरआन 17: 88
32. कुरआन 74: 33, 34

33. कुरआन 21: 40,

34. कुरआन 2: 14,

35. कुरआन 4: 149,

36. कुरआन 9: 32,

37. कुरआन 4: 171,

38. कुरआन 5: 73,

39. कुरआन 5: 15,18

40. कुरआन 5: 22

41. कुरआन 5: 71

42. कुरआन 2: 32, 38:74, 78

43. कुरआन 7: 69,12 : 40,

43. कुरआन 7: 146, 20: 19,

44. कुरआन 7: 146, 20:9,

45. कुरआन 4: 1,

46. कुरआन 10: 50,

47. कुरआन 10: 16,

49. कुरआन 10: 33,

50. कुरआन 18: 42,

51. कुरआन 11: 120,

52. कुरआन 6: 10,

53. कुरआन 3: 172,

54. कुरआन 33: 72,

55. कुरआन 6: 92,

56. कुरआन 11: 86,

57. ये अंक उन वाहिदों एवं अध्यायों को इंगित करते हैं जिसमें बयान को विभाजित किया गया है।

58. कुरआन 29: 50

59. कुरआन 29: 50,

60. कुरआन 57: 21

61. ''प्रामिस्ड डे हैज़ कम'' नामक पुस्तक में पृष्ठ 7 पर शोग़ी एफेन्दी ने यह पुष्टि की है कि यह अनुच्छेद ईश्वर की वाणी में बाब द्वारा प्रकट किया गया था।

62. यह कुद्दूस को इंगित करता है, 'जिसकी प्रशंसा फारसी बयान ने सह-तीर्थयात्री के नाम से की, वह जिसके, इर्द-गिर्द आठ वाहिद की संख्या में दर्पण परिक्रमा करते हैं'। (गॉड पासेज़ बाय, पृष्ठ 49)

63. कुरआन 8: 2

64. कुरआन 19: 92

65. 22 मई 1844

66. अर्थ है मोहम्मद की घोषणा से जो हिजरी सन् की शुरुआत से 10 वर्ष पूर्व हुई थी।

67. कुरआन 3: 5

68. कुरआन 68: 51

69. ‘रात्रि’ का अर्थ है दो दिव्य प्रकटीकरणों के बीच का वह समय जब मनुष्यों के बीच सत्य का सूर्य प्रकट नहीं होता। फारसी बयान ii, 7, में बाब कहते हैं, ‘हे बयान के लोगो! वैसा आचरण न करो जैसा कुरआन के लोगो ने किया है, क्योंकि यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम्हारी रात्रि के फल शून्य हो जायेंगे’।

70. ये अंक उन वाहिदों एवं अध्यायों से सम्बद्ध है जिसमें किताब-ए-अस्मा बँटी हुई है।

71. रात्रि से तात्पर्य को पेज 78 पर दर्शाया गया है।

72. देखें पृष्ठ 78,

73. वह जो उठ खड़ा होगा (गॉड पासेज बाई, पृष्ठ 57)

74. वह जो मार्गदर्शित है (गॉड पासेज बाई, पृष्ठ 58)

75. सुरक्षा की इस प्रार्थना की मूल प्रति, स्वयं बाब की हस्तलिपि में, एक पंचभुज के आकार में लिखी गयी है।

76. इसका सम्बन्ध बाब के जन्म दिवस से है, जो हिजरी सन् 1235 (20 अक्टूबर, 1819) को मुहर्रम का पहला दिन था।

77. कुरआन 37:180.182

78. कुरआन 6:103